मनोहर कहानियां का सह प्रकाशन

सत्यकथा

सितंबर 2021

₹ 40.00

देह व्यापार विशेषांक

फरीदाबाद
मस्ती की पार्टी

रतलाम
मातापिता कराते हैं बेटियों से देहव्यापार

पटना
हवाई जहाज से आने वाली रंगीन तितलियां

वाराणसी
पौश कालोनी में सजने वाला देह बाजार

दिल्ली
बार बालाओं की हुक्का, शराब और शबाब पार्टी

ऊधमसिंह नगर
धंधा पुराना लेकिन तरीके नए

मुरथल के ढाबों पर
विदेशी कालगर्ल्स की देह का तड़का

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

सुनो जी, बुन्नू की मैडम का धन्यवाद देने के लिए फोन आया था। क्या चक्कर है काहे का धन्यवाद बटोर रहे हो?
अरी भाग्यवान! शिक्षक दिवस पर स्कूल गये थे साथ स्टोमाफिट भी ले गये थे। बुन्नू की मैडम थी गैस से परेशान, हमने दिया स्टोमाफिट जिससे मिला उनको आराम। अपने अतरंगी विचारों को दीजिये विराम।
अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम
New Pack
STOMAFIT LIQUID
STOMAFIT CHEWABLE

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

शहद सा गाढ़ा
संतरे सा स्वाष्टि

शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षकों की पुकार, आयरन की कमी को
दूर करने में हेमोकॉल है दमदार!!

जो बनाए हमें इंसान, दे सही गलत
की पहचान, उन शिक्षकों को हमारा प्रणाम।

New Pack
HAEMOCAL
Iron Tonic with Folic Acid

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध(450ml)

SCAN TO BUY HAEMOCAL

Please contact for more information:
SUNCARE FORMULATIONS PVT. LTD.
Ph.: 8447977889/ 999, 011-46108735, Mail: info@stomafit.com
Available on all major Online Pharmacies

SCAN TO BUY STOMAFIT

आपके जीवन साथी को जरूरत है
जोश, उमंग और वास्तविक
प्यार की...

अपनी सैक्स संबधी समस्याऐं न छिपाये, ऐसा करने से आपका विवाहित जीवन दुखमय हो सकता है। सही परामर्श व सफल ईलाज से समस्या का समाधान किया जा सकता है। देश-विदेश में प्रसिद्ध सबलोक क्लिनिक के पास प्राकृतिक जड़ी-बूटियों व कीमती भस्मों से युक्त आयुर्वेदिक नुस्खे हैं। जिनके सेवन से आप अपनी सैक्स लाइफ को और भी रंगीन बनाकर विवाहित जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। संतान के इच्छुक दम्पत्ती स्वयं मिले। ज्ञानबर्धक पुस्तक नवजीवन मुफ्त मंगवाये। विदेशों में हवाई डाक द्वारा इलाज भेजने का विशेष प्रबन्ध है।

एशिया में अपनी तरह का एकमात्र सर्वाधिक विश्वसनीय आधुनिक क्लिनिक

सबलोक क्लिनिक

दरियागंज (टाटा मोटर्स के ऊपर)
नेताजी सुभाष मार्ग (निकट दिल्ली गेट) नई दिल्ली-110002
9891300008 सुबह 12 से शाम 4, रविवार : अवकाश (रजिस्ट्रेशन 500/-)

www.sablokclinic.com / email : sablokclinicindia@gmail.com

सबलोक क्लिनिक, दरियागंज की इंडिया में कहीं कोई ब्रांच नहीं है।

सत्यकथा

सितंबर
2021

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि. ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055 फोन : 91-11-41398888 Extn. No. 119, 221, 264 (सोमवार से शनिवार 10 बजे से शाम 6 बजे तक) मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप नंबर : 08588843408. मुंबई कार्यालय : बी-3, वडाला उद्योग भवन, नायगांव क्रौस रोड, वडाला, मुंबई. फोन : 91-22-24122661/43473050

- इस अंक में -

ढाबों पर विदेशी देह का तड़का

मुरथल का नाम सुनते ही हाईवे के किनारे स्थित ढाबों की तसवीर जेहन में आ जाती है, जहां के परांठे का स्वाद भूले नहीं भुलाया जाता. आधुनिक होटलों का रूप ले चुके यहां के कुछ ढाबों में अब जिस्मफरोशी के लिए देसीविदेशी लड़कियां भी मौजूद रहती हैं. पुलिस ने ऐसी ही 15 लड़कियों को ग्राहकों के साथ गिरफ्तार कर...

06. **विदेशी कालगर्ल्स की देह का तड़का**
नितिन शर्मा 'सबरंगी'

13. **बुरके वाली बदनसीब**
शंभु सुमन

28. **फरीदाबाद में भी मस्ती की पार्टी**
शाहनवाज

36. **प्लेन से आने वाली रंगीन तितलियां**
शैलेंद्र कुमार 'शैल'

44. **धंधा पुराना लेकिन तरीके नए**
प्रकाश पुंज

54. **हुक्का, शराब और शबाब पार्टी**
उमेश त्रिवेदी

62. **देहरादून में पर्यटकों को मिलती एस्कार्ट सर्विस**
नितिन शर्मा 'सबरंगी'

70. **शहरों की पहचान ये बदनाम इलाके**
भारत भूषण श्रीवास्तव

82. **मातापिता कराते हैं बेटियों से देहव्यापार**
वेणीशंकर पटेल 'ब्रज'

92. **बड़ी खिलाड़ी सोनू पंजाबन**
सुनील वर्मा

102. **पुरुष वेश्यावृत्तिः जिस्म के बाजार में जिगोलो**
प्रेक्षा सक्सेना

'सत्यकथा' में प्रकाशित कहानियों में कुछ कथा पात्रों तथा स्थानों के नाम काल्पनिक होते हैं. जिन कथाओं में काल्पनिक नाम-स्थान हैं, उन का उल्लेख कथा के साथ होगा. —संपादक

वार्षिक ग्राहक : subscription@delhipress.in टिप्पणी, सूचना, समाचार, रिपोर्ट, जौब्स : manoharkahaniyanmonthly@gmail.com

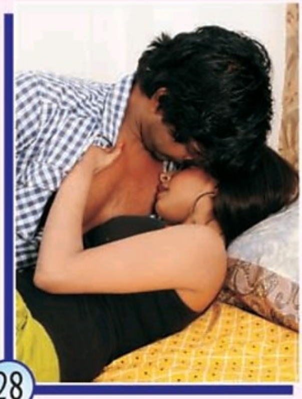

28

फरीदाबाद में भी मस्ती की पार्टी

जिस्मफरोशी के धंधेबाजों ने पुलिस से बचने के लिए विभिन्न आयोजनों का भले ही सहारा ले लिया हो, लेकिन भनक पुलिस को लग ही जाती है. फरीदाबाद में तो एक रसूखदार व्यक्ति ने मौजमस्ती के लिए जन्मदिन की पार्टी के बहाने होटल में 15 लड़कियां बुलाई थीं. इस से पहले कि वहां मौजूद लोग अपनी हसरतें पूरी करते...

110. देह के दलदल में देश की दत्तक बेटियां
सुरेशचंद्र रोहरा

118. देहधंधे की सूरत बदली सीरत नहीं
शैलेंद्र सिंह

126. स्पा सेंटर की एक्स्ट्रा सर्विस
प्रतिनिधि

134. पौश कालोनी में देह बाजार
संतोष देव गिरि

आवश्यकता है: राजधानियों और बड़े शहरों में 'मनोहर कहानियां/सत्यकथा' के लिए फ्रीलांस संवाददाताओं की. संपर्क करें: editor@delhipress.biz

54

दिल्ली में हुक्का, शराब और डांस पार्टी

लौकडाउन की वजह से मनु अग्निहोत्री का डांस और हुक्का बार बंद हो गया था. जिस से उस के यहां काम करने वाली लड़कियां भी बेरोजगार हो गईं. लड़कियों और ग्राहकों के कहने पर मनु ने इस बार पूर्वी दिल्ली के कृष्णा नगर में हुक्का और डांस बार खोला, लेकिन इस के खुलने के दूसरे दिन ही पुलिस ने 8 लड़कियों सहित...

140. युद्ध के बाद फिर सैक्स गुलाम
निखिल

स्थाई स्तंभ

16. अंतरराष्ट्रीय खबरें
22. सितारों की हलचल

विचित्र खबरें

35. यहां औफिस में न्यूड हो कर करना होता है काम
69. 12 घंटे में 919 लोगों से सैक्स कर बनाया रिकौर्ड

शोभिका मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेशनाथ द्वारा ई-8 झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएसपीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 से मुद्रित. संपादक : परेशनाथ (वौ-6, अंक-10)
संपादकीय कार्यालय : ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
संपादकीय विभाग फोन : 08527750077, 08527666775

ढाबों पर रेड डालने के दौरान बाहर खड़ी पुलिस फोर्स

मुरथल की पहचान हाईवे पर स्थित ढाबों से है. इन के स्वादिष्ट परांठों का स्वाद पूरे भारत में फैल चुका है. लेकिन आधुनिक होटलों का रूप ले चुके इन सुसज्जित ढाबों से जब पुलिस ने देशविदेश की 15 युवतियों को जिस्मफरोशी के आरोप में गिरफ्तार किया तो...

मुरथल के ढाबों पर विदेशी कालगर्ल्स की देह का तड़का

—नितिन शर्मा 'सबरंगी'

छायांकन: मॉडलिंग

HOTEL WEST INN MURTHAL
AC ROOMS
M. 9230373737
HOTEL WEST INN MURTHAL
AC ROOMS
ROOMS AVAILABLE HERE
HOTEL WEST INN MURTHAL
AC ROOMS

जब आप दिल्ली से करनाल जाने वाले जीटी हाईवे पर जाएंगे तो सोनीपत के नजदीक मुरथल में हाईवे के किनारे जगमगाते व सजे हुए अनेक ढाबे दिखाई देंगे. रात में तो इन ढाबों की रौनक देखने लायक होती है.

इन ढाबों के परांठों का स्वाद भारत भर में मशहूर है. तभी तो रात में इन ढाबों की पार्किंग में सैकड़ों गाड़ियां खड़ी रहती हैं. दूरदूर से लोग मुरथल के परांठों का स्वाद लेने आते हैं. एक तरह से इन ढाबों की वजह से मुरथल की भारत भर में पहचान बनी हुई है.

इन्हें भले ही ढाबा कहते हैं लेकिन ये किसी आधुनिक होटल से कम नहीं हैं, लेकिन पैसे कमाने के लालच में कुछ लोगों ने ढाबों की परिभाषा ही बदल दी है. इन ढाबों पर ग्राहकों को मौजमस्ती कराने के लिए कालगर्ल भी बुलाई जाने लगी हैं. जिस से ग्राहकों के खाने के देशी और विदेशी देह का सुख भी मिल सके. अनैतिक देह व्यापार का धंधा भी खूब फलफूल रहा था.

7 जुलाई, 2021 की रात के तकरीबन 8 बजे का वक्त था, जब ढाबे रंगबिरंगी रोशनी से नहाए हुए थे. ढाबों के बाहर वाहनों की कतारें लगी थीं. तभी एक कार एक ढाबे के बाहर आ कर रुकी. उस में से 2 लोग उतरे. पहले उन्होंने अपनी खोजी नजरों से ढाबे का मुआयना किया और फिर आराम से टहलते हुए सीधे काउंटर पर पहुंचे.

काउंटर पर मौजूद मैनेजर ने एक नजर उन पर डालते हुए पूछा, ''कहिए सर, क्या सेवा कर सकता हूं आप की ?''

''हमें स्पैशल परांठे चाहिए.'' उस ने कुरसियों की तरफ इशारा करते हुए कहा.

''प्लीज आप बैठ कर मेन्यू देख कर और्डर कीजिए, अभी भिजवाता हूं.'' मैनेजर बोला.

''हमें खाने के नहीं, इस्तेमाल करने वाले परांठे चाहिए.'' उन की बात सुन कर काउंटर पर बैठा व्यक्ति एक पल के लिए सकपका गया, लेकिन दूसरे ही पल उन दोनों को गहरी नजरों से देखते हुए पूछा, ''मैं आप का मतलब नहीं समझा ?''

''हम ने ऐसी तो कोई बात की नहीं, जो आप समझ न सको. आप के एक पुराने ग्राहक ने ही हमें यह जगह बताई थी, इस भरोसे पर आज मनोरंजन के इरादे से यहां चले आए.'' आगंतुक ने राजदाराना अंदाज में कहा.

तभी मैनेजर मुसकराते हुए बोला, ''ओह समझ गया, यह बात है तो आप को पहले बताना चाहिए था. दरअसल, बात यह है सर कि पुलिस का भी चक्कर रहता है, इसलिए अंजान लोगों के साथ संभल कर बात करनी पड़ती है हमें. वैसे आप को किस तरह का परांठा चाहिए?''

''हमें एकदम बढ़िया चाहिए, जो दिल खुश हो जाए.'' एक व्यक्ति बोला.

''यह मैं ने इसलिए पूछा कि हमारे पास देशीविदेशी दोनों तरह के हैं. अब मरजी आप की है, आप जो भी पसंद करें. सर्विस में भी आप को कोई शिकायत नहीं मिलेगी.

''हमारे कई रेग्युलर कस्टमर हैं, जो हमारी शानदार सर्विस से हमेशा खुश रहते हैं. ऐसा करता हूं, मैं आप को फोटो दिखा देता हूं, आप पसंद कर लीजिए.'' कहने के साथ ही उस ने अपना मोबाइल उन के सामने कर दिया और एकएक कर के फोटो दिखाने लगा.

> महिला पुलिसकर्मियों ने लड़कियों को कमरे में ही अपनी निगरानी में ले लिया. सभी लड़कियां हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाने लगीं, ''हमें छोड़ दीजिए प्लीज, वरना हमारी बहुत बदनामी होगी.''

उस के पास कई सुंदर लड़कियों के अदाओं के साथ खिंचे फोटोग्राफ थे. इन में विदेशी लड़कियां भी शामिल थीं. वास्तव में वह परांठों की नहीं, बल्कि कालगर्ल के बारे में बात कर रहे थे.

''विदेशी का इंतजाम कैसे करोगे?''

''सर, आप सिर्फ पसंद कीजिए, इंतजाम हमारे कमरों में पहले से है, फिलहाल कुछ लड़कियां आई हुई हैं.'' उस ने कहा.

आगंतुक ने उन में से एक लड़की को पसंद किया और उस का रेट तय करने के बाद एक 500 का नोट उस की तरफ बढ़ाया, ''ठीक है यह आप

ढाबे में रेड करती पुलिस

ढाबों से पकड़ी गईं कालगर्ल्स

एडवांस रख लीजिए, हमारा एक दोस्त भी मस्ती के लिए आने वाला है.'' कहने के साथ ही आगंतुक ने अपनी जेब से मोबाइल निकाला और किसी को काल कर के कहा, ''दोस्त, जल्दी आ जाओ बढ़िया इंतजाम हो गया है.''

उस के फोन किए अभी 5 मिनट भी नहीं बीते थे कि तभी पुलिस की गाड़ियां वहां आ कर रुकीं. पुलिसकर्मी दनदनाते हुए उस ढाबे में आ गए और मैनेजर को हिरासत में लेने के बाद कमरों की तलाशी लेनी शुरू कर दी.

काउंटर पर बैठा व्यक्ति व अन्य लोग यह सब देख कर सकपका गए, जबकि 2 आगंतुक जो मैनेजर से बातचीत कर रहे थे, वे मंदमंद मुसकरा रहे थे.

वास्तव में वह कोई और नहीं, बल्कि पुलिस के नकली ग्राहक थे. सटीक जानकारी होने के बाद ही पुलिस ने रेड की काररवाई की थी. पुलिस जब कमरों में पहुंची तो हैरान रह गई. कमरों में कई लड़कियां मौजूद थीं, जो पुलिस को देख कर अपना मुंह छिपाने लगीं.

महिला पुलिसकर्मियों ने उन्हें कमरे में ही अपनी निगरानी में ले लिया. सभी लड़कियां हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाने लगीं, ''हमें छोड़ दीजिए प्लीज, वरना हमारी बहुत बदनामी होगी.''

''क्यों, यह सब खयाल तुम लोगों को पहले नहीं आया.'' महिला पुलिसकर्मी ने कहा.

''गलती हो गई अब कभी नहीं आएंगे.'' कई लड़कियां गिड़गिड़ाते हुए बोलीं, लेकिन पुलिसकर्मियों ने उन की गुहार को नजरंदाज कर दिया. एक पुलिस अधिकारी ने अधीनस्थों को निर्देश दिया, ''तुम लोग इन को यहीं रखो, कोई भी यहां से जाने न पाए, हम बाकी जगह को चैक करते हैं.'' इस के बाद पुलिस ने अन्य 2 ढाबों पर भी रेड की.

दरअसल, यह हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर की उड़नदस्ता टीम थी, जिस का नेतृत्व डीएसपी अजीत सिंह कर रहे थे. टीम में सोनीपत की एसडीएम शशि वसुंधरा को भी शामिल किया गया था.

स्पैशल टीम को सूचना मिल रही थी कि मुरथल के कुछ ढाबों पर देह व्यापार, जुएसट्टे व नशे का धंधा जोरों

पर चल रहा है. सूचना को पुख्ता करना जरूरी था. इसलिए टीम ने पहले 2 लोगों को नकली ग्राहक बना कर वहां भेजा था. जब उन की बातचीत में सब कुछ साफ हो गया तो उन का इशारा मिलने पर काररवाई की.

पुलिस टीम ने वहां स्थित हैप्पी ढाबा, राजा ढाबा व होटल वेस्ट ढाबों पर रेड की. इस काररवाई में 12 लड़कियों व 5 युवकों को देह व्यापार में जबकि 9 लोगों को जुए के आरोप में गिरफ्तार किया. वे महफिल सजा कर जुआ खेल रहे थे.

वे सभी अच्छे परिवारों से थे, इसलिए उन्होंने पुलिस पर रौब गालिब करने की कोशिश भी की, लेकिन पुलिस उन के प्रभाव में नहीं आई. 9 जुआरियों से पुलिस ने एक लाख 63 हजार रुपए भी बरामद किए.

जिस्मफरोशी के आरोप में गिरफ्तार लोगों में 3 विदेशी लड़कियां भी शामिल थीं. इन में एक लड़की उज्बेकिस्तान, दूसरी तुर्की व तीसरी रूस की रहने वाली थी. बाकी 9 लड़कियां दिल्ली निवासी थीं. गिरफ्तार किए गए युवक सोनीपत, दिल्ली व उत्तर प्रदेश के थे.

पुलिस ने सभी लोगों के मोबाइल व नकदी अपने कब्जे में ले ली. पुलिस की इस काररवाई से ढाबों पर भगदड़ मच गई. पुलिस ने सभी आरोपियों को कस्टडी में ले कर पुलिस वैन में बैठाया और उन्हें ले कर मुरथल थाने पहुंची.

वहां आरोपियों से पूछताछ की तो ढाबों पर चलने वाले अनैतिक धंधे की ऐसी परतें खुलीं, जिस पर हर कोई सोचने पर मजबूत हो जाए. क्योंकि ढाबों पर यह सब होता होगा, ऐसा शायद ही किसी ने सोचा हो.

ढाबों पर अमूमन लोग खाना खाने के लिए ही आते हैं, क्योंकि ढाबे इसी काम के लिए बने होते हैं, लेकिन मुरथल के ढाबों की बात अलग है. उन्होंने जीटी करनाल हाइवे किनारे बने ढाबों की छवि को नया रूप दिया. नाम भले ही ढाबा रखा गया, लेकिन उन्हें आधुनिक होटल का रूप दिया गया.

होटल की तरह ढाबों में रूम तक बनाए गए थे. ग्राहकों को खाने के साथसाथ रुकने की सुविधा भी दी जाने लगी. ढाबों की ख्याति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि दिल्ली एनसीआर सहित दूरदूर से लोग यहां परांठों का स्वाद लेने आते हैं.

पुलिस ने सभी लोगों के मोबाइल व नकदी अपने कब्जे में ले ली. पुलिस की इस काररवाई से ढाबों पर भगदड़ मच गई. पुलिस ने सभी आरोपियों को कस्टडी में ले कर पुलिस वैन में बैठाया और उन्हें ले कर मुरथल थाने पहुंची.

मुरथल के ढाबों के ज्यादातर मालिक खुद हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने ढाबे बनाने के बाद वह दूसरे लोगों को किराए पर दे दिए. यानी ढाबे के चलने न चलने से उन का कोई मतलब नहीं होता, उन्हें तो बस महीने में किराए की रकम चाहिए होती है.

वैसे तो ये ढाबे इतने मशहूर हैं कि उन पर न तो कमाई की कमी है और न ही ग्राहकों की, लेकिन कुछ ढाबे वालों को इतने पर भी तसल्ली नहीं हुई, उन्होंने लालच में अपने काम को चमकाने में चारचांद लगाने शुरू कर दिए.

पकड़े गए आरोपियों को थाने ले जाती पुलिस

ढाबे वाले वह काम भी कराने लगे जो नैतिक नहीं थे. इन में जुआ, सट्टा या नशा ही नहीं, बल्कि देह व्यापार भी शामिल हो गया. ऐसे लोगों ने यह भी नहीं सोचा कि ढाबों की छवि पर इस का क्या प्रभाव पड़ेगा. ऐसे ढाबों पर देह व्यापार का धंधा संगठित तरीके से चलाया जाने लगा.

ढाबे वालों से ऐसी लड़कियों के संपर्क हो गए, जो पैसे कमाने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहती थीं. वहां पर ऐसी लड़कियों को सप्ताह 10 दिन के हिसाब से एकमुश्त रकम दे कर बुलाया जाता था. उन की बुकिंग का काम ढाबा संचालक व उन से जुड़े दलाल करते थे. ग्राहकों से वह खुद तयशुदा रकम लेते थे, जिस में कालगर्ल का हिस्सा नहीं होता था.

ढाबे में यूं सजे होते थे बैड

एकमुश्त रकम लेने के बाद कालगर्ल को उस व्यक्ति के इशारों पर काम करना होता था, जो उन्हें लाता था. लड़कियों के ठहरने व खाने का खर्च भी उन्हें ही उठाना होता था.

कहते हैं कि गलत काम गुपचुप तेजी से चलता है. ढाबों का देह व्यापार भी कुछ इस तरह चला कि लड़कियां वहां शिफ्टों में काम करती थीं. इन में दिल्ली और उस के आसपास के शहरों के अलावा पश्चिम बंगाल व कोलकाता की लड़कियां भी शामिल होती थीं.

जो विदेशी लड़कियां पकड़ी गईं, वैसे तो वे टूरिस्ट वीजा पर भारत आई थीं, लेकिन देह व्यापार में भी जुट गई थीं. उन के संपर्क कई ऐसे दलालों से थे, जो उन के लिए ग्राहक ढूंढते थे. तयशुदा कमीशन ले कर दलाल उन्हें ग्राहकों को परोसते थे.

देह के धंधे में लिप्त ढाबे वाले औन डिमांड विदेशी लड़कियां बुलाते थे. विदेशी लड़कियों को इतनी कमाई होती थी कि वह ऐसी जगहों पर आनेजाने के लिए अपने साथ पेमेंट पर गाइड भी

रखती थीं. गाइड भी उन के लिए ग्राहक ढूंढने में मदद करते थे.

अमूमन कोई भी व्यक्ति सोचता है कि ढाबे तो सिर्फ खाने के लिए होते हैं, इसलिए किसी को शक नहीं होता था कि वहां के कमरों के अंदर क्या कुछ चलता है. इस बात का भी ढाबे वाले जम कर फायदा उठा रहे थे. उन्हें लगता था कि जल्दी से उन पर कोई शक भी नहीं करेगा.

ढाबों पर देह व्यापार के लिए नए ग्राहकों को जोड़ने का काम भी उन्हें औफर दे कर चलता था. ऐसे लोगों को बताया जाता था कि उन के यहां खाने के साथ शबाब का भी इंतजाम है, जो लोग इच्छुक होते थे, उन्हें लड़कियां परोस दी जाती थीं. इसी तरह चेन बनती रही.

देह व्यापार के लिए वाट्सऐप का भी इस्तेमाल किया जाता था. पुलिस से बचने के लिए नेटवर्क से जुड़े लोग वाट्सऐप के जरिए ही बातें किया करते थे और उसी से फोटो भेज कर लड़कियां पसंद कराई जाती थीं.

कई बार लड़कियों को औन डिमांड बुलाया जाता था. विदेशी लड़कियां ज्यादातर औन डिमांड आती थीं. जैसे ही उन्हें फोन किया जाता था, वे टैक्सी से कुछ देर में वहां पहुंच जाती थीं.

पुलिस ने पकड़े गए आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर के अगले दिन अदालत में पेश किया. जुए के आरोप में पकड़े गए 9 लोगों व स्थानीय लड़कियों को तो जमानत मिल गई, जबकि तीनों विदेशी लड़कियों को 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया.

हैरानी की बात यह थी ढाबों से मुरथल थाने की दूरी करीब एक किलोमीटर थी, ऐसे में पुलिस की नाक के नीचे ही देह का धंधा आबाद था.

मामला खुलने पर स्थानीय पुलिस की भूमिका सवालों के घेरे में आ गई. भला यह कैसे संभव था कि ढाबों पर जुआ, सट्टा व देह व्यापार होता हो और पुलिस को पता तक न हो.

लापरवाही सामने आने पर सोनीपत के एसपी जश्नदीप सिंह रंधावा ने इसे बेहद गंभीरता से लिया और थानाप्रभारी अरुण कुमार को तुरंत लाइन हाजिर करते हुए उन के विरुद्ध विभागीय जांच के आदेश दे दिए.

एसपी
जश्नदीप सिंह
रंधावा

सुखवीर सिंह को मुरथल थाने का नया प्रभारी बनाया गया. दूसरी तरफ ढाबों की छवि को ले कर मुरथल ढाबा एसोसिएशन के पदाधिकारी भी चिंतित हो गए. ढाबा संचालक अमरीक सिंह, देवेंद्र कादियान आदि का मानना है कि कुछ लोगों की करतूत की वजह से कारोबार प्रभावित हो सकता है.

इसलिए एसोसिएशन ने बैठक कर के तय किया कि उन के द्वारा निगरानी कर के गलत काम करने वालों को बेनकाब किया जाएगा. ऐसे लोग वहां ढाबा संचालन नहीं कर सकेंगे. जल्द ही वह ढाबा संचालन की गाइडलाइन तैयार कर के उस का पालन कराएंगे. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

अफगानिस्तान में तालिबान के दोबारा आ जाने के बाद वे यौनकर्मियां भी भयभीत हैं, जो छिपे तौर पर देह व्यापार में लिप्त रहती थीं. इस बारे में एक यौनकर्मी जैनब ने अपनी जो पीड़ा सुनाई वह...

काबुल के गुप्त यौनकर्मियों की पीड़ा

बुरके वाली बदनसीब

—शंभु सुमन

जैनब जब 2 साल पहले अपने ग्राहक से मिली थी, तब वह नशे में थी. उस ने उस के साथ सैक्स करना शुरू किया. सैक्स क्या था, उसे बलात्कार कहना ही ज्यादा सही होगा, क्योंकि उस पीड़ा से वह कराह भी नहीं पा रही थी.

कुछ समय में वह मरणासन्न जैसी हो गई थी. उस ने पहले कभी शराब को छुआ तक नहीं था, लेकिन कहा गया था कि वह बेहोश हो जाएगी. यह करने के लिए उसे भयभीत किया गया था और उस ने ऐसा करने के लिए अनिच्छा से सहमत हुई थी. तब उस की उम्र महज 18 वर्ष थी.

वह आदमी चला गया था. जब वह जागी तब उस का शरीर दर्द से कराह रहा था. उस के मन में क्षोभ भर चुका था. यह बताते हुए वह कहती है कि

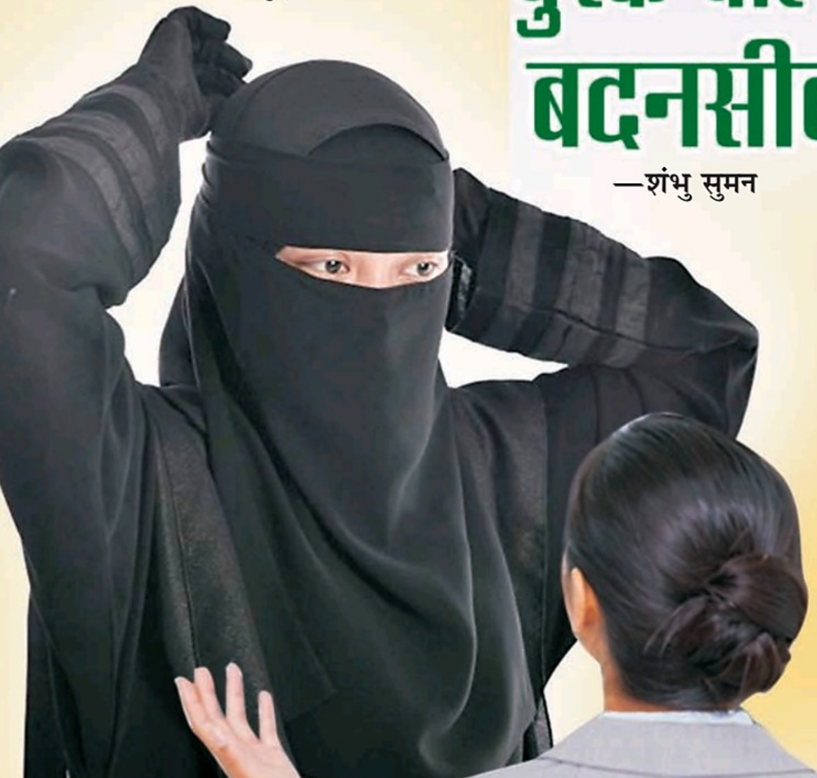

उस के बाद सैक्स जारी रखने के अलावा उस के पास कोई विकल्प नहीं था.

अफगानिस्तान में सैक्स वर्क पूरी तरह से गैरकानूनी रहा है, लेकिन जैसेजैसे युद्ध के बाद अराजकता का माहौल बना और लाखों की संख्या में लोग व्यापक गरीबी की चपेट में आ गए. तब बहुत सारी औरतें और पुरुषों ने देह व्यापार को अपनी आजीविका का जरिया बना लिया.

सैक्स वर्क गैरकानूनी होने के बावजूद अफगानिस्तान में दंड संहिता के तहत किसी सजा का उल्लेख नहीं है, लेकिन पकड़े जाने पर जेल की सजा का जोखिम बना रहता है.

इस संबंध में बताते हैं कि अफगानिस्तान में गरीबी और अशिक्षा वेश्यावृत्ति के मुख्य कारण रहे हैं. खास कर गरीब युवा महिलाओं में यौनाचार के ज्ञान के समझ की कमी होती है. वे मर्दों के झांसे में आ जाती हैं. कभी डर से तो कभी बेहतर जिंदगी के लालच में इस पेशे को धोखे से अपना लेती हैं.

जैनब के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ था. काफी मिन्नतों के बाद 21 साल की जैनब अमेरिका के गार्जियन अखबार के पत्रकार को इंटरव्यू देने के लिए तैयार हुई थी. उस ने अपना नाम नहीं छापने की शर्त रखी थी.

उस ने बताया कि अपने पिता की मृत्यु के बाद वह 5 छोटे भाईबहनों की देखभाल की जिम्मेदारी के बोझ तले दब गई थी. उस वक्त वह 13 साल की थी. मां भी लंबे समय से बीमार चल रही थी. इस के लिए उसे पहले तो स्कूल छोड़ना पड़ा. फिर वह घरेलू नौकरानी के रूप में काम करने लगी.

एक बार उस का छोटा भाई बीमार हो गया. उसे अस्पताल में देखभाल और दवा की जरूरत पड़ी. अस्पताल में एडवांस में पैसे जमा करने को कहा. उस के पास पैसे तो थे नहीं, इसलिए वह अपनी मालकिन के पास गई तो उस ने कहा ‘‘मेरे पास पैसे नहीं हैं, लेकिन मैं तुम्हारे लिए एक आदमी ला सकती हूं. तुम कुंवारी हो, तुम बहुत पैसा कमा सकोगी.’’

दरअसल, वह जिस औरत के यहां हाउसकीपिंग का काम करती थी वह एक अंडरग्राउंड वेश्यालय की मालकिन थी. जैनब ने बताया कि तब उसे नहीं पता था कि वह आदमी उस के साथ क्या करने वाला है. उसे यह कहते हुए शराब पिलाई गई कि उस के साथ जो कुछ होगा, उस का उसे पता नहीं चलेगा. थोड़े समय में उस की बेहोशी दूर हो जाएगी. तब तक उस के बीमार भाई का इलाज चलता रहेगा.

यह जैनब को इस धंधे में धकेले जाने की शुरुआत थी. उस के भाई का इलाज तो हो गया, लेकिन वह खुद बीमार हो गई, तन से भी और मन से भी. उस ने महसूस किया कि उस के साथ कुछ गलत हुआ है. उस गलती को सुधारा नहीं जा सकता है सिवाय छिपाने के.

जैनब ने आगे बताया कि उस के बाद उसे हर हफ्ते 2 से 3 पुरुषों के मनोरंजन का साधन बनना पड़ा. उन के दिल बहलाने से ले कर देह की भूख मिटाने तक का काम करना पड़ा. हमबिस्तर होना पड़ा. उन में से प्रत्येक से 2,000 अफगानी मुद्रा में पैसे मिले, जो भारतीय मुद्रा से थोड़े कम थे.

सैक्स वर्क के बारे में जैनब ने बताया कि इस काम के लिए उन्हें 10 मिनट का समय देना होता था, लेकिन

कभीकभी 20 मिनट का समय भी देना पड़ता था. इस दौरान कुछ ग्राहक कंडोम का उपयोग करते थे, लेकिन अधिकतर कंडोम से परहेज करते थे. उस ने बताया कि यह उस के लिए जान के जोखिम से कम नहीं था.

जब वह अपने काम के बारे में बताती है, तब हाथों को बांध कर बैठ जाती है. केवल उस की आंखें खुली रहती हैं और फिर धाराप्रवाह बोलती चली जाती है. उन्होंने अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में सैक्स बेचने वाले पुरुष और महिलाओं के बारे में जिक्र करते हुए उन के ठिकानों के बारे में भी बताया. काबुल में अधिकतर ऐसे अड्डे दोस्तों के घर, कौफी शौप और ब्यूटीपार्लर से जुड़े होते हैं.

> जैनब बताती है कि हर बार जब वह एक आदमी के साथ कमरे में अकेली होती है तो डरी रहती है. उस के बारे में न तो दोस्तों और न ही परिवार को पता है कि वह किस तरह से कमाई कर रही है. इस कारण वह अभी भी एक हाउसकीपर के रूप में काम करती है.

ग्राहकों में अधिकतर पुरुष युवा होते हैं, जिन की आयु 25 से 30 वर्ष के बीच होती है. उन में से ज्यादातर विवाहित हैं. वे सैक्सवर्कर के दलालों को जानते हैं और अपौइंटमेंट की व्यवस्था करने के लिए उन्हें फोन करते हैं.

कुछ पुरुष कई लड़कियों में से चुनने का अनुरोध करते हैं. वे कइयों के साथ सैक्स कर चुके होते हैं, इस कारण नई लड़की चुनने की कोशिश करते हैं. कुछ से वे नफरत भी करते हैं, जिन से उन्हें संतुष्टि नहीं मिलती.

जैनब बताती है कि हर बार जब वह एक आदमी के साथ कमरे में अकेली होती है तो डरी रहती है. उस के बारे में न तो दोस्तों और न ही परिवार को पता है कि वह किस तरह से कमाई कर रही है. इस कारण वह अभी भी एक हाउसकीपर के रूप में काम करती है.

जैनब ने बताया कि उसे ग्राहक तक पहुंचाने वाले पुरुष और औरत दोनों रहे हैं. वह जानती है कि काबुल में भी कई पुरुष यौनकर्मी का काम करते हैं, लेकिन उन का कहना है कि वह उन में से किसी से भी नहीं मिली हैं.

हालांकि जैनब की तरह ही 28 वर्षीय जावेद भी पुरुष सैक्स वर्कर हैं, जिन्हें पुरुष सैक्सवर्कर कहा जा सकता है. 3 बच्चों के पिता हैं. उन के काम के बारे में न तो उन की पत्नी को कुछ मालूम है और न ही बच्चे इस बारे में कुछ जानते हैं.

जावेद बताते हैं कि वह दोहरी जिंदगी जीते हैं. उन्होंने बताया, ''मैं ने महसूस किया कि बहुत से पुरुष मेरे साथ सोना चाहते थे और मुझे पैसे की जरूरत थी. मैं ने लोगों के साथ घर जाना शुरू किया और उस में दिलचस्पी पैदा हुई. कुछ अब मेरे ग्राहक हैं और मुझे भुगतान करते हैं. दूसरे ऐसे दोस्त हैं जिन के साथ मैं यौन संबंध बनाने का फैसला करता हूं.''

उन का कहना है कि यह पैसा उन के बच्चों को खिलाने, अच्छी परवरिश और उन्हें स्कूल भेजने का खर्च पूरा करने के काम आता है. ●

जैनब और जावेद परिवर्तित नाम हैं.

आसमान से बरसेगा सोनाचांदी

आप ने तरहतरह की बारिशों के बारे में सुना होगा, लेकिन क्या आप जानते हैं कि निकट भविष्य में सोनेचांदी की भी बारिश होने वाली है. जी हां, यह कोई कोरी गप्प नहीं है.

अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने अपने एक शोध में पाया है कि पृथ्वी के निकट एक उल्कापिंड आ रहा है, जो अरबोंखरबों से भी अधिक कीमती है, क्योंकि वह सोनेचांदी से भरा हुआ है.

नासा का कहना है कि यह उल्कापिंड फिलहाल घूमता हुआ पृथ्वी की ओर बढ़ रहा है. उस के पृथ्वी तक पहुंचने में सालों का समय लग सकता है. इस बीच उस के किसी दूसरे पिंड से टकराने पर उस के लाखों टुकड़े बन सकते हैं. इस तरह वह जमीन पर सोनेचांदी की बरसात की तरह गिरेगा.

नासा ने उसे गोल्डमाइन एस्ट्रायड का नाम दिया है, जिस में सोने की खदान होने की उम्मीद है. साथ ही कहा जा रहा है कि वह न सिर्फ सोना, बल्कि यह उल्कापिंड कई अन्य कीमती धातुओं से भरा पड़ा है. इस के एक छोटे से टुकड़े की भी कीमत अरबोंखरबों डालर से अधिक बताई जा रही है.

नासा के अनुसार हमारे सोलर सिस्टम में इस उल्कापिंड का आकार 124 मील चौड़ाई लिए हुए है. वैज्ञानिकों के अनुसार उल्कापिंड में कई कीमती धातुओं की कीमत करीब 10 हजार क्वाड्रिलियन डालर आंकी गई है. यह

अंतरराष्ट्रीय खबरें

सूरज के चारों तरफ घूम रहा है और मार्स एवं जुपिटर के बीच में मौजूद है. नासा उस उल्कापिंड के निकट जाने की कोशिश में है.

उस का निर्धारित लक्ष्य सन 2026 तक का है, इस के पास जाने की कोशिश की जाएगी. उस के अध्ययन के बाद ही उस के पृथ्वी तक पहुंचने का अंदाजा लगाया जा सकता है.

इस काम में कैलिफोर्निया के वैज्ञानिक भी जुटे हुए हैं. वे उस का तापमान मापने में लगे हैं. माना जा रहा है कि सोलर सिस्टम के निर्माण के समय हुई टक्कर में ये ग्रह से टूट कर अलग हुआ था. इस के बाद से यह अंतरिक्ष में चक्कर लगा रहा है. ☐

प्लेट में कटे कोबरा ने डसा

कब और कहां मौत आ जाए कहा नहीं जा सकता. ऐसा ही कुछ साउथ चीन में एक रेस्टोरेंट के शेफ पेंग फैन के साथ हुआ. उस ने कोबरा को काट कर उस का सूप बनाने की तैयारी की. 20 मिनट बाद कटे हुए कोबरा के कटे डसने से उस की मौत हो गई.

पेंग ने अपने रेस्तरां में कोबरा सूप को शामिल किया था. उस के सूप को काफी पसंद भी किया जाता था. घटना के दिन इसे बनाने के लिए पेंग ने कोबरा सांप को काट कर प्लेट में रख दिया था. कोबरा का फन काट कर अलग रख दिया था. इस दौरान पेंग ने उस फन को डस्टबिन में फेंकने के लिए जैसे ही उठाया, सांप ने उसे डस लिया. अपनी मौत के 20 मिनट बाद भी सांप का फन जिंदा था और उस के जहर से पेंग की मौत हो गई.

काफी कोशिश के बाद भी पेंग को बचाया नहीं जा सका था. उल्लेखनीय है कि कोबरा के जहर में न्यूरोटौक्सिंस होते हैं, जिस के एक बूंद से मात्र 30 मिनट में किसी की जान जा सकती है. ☐

आह! गरमी, प्रचंड गरमी के लिए कितने तैयार हैं हम

जानकारों की मानें तो आने वाले 20 सालों में लोग न केवल गरमी से बेचैन हो जाएंगे बल्कि उन्हें बाढ़, तूफान, आगजनी और भीषण सर्दी से भी जूझना पड़ेगा, कारण जलवायु परिवर्तन. इंटरगवर्नमेंटल पैनल औन क्लाइमेट चेंज की नई रिपोर्ट में धरती का तापमान 1.5 डिगरी सेल्सियस तक बढ़ सकता है. यह भविष्य में खतरे की घंटी है.

रिपोर्ट के अनुसार पिछले 40 सालों में जितनी तेजी से गरमी बढ़ी है, उतनी गरमी 1850 के बाद 4 दशकों में भी नहीं बढ़ी थी. इस सब के लिए वैज्ञानिकों ने बढ़ते प्रदूषण को जिम्मेदार बताया है और चेतावनी दी है कि उसे काबू नहीं किया गया तो हमें अनियंत्रित मौसमों का सामना करना पड़ेगा, जिस में भीषण गरमी भी शामिल है. इस रिपोर्ट को आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक फ्रेडरिके ओट्टो ने तैयार किया है.

उन का कहना है कि यदि प्रदूषण का स्तर इसी तरह बढ़ता रहा और जलवायु परिवर्तन को रोका नहीं गया तो 2100 साल तक औसतन तामपान

स्वीडन में एक पहाड़ ऐसा भी है, जिस की ऊंचाई पिछले 43 सालों से लगातार कम हो रही है. इसे ले कर लोग भले ही हैरान हों, लेकिन वैज्ञानिकों को इस का कोई मलाल नहीं है. उन्हें पता है कि ऐसा क्यों हो रहा है.

स्वीडन के इस पर्वत के छोटे होने का मुख्य कारण ग्लोबल वार्मिंग है. उस की ऊंचाई वैसे तो 4 दशकों से ज्यादा समय से कम हो रही है लेकिन पिछले 25 सालों से उस में तेजी से कमी आ रही है.

ग्लोबल वार्मिंग के कई तरह के प्रभाव हमें देखने को मिल रहे हैं. जिन में से ज्यादातर पर्यावरण के लिए नुकसानदेह हैं. एक अध्ययन में शोधकर्ताओं ने पाया है कि स्वीडन का सब से ऊंचा पर्वत केबनेकायसे तेजी से सिकुड़ रहा है.

स्कैनडीनेवियन पर्वतमाला का हिस्सा रहे स्वीडन के इस पर्वत की 2 खास चोटियां हैं. इस के दक्षिण में स्थित चोटी सिडटौपन की समुद्र तल से ऊंचाई 1968 में 21,120 मीटर थी.

इस के बाद इस बर्फीली चोटी की ऊंचाई में उतारचढ़ाव आता रहा है, लेकिन 1990 के दशक के उत्तरार्ध के बाद इस चोटी की ऊंचाई के आंकड़ों में गिरावट साफ तौर पर दिखने लगी. 1996 में दक्षिणी चोटी की

में 4.4 डिगरी सेल्सियस की बढ़ोत्तरी हो जाएगी. उस के परिणाम से आर्कटिक, ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका के ग्लेशियर और बर्फीली चट्टानें बहुत तेजी से पिघलेंगी. समुद्र तल ऊपर उठ जाएगा. समुद्र किनारे के इलाके उस में समा जाएंगे.

दूसरे नुकसान के तौर पर भयाभह बाढ़ जैसी स्थितियां पैदा हो जाएंगी. बर्फ में रहने वाले जीवजंतुओं की शामत आ जाएगी. खास कर इस से पोलर भालू की प्रजाति को काफी खतरा पहुंचेगा.

हालांकि 2015 में हुए इस पर चर्चा और समझौते के अनुसार इंसान चाहे तो उस के मुख्य कारण कार्बन डाईआक्साइड में कमी ला कर बेकाबू प्रदूषण को रोक सकता है. एक अनुमान के मुताबिक दुनियाभर में 4000 करोड़ टन कार्बन डाईआक्साइड का उत्सर्जन होता है. इसे घटा कर 2050 तक 500 करोड़ टन तक किया जाना चाहिए. ☐

ऊंचाई 2,118 मीटर थी, लेकिन साल 1998 में ही इस की ऊंचाई 2,110 मीटर तक ही रह गई जो 2011 में 2,100 मीटर से नीचे, 2099.7 तक आ गई थी, तब से गिरावट का यह दौर कायम है.

साल 2018 में स्वीडन की केबनेकायसे की दक्षिणी चोटी ने स्वीडन की सब से ऊंची चोटी होने का तमगा खो दिया और केबनेकायसे की ही उत्तरी चोटी, जो कि पथरीली होने के कारण स्थिर है और केवल बर्फ के जमनेपिघलने से उस की ऊंचाई कम ज्यादा होती है, स्वीडन की सब से ऊंची चोटी हो गई है. ☐

अंतरराष्ट्रीय खबरें

हर साल 441 मीटर छोटा हो रहा है यह पहाड़

भूकंप से जान बची अब बलात्कारी से कैसे बचें

हैती में 11 साल पहले 14 अगस्त को जबरदस्त भूकंप आया था. भूकंप में 3 लाख से ज्यादा लोग मारे गए थे. लाखों लोग बेघर हो गए थे. उस के बाद उन में से कुछ को अस्थायी शिविरों में कई साल बिताने पड़े थे, जहां हथियारबंद पुरुषों के समूहों ने उन का जम कर शोषण किया था.

ठसाठस भरे हुए इन शिविरों में ज्यादा रोशनी नहीं होती थी और यह लोग शाम ढलने के बाद इन में घूमा करते थे. घर गंवा चुकीं महिलाओं में बलात्कार का डर भूकंप या दूसरी आपदाओं के खतरे से कहीं अधिक बना रहता था.

अब भी अस्थायी शिविरों में रह रही महिलाओं के बलात्कार के सैकड़ों मामले सामने आए हैं. हैती की वेस्ता ग्वेरियर हाल ही में आए भूकंप के बाद एक स्थाई कैंप में रहती हैं, जहां उन्हें यह डर हमेशा सताता है कि उन के साथ कभी भी बलात्कार हो सकता है.

2011 में एमनैस्टी इंटरनेशनल द्वारा जारी की गई एक रिपोर्ट के मुताबिक आपदा के बाद के लगभग 5 ही महीनों में बलात्कार के 250 से भी ज्यादा मामले दर्ज किए गए.

ग्वेरियर जिस कैंप में हैं वहां करीब 200 लोग रह रहे हैं और ऐसे हालात में प्राइवेसी लगभग असंभव है. हमले की आशंका से ग्वेरियर इतनी डरी रहती हैं कि वो अंधेरा होने के बाद ही नहाती हैं और तब भी नहाते समय सभी कपड़े नहीं उतारतीं.

जब कभी कैंप के अंधेरे में उन पर रोशनी पड़ती है तो वो इस सोच में डूब जाती हैं कि रोशनी डालने वाला उन का कोई पड़ोसी है या कोई ऐसा 'जो वो करना चाहता है.'

कैंप में चालू टौयलेट नहीं हैं जिस की वजह से ग्वेरियर डरी और लज्जित महसूस करती हैं क्योंकि उन्हें लोग हर दिशा से देख सकते हैं. वो कहती हैं, 'मैं जो आप को बता रही हूं वो सिर्फ लड़कियां समझ सकती हैं.' ❐

अंतरराष्ट्रीय खबरें

नवजात बच्ची हुई प्रैग्नेंट हैरान रह गए डाक्टर

इस हैडिंग को पढ़ कर आप भी हैरान जरूर हो रहे होंगे, लेकिन यह बिलकुल सच है. यह मामला किसी और देश का नहीं बल्कि अपने भारत का ही है. अब आप के दिमाग में यह विचार आ रहा होगा कि 10 दिन की बच्ची आखिर प्रैग्नेंट कैसे हो सकती है?

आप ही नहीं, यह बात परीक्षण के बाद जब डाक्टरों को पता चली तो वह खुद चौंक गए थे, क्योंकि ऐसे मामले पूरी दुनिया में रेयर होते हैं.

यह घटना छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले में सामने आई. यहां पर एक महिला ने एक बेटी को जन्म दिया. जन्म के 10-12 दिन बाद डाक्टरों को उस बच्ची में कुछ असामान्य लक्षण दिखाई दिए. तब डाक्टरों ने उस नवजात की विशेष जांच की.

जांच में डाक्टरों के सामने रिपोर्ट आई तो वे हैरान रह गए. उस नवजात के पेट में एक भ्रूण पल रहा था. डाक्टरों ने यह बात जब उस नवजात के मातापिता को बताई तो उन के भी होश उड़ गए. उन्होंने डाक्टरों से पूछा कि यह सब कैसे हो गया और अब क्या होगा. तब डाक्टरों ने बताया कि इस में आप को चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है. यह एक रेयर मैडिकल कंडीशन है और लाखों शिशुओं में से किसी एक में ऐसा मामला सामने आता है.

दुनिया भर में इस तरह के करीब 200 केस ही आए हैं और भारत में केवल 8-10 मामले ही ऐसे सामने आए हैं. बताया जाता है कि पहला मामला 18वीं सदी में सामने आया था. डाक्टरों ने कहा कि गर्भावस्था के दौरान ही कुछ खास वजहों से विकसित हो रहे बच्चे में एक परजीवी भ्रूण आ जाता है.

डाक्टरों ने बताया कि अभी बच्ची कमजोर है, जब उस का वजन 4 किलोग्राम हो जाएगा तो औपरेशन कर के उस भ्रूण को निकाल दिया जाएगा. फिलहाल डाक्टर बच्ची के स्वास्थ्य पर नजर रखे हुए हैं. ●

सितारों

एक्ट्रेस सनी लियोनी इन दिनों भले ही अपनी आने वाली तमिल फिल्म 'शेरो' एवं वेब सीरीज 'अनामिका' को ले कर सुर्खियों में हों, लेकिन वह सुगंध की दुनिया में भी उतर कर युवाओं के मन में खलबली मचा चुकी हैं. उन्होंने अपने परफ्यूम, डिओडरेंट्स और बौडी मिस्ट की सीरिज से एक बार फिर अपनी खूबसूरती और ग्लैमर का जलवा बिखेरा है.

अभिनय के साथ बिजनैस की दुनिया में भी कदम रख चुकीं सनी लियोनी ने पिछले दिनों गुरुग्राम में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान अपने बैनर स्टारस्ट्रक बाय एसएल के तहत युवाओं के लिए एफेटो नाम की विशेष परफ्यूम लौंच की.

इस मौके पर उन का कहना था कि अलगअलग मूड और मौकों के लिए परफ्यूम की खास जरूरत होती है. उन्होंने इस की कमी पूरी कर दी है.

सुगंध प्रेमियों के लिए लुभावने डिजाइन की बोतलों को भी अनोखा नाम दिया गया है. जैसे रूज, इंडिगो, ब्लोंड, कोल आदि.

सनी का दावा है कि उन के ये प्रोडक्ट महिला व पुरुष दोनों की जरूरतों

को ध्यान में रख कर तैयार किए गए हैं. सनी इस क्षेत्र को अपने एक व्यक्तित्व के विस्तार के नजरिए से देखती हैं.

उन का कहना है कि इत्र में गुलाब, कस्तूरी, कीनू, मैगनोलिया के बेस पर दुनिया भर के लोगों को हाई एंड परफ्यूमरी से परिचित कराना भी था. उन्होंने कहा, 'मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि ये महक आप को एक अलग दुनिया, पुरानी यादें और यादों की गलियों में ले जाएगी.'

वैसे तो सनी लियोनी के लाखों फैन हैं. अब देखना यह है कि उन की तरह वह उन के परफ्यूम को कितनी तवज्जोह देंगे. ❐

सनी लियोनी बनीं बिजनैस वुमन

3 किरदारों में दिखेंगे रणवीर

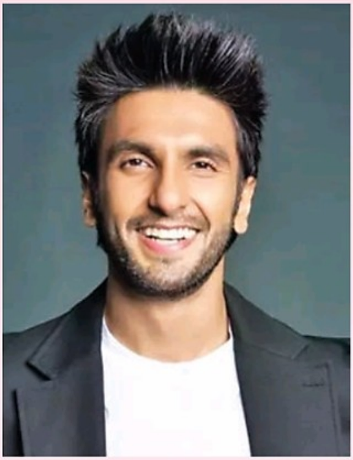

अभिनेता रणवीर सिंह ने बहुत कम समय में बौलीवुड में अपनी पहचान बनाई है. एक से एक हिट फिल्म दे कर रणवीर सिंह ने साबित कर दिया है कि वह अपने हर किरदार को चुनौती के रूप में लेते हैं. इसलिए उन के फालोवर और समर्थक भी उन्हें बहुत प्यार करते हैं.

अब तमिल फिल्म 'अन्नियन' का रिमेक बनने जा रहा है. इस फिल्म में रणवीर ओरिजनल फिल्म के लीड एक्टर विक्रम की तरह 3 अलगअलग अनोखे किरदारों में नजर आएंगे. दक्षिण भारत की फिल्मों का हिंदी रीमेक बनना कोई नई बात नहीं है. आए दिन उन फिल्मों

उस की हटेगी तो

टाइगर श्रौफ ने 23 मई, 2014 को रिलीज हुई फिल्म 'हीरोपंती' के साथ बौलीवुड में डेब्यू किया था. सब्बीर खान द्वारा निर्देशित इस फिल्म में बौक्स औफिस पर 726 मिलियन रुपए का बिजनैस दिया था. यह फिल्म रोमांस और एक्शन का तड़का थी. इस बात में दोराय नहीं है कि टाइगर ने बेहद कम समय में फिल्म इंडस्ट्री में अपनी अलग पहचान बनाई है. एक्शन में महारथ हासिल करने वाले टाइगर अब जल्द ही आने वाली फिल्म 'गणपत पार्ट 1' में नजर आएंगे. यह फिल्म एक्शन, ड्रामा और थ्रिलर से भरपूर होगी.

उन्होंने अपने फैंस को आने वाली फिल्म 'गणपत पार्ट 1' से अपना पहला लुक भी शेयर किया जिस में उन के सिक्स ऐब पैक्स नजर आ रहे थे.

विकास बहल के निर्देशन में बन रही

को ले कर कोई न कोई विवाद जुड़ ही जाता है.

ऐसा ही एक मामला रणवीर सिंह स्टार 'अन्नियन' रीमेक को ले कर आया है. साल 2005 में बनी तमिल की सुपरहिट फिल्म 'अन्नियम' दक्षिण भारत की 4 भाषाओं में डब कर के रिलीज हुई थी. फिर सन 2006 में फिल्म को हिंदी में डब कर के 'अपरिचित' नाम से रिलीज किया था. यह फिल्म सुपरहिट हुई थी. इस फिल्म को कई अवार्ड मिले थे.

अब निर्माता रविचंद्रन की फिल्म 'अन्नियन' को फिल्मकार शंकर ने हिंदी में बनाने की घोषणा की है. इस के लिए अभिनेता रणवीर सिंह को मुख्य भूमिका के लिए चुना गया है.

अब देखना यह है कि नए तरीके के साथ बनने वाली यह फिल्म रणवीर सिंह को कितनी उड़ान दे पाएगी. ❐

सब की फटेगी : टाइगर श्रौफ

इस फिल्म के पहले पार्ट को क्रिसमस के मौके पर 23 दिसंबर, 2022 को रिलीज किया जाना है. टाइगर श्रौफ ने भी फिल्म का एक वीडियो टीजर कर अपने प्रसंशकों को इस की जानकारी सोशल मीडिया के जरिए दी. उन्होंने बड़े ही खनकदार शब्दों में लिखा है, 'उस की हटेगी तो सब की फटेगी, आरेला है 'गणपत' तैयार रहना.

इस फिल्म में टाइगर के साथ कृति सेनन भी लीड रोल में हैं. पूजा एंटरटेनमेंट के बैनर तले इस फिल्म के प्रोड्यूसर जैकी भगनानी हैं. यह फिल्म 2 पार्ट में बनेगी. यानी 23 दिसम्बर, 2021 को 'गणपत पार्ट 1' रिलीज हो रही है तो इस का दूसरा पार्ट बाद में रिलीज किया जाएगा. ❐

भाईजान के नए लुक से दंग रह गए लोग

रशिया में 'टाइगर 3' की शूटिंग के दरम्यान सलमान खान का पहला लुक जब सामने आया तो उन्हें पहचानना मुश्किल था. गोल्डन दाढ़ी, मूंछें और बालों में रंग. सलमान खान 'टाइगर 3' में नजर आएंगे.

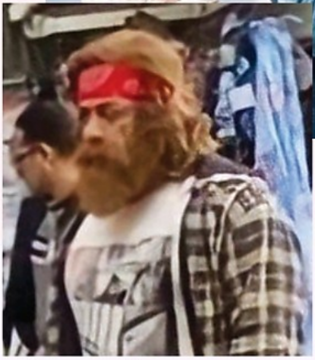

यानि बौलीवुड के भाईजान सलमान आने वाली फिल्म की शूटिंग के लिए काफी सक्रिय हो चुके हैं. इस का पहला पार्ट साल 2012 में रिलीज हुआ था. दूसरा भाग 'एक था टाइगर' के नाम से रीलिज हुई थी. तीसरे भाग की शूटिंग के लिए रशिया का लोकेशन चुना गया है.

सलमान खान पिछली 2 फिल्मों की तरह इस में रौ एजेट टाइगर की भूमिका में नजर आएंगे. फिल्म के सेट से सलमान खान की एक तसवीर लीक हुई, जिस में उन्हें आसानी से नहीं पहचाना जा सकता है.

उस के अलावा कई और तसवीरें भी सामने आई हैं. उन में सलमान एक विदेश व्यक्ति के अवतार में हैं.

उन्होंने चेक शर्ट और डेनिम जींस पहने हुए सिर में लाल कपड़ा बांध रखा है. तसवीरों में उन की बौडी और गेटअप देखने लायक है.

'टाइगर 3' की शूटिंग में सलमान खान के साथ उन के भाई सोहेल खान के बेटे निर्वान भी पहुंचे हैं.

सलमान के साथ केटरीना कैफ भी फिल्म में नजर आएंगी. मनीष शर्मा के निर्देशन में बन रही फिल्म में एजेंट बने टाइगर और जोया का धमाकेदार एक्शन देखने को मिलेगा.

फिल्म में इमरान हाशमी नेगेटिव लेकिन दमदार रोल में दिखेंगे. बताते हैं कि इमरान के एंट्री सीन को धमाकेदार बनाने के लिए मेकर्स ने 10 करोड़ रुपए खर्च किए हैं. यह भी बताया जा रहा है कि ये सबसे महंगी एक्शन फिल्मों में से एक होगी. ❐

सुहाना को लांच करने की तैयारी

बौलीवुड सुपर स्टार शाहरुख खान की बेटी सुहाना खान अब अपने रुपहले परदे पर आने की तैयारी कर रही हैं. मशहूर फिल्म निर्माता जोया अख्तर सुहाना को अपनी एक फिल्म में कास्ट करने वाली हैं.

कौमिक बुक आर्ची के इंडियन एडेप्टेशन पर काम कर रही जोया अख्तर शाहरूख खान की 21 वर्षीया बेटी सुहाना को लांच करने की तैयारी कर चुकी हैं. बौलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान हमेशा से यह कहते आए हैं कि उन की बेटी एक्ट्रेस बनना चाहती है. अब उन का यह कहना सच होने वाला है.

फिल्ममेकर जोया अख्तर इन दिनों इंटरनैशनल कौमिक बुक आर्ची के इंडियन एडेप्टेशन पर काम कर रही हैं. वह इस प्रोजेक्ट को ओटीटी प्लेटफार्म नेटफ्लिक्स के लिए बनाएंगी.

यह एक टीनएज स्टोरी होगी जिस के लिए जोया को वैसे कई सारे यंग एक्टर्स की तलाश है, जो फिल्म में दोस्तों की भूमिका निभा सकें. फिल्म की कास्टिंग के मुताबिक मुख्य किरदार के लिए जोया को शाहरुख की बेटी सुहाना जम रही हैं.

वैसे सुहाना ने नवंबर, 2018 में आई ‘द ग्रे पार्ट औफ ब्लू’ में काम किया था. अंग्रेजी में बनी इस 10 मिनट की शौर्ट फिल्म में सुहाना की परफारमेंस काफी सराही गई थी और उन के बौलीवुड डेब्यू को ले कर उत्सुकता जाग गई थी.

हालांकि शाहरुख खान फिल्मों में कदम रखने से पहले सुहाना को अपनी पढ़ाई पूरी करने पर भी जोर दे रहे हैं.

सुहाना लंदन में फिल्म मेकिंग का कोर्स कर रही हैं. कोर्स पूरा होने के बाद वह एक्टिंग में करियर अपनाएंगी. उन्होंने फिल्म ‘जीरो’ में अपने पिता शाहरुख खान को असिस्ट किया था. अब देखना यह है कि सुपरस्टार शाहरुख खान की बेटी इस फिल्म के जरिए दर्शकों के दिलों में कितनी जगह बनाएंगी. ●

कोरोना लौकडाउन के बाद धंधेबाजों ने देह व्यापार के तरीके जरूर बदल दिए हैं, लेकिन उन का मकसद एक ही होता है, लड़कियों के साथ एंजौय करना. फरीदाबाद के होटल श्री बालाजी और इंपीरियल पैलेस में पुलिस ने दबिश दे कर करीब 6-7 दरजन युवकयुवतियों को जिस तरह आपत्तिजनक स्थिति में गिरफ्तार किया, उस से यही पता चलता है कि...

फरीदाबाद में भी मस्ती की पार्टी

—शाहनवाज

कोरोना वायरस का असर कम होते ही देह कारोबार के अड्डे आबाद होने लगे. लोगों का आवागमन शुरू हुआ नहीं कि सेक्स वर्कर लड़कियां, उन के दलाल और मानव तसकरी जैसे धंधे में लगे लोगों की सक्रियता बढ़ गई. दिल्ली से सटे फरीदाबाद में ऐसे मामलों की सूचना मिलते ही पुलिस बल ने भी मुस्तैदी दिखाते हुए देह के धंधेबाजों को धर दबोचा. मौके से महीने भर में दर्जनों लड़कियां भी पकड़ी गईं.

फरीदाबाद में नीलम बाटा रोड से करीब 8 किलोमीटर दूर बल्लभगढ़ के रहने वाले 48 वर्षीय आलोक को उन के जन्मदिन के बारे मे खास दोस्त प्रदीप ने याद दिलाया. वे तो भूल ही गए थे कि 4 दिनों बाद उन का जन्मदिन आने वाला है. वह फरीदाबाद के बाटा की मार्किट एसोसिएशन के प्रेसिडेंट (प्रधान) हैं.

अपना रोज का काम निपटा कर 25 जुलाई, 2021 की रात को अपनी गाड़ी में घर की ओर निकले थे. कान में इयरबड्स लगाए म्यूजिक का आनंद ले रहे थे और गाड़ी भी ड्राइव कर रहे थे. तभी उन के कान में किसी के फोन की रिंग सुनाई दी. उन्होंने सामने रखे मोबाइल

छायांकन: मौडलिंग

पर नजर डाली. काल उन के खास दोस्त प्रदीप की थी.

''हैलो भाई, कैसा है तू ? 2 हफ्ते हो गए, कोई खबर नहीं मिल रही है. कहां बिजी है आजकल ?'' आलोक शिकायती लहजे में बोले.

''मैं ठीक हूं. बता तू कैसा है ? और सुन लौकडाउन खत्म होने के बाद लगता है बिजी मैं नहीं तू हो गया है'' प्रदीप भी उसी अंदाज में बोले.

''बस कर यार! कुछ दिनों से मार्केट में काम थोड़ा बढ़ गया था, इसीलिए फोन करने का मौका नहीं मिला. तू बता घरपरिवार में बाकि सब कैसे हैं ?'' आलोक ने पूछा.

SHREE BALAJI H
RESTAURANT
BANQUETS
ROOMS

प्रदीप जवाब देते हुए बोले, ''मैं बिलकुल ठीक हूं. घर पर भी सब ठीक है. तू ये बता कि 29 को क्या कर रहा है?''

''क्यों 29 को क्या है?'' प्रदीप ने सस्पेंस के साथ कहा, ''भाई, 29 को तेरा जन्मदिन है. भूल गया है क्या?''

प्रदीप की बात सुन कर आलोक के दिमाग में अचानक बत्ती जल उठी. उसे अपने जन्मदिन की न केवल तारीख याद आ गई, बल्कि इस मौके पर दोस्तों के साथ मौजमस्ती की पुरानी यादें ताजा हो गईं.

बोला, ''अरे हां! भाई सच कहूं तो अगर तू याद नहीं दिलाता तो मुझे याद ही नहीं था. पिछले साल भी कोरोना के चलते इस मौके पर कुछ ज्यादा नहीं कर पाया, लेकिन इस बार सारी कसर निकाल दूंगा. बड़ी पार्टी दूंगा, पार्टी.''

प्रदीप और आलोक दोनों स्कूल के दिनों के दोस्त थे. वे काफी गहरे दोस्त थे. लेकिन शादी के बाद दोनों अपनीअपनी घरगृहस्थी में व्यस्त हो गए थे. हालांकि उन के बीच फोन पर बातें होती रहती थीं.

फिर भी जब कभी वे किसी विशेष मौके पर मिलते थे, तब एकदूसरे की खैरखबर लेने के साथसाथ खूब जम कर मस्ती करते थे. उस रोज भी दोनों ने फोन पर ही जन्मदिन सेलिब्रेशन के मौके को यादगार बनाने की योजना बना ली थी.

बाटा टूल मार्केट में आलोक की तूती बोलती थी. हर दुकानदार के लिए वह बहुत ही खास और प्रिय थे. सभी उन की काफी इज्जत करते थे. मार्केट में यदि किसी को कोई भी औजार क्यों न खरीदना हो, प्रधान आलोक के रहते ही संभव हो पाता था.

इलाके के नेताओं से भी आलोक की अच्छी जानपहचान थी. एसोसिएशन का प्रधान होने की वजह से उन का अच्छा खासा पौलिटिकल कनेक्शन भी था.

अगले रोज 26 जुलाई को सुबह करीब 10 बाजे आलोक एसोसिएशन के औफिस पहुंच गए. उन्होंने सब से पहले प्रदीप को फोन कर आने का समय पूछा. उस के बाद वे छोटेमोटे काम निपटाने लगे.

आधे घंटे में ही प्रदीप आ गया. आलोक ने उस की खातिरदारी चायनमकीन से की. उस के द्वारा जन्मदिन की बात छेड़ने पर कुछ अलग करने की भी योजना बताई.

''रात भर में तूने कुछ और प्लानिंग कर ली क्या?'' प्रदीप ने उत्सुकता से पूछा.

''हां यार, सोच रहा हूं इस बार की बर्थडे पार्टी यादगार हो, पहले के मुकाबले सब से अलग रहे.'' आलोक बोले.

यह सुन कर प्रदीप चौंक गया. पूछा, ''क्या मतलब? कैसी अलग होगी पार्टी, जरा मुझे भी तो बताओ''

आलोक इत्मीनान से दबी आवाज में बोले, ''यार सोच रहा हूं इस बार पार्टी में नाचगाने वाली कुछ लड़कियों को भी बुलाया जाए. उन से ही शराब की पैग सर्व करवाई जाए.''

''लड़कियां! क्या कह रहा है तू?'' प्रदीप चौंकता हुआ बोला.

''लड़कियों को बुलाने से पार्टी की रौनक और मजा ही कुछ और होगा. मैं ने प्लानिंग कर ली है. कोरोना के चलते जिंदगी के सारे मजे खत्म से हो गए थे.

इसलिए मैं ने सोचा है कि अपने सारे दोस्तों और जिन के साथ बिजनैस करता हूं सभी को इस पार्टी में इनवाइट करूं.

इसी बहाने सब से मुलाकात भी हो जाएगी और इसी के साथ बिजनैस में हुए घाटे की भरपाई करने के लिए कुछ टाइम भी मिल जाएगा.''

यह सुन कर प्रदीप के मन में मानो खुशी के बुलबुले फूटने लगे. वह आलोक से बोला, ''अरे यार, मैं ने तो यह सोचा ही नहीं था. लेकिन पार्टी के लिए आएंगी कहां से ? कोई जुगाड़ है ?''

प्रदीप के इस सवाल का जवाब आलोक ने बड़ी बेफिक्री के साथ दिया. भरे अंदाज में दिया और कहा, ''अरे मैं ने सारी प्लानिंग अपने दिमाग में कर के रखी है. दिल्ली वाली निशा के बारे में याद नहीं है क्या तुझे ? वही जिस के पास हम शादी के बाद अकसर जाते थे ? अब वो लड़कियां सप्लाई करती है. दलाल बन गई है. अच्छी जानपहचान है उस से मेरी. मैं आज ही लड़कियों के लिए फोन कर के कह दूंगा.''

Da' URBAN
HOTELS & RESTAURANT

द अर्बन होटल : जहां रंगरलियां मनाते पकड़े गए जोड़े

आलोक और प्रदीप ने औफिस में घंटों बैठ कर 29 जुलाई के लिए प्लानिंग कर ली. नीलम बाटा रोड पर ऐसा कोई भी दुकानदार नहीं था, जो आलोक को नहीं जानता हो. इसी का फायदा उठाते हुए आलोक ने उसी रोड पर मौजूद 'द अर्बन होटल' के मालिक को फोन कर 28 और 29 जुलाई के लिए होटल बुक कर लिया.

होटल के मालिक की आलोक से अच्छी जानपहचान थी. होटल में कमरे समेत पार्टी के लिए बने खास किस्म के हौल की भी बुकिंग हो गई.

अब बारी थी खास दोस्तों के लिस्ट बनाने की, जिन्हें आलोक बुलाना चाहता था. लिस्ट बनाने में प्रदीप ने मदद की. सभी दोस्तों को फोन से 28 जुलाई के लिए मैसेज भी कर दिया. आलोक ने अपने जरूरी बिजनैस क्लाइंट्स को भी इस पार्टी में शामिल होने का न्यौता दे दिया. उस ने निशा को फोन कर के 15 लड़कियों को पार्टी में भेजने के लिए कहा. इस तैयारी के साथसाथ होटल मैनेजमेंट को ही कैटरिंग के इंतजाम की जिम्मेदारी दे दी.

प्रदीप के मन में अभी भी ऊहापोह की स्थिति बनी हुई थी. उस से रहा नहीं गया तो उस ने उस के कान के पास मुंह सटा कर कहा,''इस का मोटा खर्चा तू अकेले कैसे उठाएगा ?'

आलोक मुसकराया, सिर्फ इतना ही कहा, ''तू आगेआगे देखता जा मैं क्या करता हूं. इसी पार्टी से तुम्हारी झोली भी भर दूंगा.''

''वो कैसे ?'' प्रदीप बोला.

''मैं ने कमरे यूं ही नहीं बुक करवाए हैं? तुम सिर्फ मेरे इशारे पर नजर रखना.'' आलोक ने बताया.

इस तरह से 28 जुलाई की शाम भी आ गई. जन्मदिन की पूर्व संध्या पर मेहमानों के लिए विशेष आयोजन किया गया था. पार्टी का इंतजाम था, जो आधी रात तक चलना था.

रात के 12 बजे के बाद आलोक ने जन्मदिन का केक काटने का इंतजाम किया था. आमंत्रित मेहमान धीरेधीरे कर हौल के किनारे लगे सोफों पर आ गए. सभी पूरी तैयारी के साथ आए थे, उन के चेहरे पर मास्क जरूर लगे थे, लेकिन वे पहचाने जा रहे थे.

आलोक और प्रदीप दोस्तों से मिलने में व्यस्त हो गए. वे अच्छे सजावटी कपड़े में एकदम अलग दिख रहे थे. वे कभी रिसैप्शन पर जाते तो कभी हौल में आमंत्रित दोस्तों से बातें करने लगते. दूसरी तरफ प्रदीप उन के बताए इशारे पर अपना काम करने में लगा हुआ था.

हौल में जगहजगह गोल टेबल और कुरसियां लगी थीं. दीवारों को तरहतरह के सजावटी फूलों, सामानों से सजाया गया था. मध्यम रोशनी माहौल को खुशनुमा बनाने के लिए काफी था. देखते ही देखते रात के 8 बज गए.

तभी एक काल को देख कर आलोक हौल के एक कोने में चले गए. काल निशा की थी. उस ने बताया कि उस की भेजी सभी लड़कियां 2 गाड़ियों में 5 मिनट के भीतर पहुंचने वाली हैं.

आलोक ने निशा को कहा कि वे लड़कियों को पीछे के दरवाजे से आने के लिए बोले. तुरंत वे रिसैप्शन पर गए. होटल के मैनेजर से इशारे में बात की और उन के साथ प्रदीप को लगा दिया. थोडी देर में प्रदीप ने आलोक को आ कर बताया कि उस ने सभी लड़कियों को उन के कमरे में ठहरा दिया है.

उस ने वहां के इंतजाम के बारे में जानकारी देने के साथसाथ आलोक को बैग दिखाया. 'थम्स अप' करता हुआ जाने लगा. आलोक ने टोका, ''उधर नहीं, गाड़ी के पार्क में जा. बैग वहीं गाड़ी में छोड़ कर आना.''

निशा ने अपने साथ ले कर आई सभी लड़कियों को कुछ खास हिदायतें दीं. उन्हें उन के कमरे में भेज कर मेकअप आदि कर तैयार होने को कह दिया.

कब किसे हौल में आना है और किसे किस कमरे में ठहरना है. इस बारे में निशा ने लड़कियों को अलगअलग समझाया. उन्हें लोगों के साथ शालीनता के साथ पेश आने को भी कहा.

साढ़े 9 बजे के आसपास हौल का माहौल और भी रंगीन हो चुका था. कुछ लड़कियां हौल में आ चुकी थीं. अतिथियों में कोई भी महिला नहीं थीं.

लड़कियों को देखते ही बड़ेबड़े स्पीकर पर तेज और पार्टी वाले गाने बजने के साथ सीटियों की आवाजें भी सुनाई देने लगीं. हर टेबल पर शराब परोसने की शुरुआत हुई. कुछ लोग नशे में डांसिंग प्लेटफार्म की ओर बढ़ गए.

जल्द ही लड़कियों को जिस काम के लिए बुलाया गया था, वे काम में लग गईं. नशे में चूर अतिथियों ने जिस किसी लड़की को अपनी ओर खींचना चाहा उस ने जरा भी विरोध नहीं किया.

पसंद की लड़की का हाथ पकड़ा. जेब से 2000 वाले गुलाबी नोट निकाले और उस के लोकट कपड़े में डाल दिए.

लड़की झट से नोट निकालती, अंगुलियों में दबाती और सीढ़ियों की ओर बढ़ जाती. पीछे से अतिथि महोदय झूमतेमटकते रह जाते. लड़की सीढ़ियों पर बैठी निशा को अंगुलियों में फंसे नोट थमाती और अतिथि के साथ होटल के कमरे की ओर बढ़ जाती.

इस दृश्य से इतना तो साफ हो गया था कि जन्मदिन के बहाने से बुलाए गए अतिथियों का स्वागत लड़कियों के साथ यौन संतुष्टि से किया जा रहा था. इस मौके के इंतजार में न केवल ग्राहक बने अतिथि थे, बल्कि वे लड़कियां भी थीं, जिन का धंधा पिछले कुछ समय से मंदा पड़ गया था.

KEY room
HOTEL SHREE BALAJI
TULSI TRADING COMPANY
WELCOME
SHREE BALAJI HOTELS
FAMILY RESTAURANT
DESI RASOI
WeddingZ.in
Hotel

श्री बालाजी होटल में गेट टुगेदर के बहाने चल रही थी मस्ती की रंगीन पार्टी

इस पूरी पार्टी में आलोक और प्रदीप दोनों कहां गायब हो गए थे किसी को भी कोई खबर नहीं थी.

संभवतः दोनों ने अपनी पसंद की लड़की के साथ अलगअगल कमरे में खुद को बंद कर लिया हो. यानी देह व्यापार का धंधा पूरे शबाब पर था.

इस की भनक फरीदाबाद में पुलिस को भी लग गई. अनलौक के नियमों के उल्लंघन करने वालों पर नजर रखने के लिए कोतवाली पुलिस स्टेशन द्वारा फैलाए गए मुखबिरों ने इस की सूचना अधिकारियों तक पहुंचा दी थी. रात के करीब एक बजे अश्लील पार्टी के बारे में जानकारी मिलते ही थानाप्रभारी अर्जुन राठी ने एसीपी रमेशचंद्र को सूचना दे कर बिना किसी देरी के जल्द से जल्द होटल में रेड मारने की तैयारी कर दी. सभी आरोपियों को रंगे हाथों पकड़ने के लिए थाने में एक टीम का गठन किया.

जल्द से जल्द प्लान के मुताबिक टीम बिना सादा कपड़ों में होटल के बाहर पहुंची. होटल के बाहर से ही तेज गानों की आवाज आ रही थी.

प्लानिंग के मुताबिक थानाप्रभारी अर्जुन राठी ने हैडकांस्टेबल मनोज के साथ एक और कांस्टेबल को सादे कपड़ों में होटल के अंदर जाने को कहा. उन के अंदर जाने से पहले राठी ने अपनी जेब से 2000 का नोट निकाला और नोट के एक किनारे पर छोटे अक्षरों में अपने हस्ताक्षर कर के उन्हें दिया.

यह सारा काम प्लान के अनुसार ही था. वे दोनों पुलिस कर्मचारी बिना किसी झिझक के होटल के अंदर पहुंचे. होटल के रिसेप्शन पर बैठे व्यक्ति को उन पर किसी तरह का शक नहीं हुआ. वे दोनों सीधे होटल के हौल में जा पहुंचे.

सीढ़ियों से उतरते हुए उन्होंने एक

युवती को सीढ़ियों के पास बैठे देखा. बाद में पता चला कि वह निशा थी. वह भी उस की बगल से एक खाली टेबल और कुरसियों पर जा कर बैठ गए. उस समय हौल में बहुत कम लोग थे.

हर टेबल पर शराब के ग्लास थे. प्लेटों में स्नैक्स बिखरे पड़े थे. हौल के एक किनारे पर 2-4 लड़कियां आपस में बातें कर रही थीं, कुछ लोग डीजे पर बजते हुए गाने पर डांस कर रहे थे.

थोड़ी देर बाद हैडकांस्टेबल मनोज ने प्लान के अनुसार साइन किया हुआ 2000 का नोट हवा में लहराया तो लड़कियों के झुंड में से एक लड़की पैसे लेने के लिए उन के टेबल पर पहुंच गई.

मनोज ने इशारे से लड़की को कमरे में ले जाने का इशारा किया. लड़की ने भी इशारे से उन्हें रुकने को कहा और निशा के पास चली गई. साइन किया हुआ नोट उस ने निशा के हाथों में थमा दिया, फिर लड़की ने मनोज को वहीं से आने का इशारा किया.

हेड कांस्टेबल ने कान में लगे ब्लूटूथ संचालित बड्स और बटन में छिपे मोबाइल माइक को औन कर दिया. उस के औन होते ही बाहर खड़ी पुलिस फोर्स को सूचना मिल गई. देखते ही देखते हेड कांस्टेबल के लड़की के साथ कमरे तक पहुंचने से पहले ही पुलिस की छापेमारी शुरू हो गई.

थानाप्रभारी अर्जुन राठी ने होटल में रेड के दौरान सब से पहले हौल में बजने वाले तेज गानों को बंद करवाया और वहां मौजूद सभी लोगों को हिरासत में ले लिया. उसी दौरान होटल के कमरों से कई लड़कियां और अतिथि अर्धनग्नावस्था में दबोच लिए गए.

रात के 12 बजे तक चली छापेमारी की इस काररवाई में करीब 4 दरजन लोगों को हिरासत में लिया गया.

उन्हें 7 जिप्सियों में भर कर थाने लाया गया. उन से पूछताछ में ही खुलासा हुआ कि यह सैक्स रैकेट एक पार्टी में शमिल होने के नाम पर चलाया गया था. इस में होटल के मालिक की भी मिलीभगत थी. पुलिस ने उसे भी गिरफ्तार कर लिया.

पुलिस की रेड की बात जब तक आलोक तक पहुंची तब तक काफी देर हो चुकी थी. उसे भी एक कमरे से एक लड़की के साथ पकड़ लिया गया. उसे कमरे का दरवाजा तोड़ कर बाहर निकाला गया था. प्रदीप भी उस के बगल वाले कमरे से पकड़ा गया.

एसीपी
रमेश चंद्र

पुलिस सभी आरोपियों को थाने ले गई. उन्होंने पुलिस को बताया कि वह होटल में कमेटी के ड्रा का आयोजन कर रहे थे. सभी से पूछताछ के बाद उन्हें कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया.

इस के अलावा कोतवाली पुलिस ने 2 अगस्त को क्षेत्र के ही श्री बालाजी होटल में दबिश दे कर 13 लड़कियों सहित 37 लोगों को गिरफ्तार किया. यहां की गेट टुगेदर पार्टी के बहाने एंजौय का कार्यक्रम था. ●

यहां औफिस में न्यूड हो कर करना होता है काम

नौकरी करने वाला कोई भी व्यक्ति जब औफिस जाने की तैयारी करता है तो सब से पहले वह अपनी ड्रैस पर ध्यान देता है. क्योंकि अच्छे कपड़े व्यक्ति की पर्सनैलिटी को भी जाहिर करते हैं.

कई कंपनियों ने तो अपने कर्मचारियों की ड्रैस भी निर्धारित की होती है ताकि उन की कंपनी की अलग पहचान हो. लोग ड्रैस देख कर ही समझ जाएं कि वह फलां कंपनी में काम करता है.

इस के अलावा कंपनियां भी कर्मचारी से यह चाहती हैं कि उस का कर्मचारी अच्छे कपड़ों में औफिस आए. वहीं दोस्तो, दुनिया में कुछ ऐसी नौकरियां भी हैं, जहां कर्मचारियों को अपने सारे कपड़े उतार कर नौकरी करनी होती है. आइए जानते हैं, इन नौकरियों के बारे में. आस्ट्रेलिया और अमेरिका में कुछ कंपनियां ऐसी हैं जहां सभी युवक और युवतियों को न्यूड हो कर नौकरी करनी होती है.

इन कंपनियों की पहली शर्त यही होती है कि न्यूड हो कर ही काम करना होगा. अमेरिका में स्थित ब्रिटिश सौफ्टवेयर कंपनी में उन्हीं युवतियों को नौकरी पर रखा जाता है जो सारे कपड़े उतार कर काम करने को राजी होती हैं.

सभी कर्मचारी औफिस तक तो कपड़े पहन कर जाते हैं लेकिन औफिस में पहुंचने के बाद उन्हें अपने सारे कपड़े उतार कर रखने होते हैं. यानी ड्यूटी के दौरान सभी को निर्वस्त्र रहना होता है. इस खबर को पढ़ने के बाद तमाम लोगों के मन में ऐसी कंपनियों में नौकरी करने की इच्छा जागृत हो रही होगी. ●

HOTEL
DAYAL
PALACE

पटना में हवाई जहाज से आने वाली
रंगीन तितलियां

—शैलेंद्र कुमार 'शैल'

कभीकभी होता यह है कि पुलिस जांच किसी केस की कर रही होती है लेकिन खुलासा किसी दूसरे बड़े केस का हो जाता है. पटना पुलिस ने भी सन्नी अपहरण केस में एक जगह दबिश दी थी तो वहां सन्नी और अपहर्ता तो नहीं मिले, लेकिन एक ऐसे हाईप्रोफाइल सैक्स रैकेट का खुलासा हुआ कि...

छायांकनः मौडलिंग

स्वतंत्रता दिवस की 75वीं वर्षगांठ सकुशल मनाने के बाद राजधानी पटना के एसपी (सिटी सेंट्रल) अंबरीश राहुल ने थोड़ी राहत की सांस ली और आराम कर रहे थे. तभी दोपहर करीब साढ़े 3 बजे गर्दनीबाग थानाप्रभारी रमेश कुमार का उन के पास फोन आया. अंबरीश राहुल ने जैसे ही काल रिसीव की तो थानाप्रभारी बोले, ''जय हिंद, सर.''

''जय हिंद.'' एसपी अंबरीश राहुल ने उत्तर दिया.

''सर, मुखबिर के जरिए चौंका देने वाली एक सूचना मिली है. अलकापुरी के एक फ्लैट में देह का धंधा चल रहा है. बताया जा रहा है कि इस रैकेट के सरगना टाइगर और रोहित ने अलकापुरी के सन्नी का अपहरण भी कर लिया है.''

''क्या?'' सुन कर एसपी राहुल चौंक पड़े, ''सन्नी नाम के युवक का अपहरण कर लिया गया है. सूचना पक्की है न?''

''जी सर. उस मुखबिर के द्वारा दी गई सूचनाएं कभी गलत नहीं होती हैं, सर.''

''सूचना सही है तो फोर्स ले कर मौके पर दबिश दो.'' एसपी (सिटी) राहुल ने थानाप्रभारी को आदेश दिया, ''किसी भी हाल में अपहृत युवक बदमाशों के चंगुल से सुरक्षित बचना चाहिए और बदमाश सलाखों के पीछे.''

''ऐसा ही होगा सर. जय हिंद.'' थानाप्रभारी ने कहा.

''जय हिंद.''

इस के बाद थानाप्रभारी रमेश कुमार ने आननफानन में टीम तैयार की और

मुखबिर द्वारा बताई गई जगह अलकापुरी के सत्या अपार्टमेंट के फ्लैट में दबिश दी, जहां बदमाशों द्वारा सन्नी का अपहरण कर के रखे जाने की सूचना मिली थी.

पुलिस ने फ्लैट को चारों ओर से घेर लिया. फिर थानाप्रभारी सावधानी से 2 सिपाहियों को साथ ले कर धीरेधीरे फ्लैट के अंदर दाखिल हुए. उन्हें इस बात की आशंका थी कि बदमाशों के पास खतरनाक हथियार हो सकते हैं, इसलिए दबिश देते समय सावधानी बरतनी जरूरी थी.

फ्लैट के अंदर दाखिल होते ही अंदर का नजारा देख कर थानाप्रभारी और दोनों सिपाहियों के पांव दरवाजे पर ही थम गए. कमरे के अंदर 3 लड़के 3 लड़कियों के साथ आपत्तिजनक हालत में लिपटे हुए थे, जबकि एक और लड़की दूसरी ओर बैठी उन की निगरानी कर रही थी.

पुलिस को अचानक आया देख कर सब हड़बड़ा कर जिस अवस्था में थे, इधरउधर भागने लगे. लेकिन पुलिस ने उन्हें भागने का मौका नहीं दिया और धर दबोचा.

कमरे की तलाशी ली गई तो एक पिस्टल की मैगजीन और 8 जिंदा कारतूस भी बरामद हुए. पुलिस ने वह अपने कब्जे में ले लिए.

आपत्तिजनक हालत में पकड़े गए युवकों से थानाप्रभारी ने पूछा कि तुम में से सन्नी कौन है, जिसे किडनैप कर यहां रखा गया है. तब तीनों ने ही खुद को सन्नी होने से इंकार कर दिया और यह भी बताया कि यहां किसी का अपहरण कर के नहीं रखा गया है. किसी ने आप को गलत सूचना दी है.

थानाप्रभारी रमेश को भी यही लगा कि मुखबिर ने युवक की अपहरण की जो सूचना दी थी, वह शायद गलत थी. लेकिन दूसरी सूचना सच थी. चारों युवतियों सीमा, रेखा, बिंदु और मीरा देवी सहित सातों आरोपियों को पुलिस थाने ले गई.

पुलिस द्वारा की गई यह काररवाई पूरी तरह गोपनीय थी और थानाप्रभारी पलपल की सूचना एसपी (सिटी) अंबरीश राहुल को दे रहे थे.

> रात 10 बजे एसपी (सिटी) अंबरीश राहुल और डीएसपी सुरेश प्रसाद भी होटल दयाल पैलेस पहुंच गए. वहां गर्दनीबाग थाने के प्रभारी रमेश कुमार पुलिस टीम के साथ पहले से मौजूद थे. यह औपरेशन इतना सीक्रेट था कि होटल दयाल पैलेस के कर्मचारियों को इस की भनक तक न लगी.

थाने में युवतियों से चल रही पूछताछ के दौरान पुलिस को पता चला कि मीरा देवी सैक्स रैकेट की सरगना है. मीरा ही उन सभी को सत्या अपार्टमेंट तक लाई थी. वाट्सऐप के जरिए उन की बुकिंग की गई थी. इस काम के लिए उन्हें एक दिन के साढ़े 3 हजार रुपए मिलते थे.

सीमा, रेखा और बिंदु से पूछताछ के बाद पुलिस ने मीरा देवी से पूछताछ की. मीरा देह व्यापार मंडी का एक बड़ा नाम थी. घाटघाट का पानी पी चुकी मीरा इतनी आसानी से उन के सामने टूटने वाली नहीं थी.

लेकिन ऐसे लोगों के मुंह कैसे खुलवाए जाते हैं, पुलिस सब जानती है.

शिव ट्रैक्टर स्पेयर्स
HOTEL DAYAL PALACE

पटना स्थित होटल दयाल पैलेस

पुलिस ने जब उस से सख्ती की तो उस ने सब बता दिया. अपने बयान में उस ने पुलिस को बताया कि कई साल से वह इस धंधे को कर रही है. इस में कमीशन के तौर पर उस की बहुत मोटी कमाई हो जाती है.

उस ने पुलिस को एक बेहद महत्त्वपूर्ण जानकारी देते हुए बताया कि शहर के एग्जीबिशन रोड स्थित होटल दयाल पैलेस में हाईप्रोफाइल धंधा जोरों पर चलता है, जहां बंगाल और उत्तर प्रदेश के वाराणसी से कालगर्ल्स बुलाई जाती हैं.

इतना सुनते ही थानाप्रभारी रमेश कुमार के पैरों तले से जमीन खिसक गई. वह सोचने लगे कि निकले थे अपहरण की सूचना पर, यहां तो समंदर की बड़ीबड़ी रंगीन मछलियां हाथ लग गईं. यहां हाईप्रोफाइल सैक्स रैकेट का धंधा चल रहा था.

यह सब करतेकरते रात के 10 बज गए थे. थानाप्रभारी ने एसपी (सिटी) अंबरीश राहुल को जब होटल दयाल पैलेस में चल रहे हाईप्रोफाइल सैक्स रैकेट की सूचना दी और वहां छापा मारने की परमिशन मांगी तो वह भी चौंके बिना नहीं रह सके.

थानाप्रभारी रमेश कुमार जानते थे अधिकारियों की परमिशन के बिना यह काम वह अकेले नहीं कर सकते हैं. अगर उन्होंने ऐसा किया तो दिक्कत हो जाएगी.

हालांकि एग्जीबिशन रोड स्थित होटल दयाल पैलेस गांधी मैदान थाना क्षेत्र में पड़ता था, लेकिन वहां के थानेदार रंजीत वत्स को इस की जानकारी नहीं दी गई. इस की उन्हें भनक तक नहीं लगने दी.

एसपी (सिटी) राहुल ने गर्दनीबाग थाने के थानाप्रभारी को हिदायत दी कि इस की भनक किसी को भी नहीं लगनी चाहिए. यह मिशन अतिगोपनीय होगा और उन के नेतृत्व में होगा.

रात 10 बजे एसपी (सिटी) अंबरीश राहुल और डीएसपी सुरेश प्रसाद भी होटल दयाल पैलेस पहुंच गए. वहां गर्दनीबाग थाने के प्रभारी रमेश कुमार पुलिस टीम के साथ पहले से मौजूद थे.

यह औपरेशन इतना सीक्रेट था कि होटल दयाल पैलेस के कर्मचारियों को इस की भनक तक नहीं लगी.

बहरहाल, एसपी (सिटी) अंबरीश राहुल के होटल दयाल पहुंचते ही गर्दनीबाग थानाप्रभारी रमेश कुमार पुलिस फोर्स सहित हरकत में आए. कप्तान का इशारा मिलते ही पुलिस टीम धड़धड़ा कर होटल के अंदर घुस गई.

सब से पहले उन्होंने रिसैप्शन पर ड्यूटी कर रहे रिसैप्शनिस्ट विकास कुमार के पास से आगंतुक रजिस्टर को अपने कब्जे में ले लिया.

रिसैप्शनिस्ट विकास से पूछताछ करने पर पता चला कि होटल में कुल 10 कमरे हैं. सभी कमरे खाली हैं, कोई भी कमरा बुक नहीं है.

यह सुन कर एसपी राहुल से ज्यादा थानाप्रभारी चौंके थे. क्योंकि देह व्यापार की मौसी कही जाने वाली मीरा देवी ने पूछताछ के दौरान बताया था कि होटल के सभी कमरों में ग्राहक कालगर्ल के साथ रंगरलियां मना रहे हैं, जबकि होटल के रजिस्टर की पड़ताल करने में तो कहीं ऐसा कुछ दिख ही नहीं रहा है.

उस के बाद पुलिस ने होटल के सभी कमरों की तलाशी ली. 9 कमरों में से 9 कपल्स रंगरलियां मनाते पकड़े गए, जिन में 8 कपल्स नशे में चूर थे. एक शादीशुदा कपल भी था, जो किसी काम से पटना आया था. व कपल इस होटल में आ कर रुक गया था.

पुलिस ने उन से पूछताछ कर के उन्हें छोड़ दिया, जबकि 8 जोड़ों को हिरासत में ले कर वहीं होटल में पूछताछ करनी शुरू कर दी थी.

हिरासत में ली गई 8 में से 6 युवतियां कोलकाता की थीं, जिन के नाम चंपा, सोनिया, बेबी, नरगिस, समीना और रमैया थे, जबकि 2 युवतियां जूही और सत्या पटना की ही थीं. होटल संचालक पंकज कुमार को भी पुलिस ने हिरासत में ले लिया और उस से भी पूछताछ होने लगी.

पूछताछ के दौरान पता चला कि चला कि खूबसूरत और कमसिन समीना और रमैया कोलकाता से बुलाई गई थीं. जब कमरे की तलाशी ली जा रही थी तो वहां से प्रतिबंधित महंगी अंगरेजी शराब की कई बोतलें बरामद की गई थीं. पुलिस ने सभी बोतलें अपने कब्जे में ले लीं.

रात के 10 बजे से छापेमारी की कारवाई शुरू हो कर अगले दिन सुबह तक चली थी. पुलिस ने 8 कालगर्ल सहित 17 लोगों को होटल दयाल पैलेस से गिरफ्तार किया था. गिरफ्तार कर सभी आरोपियों को गर्दनीबाग थाना लाया गया और अगले दिन लंबी पूछताछ हुई.

खैर, जैसे ही होटल दयाल पैलेस में छापे की सूचना गांधी मैदान थाने के थानाप्रभारी रंजीत वत्स को हुई, उन के होश उड़ गए. वह जैसे थे, उसी अवस्था में होटल पहुंच गए. ऐसा पहली बार हुआ था कि होटल में छापे से ले कर बड़े पैमाने पर सैक्स रैकेट के पकड़े जाने की सूचना उन्हें नहीं मिली थी, जबकि यह होटल उन्हीं के थानाक्षेत्र में पड़ता था.

एसपी (सिटी) राहुल ने जानबूझ कर उन्हें इस औपरेशन में शामिल नहीं किया था. उन्हें इस बात की पुख्ता खबर थी कि थानाप्रभारी रंजीत होटल

पुलिस ने होटल से 8 कालगर्ल्स सहित 17 लोगों को गिरफ्तार किया

संचालक पंकज से मोटी रकम लेते थे. यदि उन्हें इस औपरेशन की जरा सी भी भनक लगती तो वह होटल मालिक को अलर्ट कर देते.

बहरहाल, रात के 10 बजे से छापेमारी की काररवाई शुरू हो कर अगले दिन सुबह तक चली थी. पुलिस ने 8 कालगर्ल सहित 17 लोगों को होटल दयाल पैलेस से गिरफ्तार किया था. गिरफ्तार कर सभी आरोपियों को गर्दनीबाग थाना लाया गया और अगले दिन लंबी पूछताछ हुई.

होटल संचालक पंकज कुमार ने पूछताछ के दौरान बताया कि वाट्सऐप के जरिए कालगर्ल के लुभावने फोटो ग्राहकों को भेजे जाते थे. फोटो पसंद आने के बाद ग्राहक इस की सूचना पंकज को देता था, जहां 6 हजार से ले कर 18 हजार रुपयों तक में सौदा तय होता था और 75 फीसदी डिजिटल पेमेंट होने के बाद ग्राहकों को होटल में बुलाया जाता था.

वहीं कालगर्ल को बुला कर उन्हें होटल से दूर किसी अपरचित स्थान पर नाम बदल कर रखा जाता था. एक कालगर्ल को दिन के साढ़े 3 हजार रुपए दिए जाते थे और उसे एक सप्ताह बाद वापस भेज दिया जाता था. उन के ग्राहकों में शहर के नामचीन से ले कर हाईप्रोफाइल लोग, जिन में बड़ेबड़े राजनेता, मंत्री, प्रशासनिक अफसर से ले कर मठाधीश तक शामिल थे, जो अपनी रातें रंगीन करने यहां आते थे.

पुलिस ने गिरफ्तार सभी कालगर्ल्स और ग्राहकों के खिलाफ वेश्यावृत्ति की विविध धाराओं में मुकदमा दर्ज कर उन्हें जेल भेज दिया और आगे की जांच शुरू कर दी.

होटल दयाल पैलेस में जिस्मफरोशी का यह खेल कोई नया नहीं था. वहां यह खेल कई सालों से चला आ रहा था. पटना के एसपी रहे मनु महाराज ने इस होटल में कई बार छापेमारी की थी और बड़े पैमाने पर सैक्स रैकेट का खुलासा किया था. तब से ले कर अब तक इस होटल में गरम गोश्त का सौदा आज तक चला आ रहा है.

शहर के व्यस्ततम इलाके और गांधी मैदान थाना क्षेत्र के एग्जीबिशन रोड स्थित होटल दयाल पैलेस को पंकज कुमार ने कई साल पहले लीज पर लिया था. वैसे पंकज कुमार बिहार के वैशाली जिले का रहने वाला था.

वह पढ़ालिखा युवक था. सरकारी नौकरी के लिए वह यहांवहां भागता रहा, हाड़तोड़ मेहनत करता रहा, कंपटीशन की तैयारी करने के बावजूद भी उस की कहीं सरकारी नौकरी नहीं लगी.

थकहार कर उस ने सरकारी नौकरी की तरफ से मुंह मोड़ लिया. वह कुछ ऐसा व्यापार करना चाहता था, जिस में कम समय में अमीर बन जाए. ऐसे में उस के एक दोस्त ने उसे होटल बिजनैस की सलाह दी और बताया कि इस धंधे में बेशुमार कमाई है.

दोस्त की बात मान कर पंकज ने होटल खोलने का मन बना दिया और लीज पर होटल दयाल पैलेस को ले लिया. हालांकि इस होटल का असल मालिक कोई और था, जो आज भी परदे के पीछे है.

एक बहुत पुरानी कहावत है सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना. कुछ ऐसा ही पंकज कुमार के साथ भी हुआ था. जो सोच कर उस ने होटल लीज पर लिया था, हुआ इस के बिलकुल उलटा.

होटल में मुनाफा नहीं हुआ तो वह अवैध धंधों में लिप्त हो गया. शुरूशुरू में उस ने ग्राहकों की डिमांड पर लड़कियों का इंतजाम किया. इस से उस का धंधा चल निकला. कल तक जहां होटल में कोई नहीं आता था, वहां अब हरियाली ही हरियाली फैलने लगी थी.

रिसैप्शन काउंटर पर विकास कुमार

होटल का सौदा करने वाला पंकज जान चुका था कि यदि यहां रंगीन तितलियों को विकसित करना है तो खाकी वरदी को साथ मिला कर चलना होगा, नहीं तो धंधा चल नहीं सकता. वैसे भी जिस्मफरोशी का यह धंधा मछली की सड़ांध से भी ज्यादा बदबूदार होता है, जिस की गंध सब से पहले खाकी वरदी वालों को हो जाती है.

ऐसा ही हुआ. गांधी मैदान थाने के पूर्व थानाप्रभारी को जब जानकारी मिली कि होटल दयाल पैलेस में सैक्स रैकेट चलता है तो उन्होंने होटल संचालक पंकज कुमार को थाने बुलाया.

तब पंकज जुगाड़ लगा कर थानेदार की सेवा में जुट गया और शराब, शबाब और कबाब तीनों परोसने लगा. फिर क्या था थानाप्रभारी ने अपनी ओर से आंखें मूंद लीं.

गांधी मैदान थाने के थानाप्रभारी भले ही चुप्पी साध गए, लेकिन एसपी मनु महाराज को जब इस की भनक लगी तो उन्होंने थानाप्रभारी को निलंबित कर दिया. बात यहीं तक नहीं रुकी, उन्होंने होटल में छापा मार कर होटल को सील कर दिया था.

पंकज कुमार ने पहुंच और पैसों की बदौलत कानूनी प्रक्रिया पूरी कर के कुछ महीने बाद होटल की सील खुलवा ली. उस के बाद फिर होटल में बड़े पैमाने पर पुराना धंधा शुरू कर दिया था. इस बार धंधे का रूप व्यापक था. इस के लिए उस ने ऐसा रास्ता निकाला कि जल्द वह कानून के पचड़े में न पड़े.

पंकज ने मीरा देवी नाम की महिला को अपने धंधे में शमिल कर लिया था. मीरा पटना की रहने वाली एक बेबस महिला थी. वह मुफलिसी में जी रही थी. घरपरिवार चलाने के लिए उस के पास पैसे नहीं थे तो वह जिस्मफरोशी के धंधे में उतर आई.

भोलीभाली लड़कियों को बरगला कर और नौकरी का झांसा दे कर जिस्मफरोशी के धंधे में उतारती थी. जिन लड़कियों के पैर एक बार इस दलदल में फंस जाते, उस का वहां से बाहर निकल पाना मुश्किल हो जाता.

धंधे में उतारने के लिए उस ने एक प्रौपर चैनल बना रखा था. कालगर्ल्स के फोटो वाट्सऐप के जरिए अपने चुनिंदा ग्राहकों के पास भेजते थे. ग्राहक के फोटो पसंद आ जाने पर सौदा तय होता था. रंगीन तितलियों के साथ एक रात बिताने की कीमत 6 हजार से ले कर 18 हजार तक होती थी.

उन पैसों में से कालगर्ल को एक दिन के साढ़े 3 हजार रुपए दिए जाते थे. फिर उन्हें शहर में एक हफ्ते से ज्यादा रुकने नहीं दिया जाता था.

होटल दयाल पैलेस में अधिकांश कालगर्ल दूसरे प्रदेशों खासकर कोलकाता से बुलाई जाती थीं. घटना वाले दिन खूबसूरत और कमसिन समीना और रमैया को कोलकाता से प्लेन के जरिए बुलाया गया था.

इस धंधे में उतरी अधिकांश कालगर्ल अपने मंहगे शौक पूरा करने के लिए आई थीं तो कुछ शादीशुदा युवतियां जो पेशेवर हैं, उन के इस धंधे को उन के घर वाले जानते भी हैं, वह मजबूरी में आईं.

यह सभी जानते हैं कि जिस्मफरोशी का काम गंदा है, पर यह धंधा है. फिलहाल धंधे में गिरफ्तार सभी युवतियां और ग्राहक जेल की सजा काट रहे हैं. पुलिस मामले की जांच कर रही है. जांच की लपेट में गांधी मैदान थाने के 2 पुलिसकर्मी घिर गए हैं. पुलिस उन के खिलाफ विभागीय काररवाई करने में जुट गई.

एसपी (सिटी) अंबरीश राहुल

पुलिस इस बात की भी जांच कर रही है कि होटल में सैक्स रैकेट चलाने में किनकिन लोगों ने पंकज कुमार के सिर पर हाथ रखा हुआ था ताकि उन के खिलाफ कानूनी काररवाई की जा सके.

कथा लिखे जाने तक जांच की काररवाई चल रही थी. पुलिस ने दयाल होटल सील कर दिया था ताकि जांच की काररवाई में कोई रुकावट न आए. इस के अलावा पुलिस सन्नी अपहरण केस की जांच में भी जुट गई है. ●

—कथा में कालगर्ल्स के नाम परिवर्तित हैं.

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

ऊधमसिंह नगर में

धंधा पुराना लेकिन तरीके नए

—प्रकाश पुंज

देशदुनिया की शायद ही कोई औरत हो, जो अपनी इच्छा से देहव्यापार को पेशा बनाना चाहती है. किसी भी स्त्री की देह वह बेशकीमती दौलत है, जिस का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, फिर भी इस की बोली लगाने वाले बाजारों की कमी नहीं है. ऐसा ही उत्तराखंड के काशीपुर में एक बाजार है, जो राजारजवाड़ों के जमाने से काफी विख्यात रहा है.

काशीपुर में पकड़ी गई देहजीवाएं

सदियों पहले उस दौर की बात है, जब देश में राजेरजवाड़ों का अपना साम्राज्य हुआ करता था. समूचे इलाके में उन की तूती बोलती थी. उन के मनोरंजन के 2 ही मुख्य साधन हुआ करते थे. एक, जंगली जानवरों का शिकार करना और दूसरा, सुंदर स्त्री की लुभावनी अदाओं के नाचगाने का आनंद उठाने के अलावा यौनाचार में लिप्त हो जाना.

ऐसा ही कुछ आज के उत्तराखंड स्थित ऊधमसिंह नगर के काशीपुर में था. तब काशीपुर के कई मोहल्ले तो इस के लिए दूरदूर तक विख्यात थे. उस मोहल्ले की मुख्य सड़क के दोनों ओर वेश्याएं रहती थीं.

देह व्यापार में लिप्त ऐसी औरतें अब वैश्या कहलाना पसंद नहीं करतीं, उन्हें सैक्स वर्कर कहा जाता है. यहां पर कई छोटेबड़े नगरों के लोग अपनी कामपिपासा शांत करने आते थे. बाद में ऐसी औरतों की संख्या बढ़ने पर उन के धंधे को जबरन बंद करवाना पड़ा.

सामाजिक दबाव और प्रशासन की सख्ती के आगे इन वेश्याओं को नगर छोड़ कर जाने पर मजबूर होना पड़ा था. उस के बाद उन्होंने मेरठ शहर के लिए पलायन कर लिया था. उन्हीं में कुछ

पुलिस टीम ने काशीपुर के ढकिया गुलाबो मोहल्ले के एक मकान से 4 महिलाओं को पकड़ा

वेश्याएं ऐसी भी थीं, जिन्होंने नगर के आसपास रह कर गुप्तरूप से चोरीछिपे धंधे में लिप्त रहीं. वही सिलसिला बदस्तूर आज भी जारी है.

पुलिस समयसमय पर उन के ठिकानों पर छापामारी करती रहती है. उन्हें हिरासत में ले कर नारी सुधार गृह या जेल भेज दिया जाता है.

बात 30 जुलाई की है. पुलिस को जानकारी मिली थी कि काशीपुर के ढकिया गुलाबो मोहल्ले का एक दोमंजिला मकान काफी समय से देह व्यापार का ठिकाना बना हुआ है. इस जानकारी को ध्यान में रखते हुए सीओ अक्षय प्रह्लाद कोंडे के निर्देश पर एक पुलिस टीम गठित की गई.

टीम में महिला इंसपेक्टर धना देवी, कोतवाली एसएसआई देवेंद्र गौरव, टांडा चौकी इंचार्ज जितेंद्र कुमार, कांस्टेबल भूपेंद्र जीना, देवानंद, कांस्टेबल गिरीश कांडपाल, दीपक, मुकेश कुमार शामिल थे.

पुलिस टीम ने काफी सावधानी से छापेमारी को अंजाम दिया. सभी पुलिसकर्मी सादे कपड़ों में थे. छापेमारी में उन्हें बताए गए ठिकाने से 4 महिलाएं और 2 पुरुषों को धर दबोचने में सफलता मिली.

वे मकान के अलगअलग कमरों में आपत्तिजनक स्थिति में पाए गए थे. देह व्यापार मामले में आरोपी को रंगेहाथों पकड़ना जरूरी होता है. वरना वे संदेह के आधार पर आसानी से छूट जाते हैं. इस छापेमारी में देहव्यापार की सरगना फरार हो गई. पकड़े गए आरोपियों को पूछताछ के बाद जेल भेज दिया गया.

वैसे काशीपुर में इस तरह की छापेमारी पहली बार नहीं हुई थी. पहले भी कई बार इलाके में देह व्यापार के ठिकानों पर छापेमारी हो चुकी थी. देह के गंदे धंधे में लगे लोग हमेशा अड्डा बदलते रहते हैं.

देह व्यापार के धंधे में आधुनिकता और बदलाव कई रूपों में सामने आया है, जिस का एक मामला हल्द्वानी पुलिस के सामने 3 अगस्त को आया. पुलिस को सूचना मिली कि हाइडिल गेट स्थित

हल्द्वानी सीओ शांतनु पराशर ने एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट की टीम को साथ ले कर स्पा सेंटर पर छापा मारा. छापेमारी के दौरान एक युवक को युवती के साथ आपत्तिजनक स्थिति में पकड़ा गया.

स्पा सेंटर में काफी समय से देह व्यापार का खुला खेल चल रहा है.

इस सूचना के आधार पर हल्द्वानी सीओ शांतनु पराशर ने एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट की टीम को साथ ले कर स्पा सेंटर पर छापा मारा. छापेमारी के दौरान एक युवक को युवती के साथ आपत्तिजनक स्थिति में पकड़ा गया.

स्पा सेंटर में पुलिस की रेड पड़ते ही हलचल मच गई. सेंटर की संचालिका दिल्ली निवासी सुमन और स्वाति वर्मा फरार हो गईं. जबकि सेंटर के मैनेजर पश्चिम बंगाल के वरुणपारा वारूईपुरा, निवासी नादिया पकड़े गए.

छापेमारी के दौरान स्पा सेंटर से देह व्यापार से संबंधित कई आपत्तिजनक वस्तुएं भी बरामद हुईं. यहां तक कि उस के बेसमेंट से 9 लड़कियां निकाली गईं.

उन में 2 उत्तर प्रदेश, एक मध्य प्रदेश, एक मणिपुर, 2 पश्चिम बंगाल और 3 हरियाणा की थीं. पकड़ा गया युवक आशीष उनियाल काठगोदाम का रहने वाला निकला. वह एक निजी कंपनी में काम करता था.

स्पा सेंटर में सुनियोजित तरीके से देह व्यापार का धंधा चलाया जा रहा था. धंधेबाजों ने बड़े पैमाने पर मसाज की आड़ में यौनाचार के सारे इंतजाम कर रखे थे.

वहां से पकड़ी गई सभी युवतियों के रहने की व्यवस्था सेंटर के बेसमेंट में की गई थी. उन के खानेपीने की पूरी सुविधाएं वहीं की गई थीं.

ग्राहक को स्पा सेंटर आने से पहले ही वाट्सऐप पर युवती की फोटो दिखा कर उस का सौदा कर लिया जाता था. ग्राहक को युवतियों के टाइम के हिसाब से अपौइंटमेंट तय किया जाता था.

स्पा सेंटर आते ही ग्राहक को रिसैप्शन पर बाकायदा बिल चुकाना होता था, जो स्पा से संबंधित होते थे. उस के बाद उसे कमरे में बने केबिन में जाने की इजाजत मिलती थी.

अपने फिक्स टाइम पर ग्राहक स्पा सेंटर पहुंच जाता था. उन्हें स्पीकर पर आवाज लगाई जाती थी. उस के साथ फिक्स युवती को इस की सूचना पहले होती थी और कुछ समय में ही अपने ग्राहक के पास चली जाती थी. एक

किसान आंदोलन का भी

3 साल पहले यानी 2018 तक काशीपुर की अनाज मंडी भी इस धंधे के लिए काफी बदनाम थी. आज भी स्थिति कमोबेश वैसी ही बनी हुई है. हालांकि कोरोना काल की वजह से उस में थोड़े समय के लिए मंदी जरूर आई, फिर पहले जैसी स्थिति बन गई.

मंडी देह का फूलनेफलने की भी वजह है. फसल ले कर आने वाले किसानों के अनाज की साफसफाई के लिए आढ़तियों की दुकानों पर औरतें काम करती हैं. उन की संख्या वे 2 ढाई सौ के करीब है.

फसल के ढेर पर झाड़ू लगाने वाली अधिकतर औरतें बिजनौर जिले की रहने वाली हैं, लेकिन काशीपुर में ही किराए का कमरा ले कर रहती हैं.

वे औरतें सुबहसुबह सजसंवर कर मंडी पहुंच जाती हैं. अपनी खूबसूरती का जलवा दिखा कर किसानों और व्यापारियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं. वह मजदूरों को भी अपने जाल में आसानी से फांस लेती हैं. यह सब उन की आमदनी का एक अतिरिक्त जरिया होता है.

जितने पैसे वे मंडी में अनाजों के ढेर पर झाड़ू लगा कर नहीं कमा पातीं, उस से कहीं ज्यादा पैसा उन्हें देह व्यापार के धंधे में मिल जाता है.

हालांकि वह सब उन को ठीक भी नहीं लगता. उन्हें न केवल परिवार और समाज की नजरों से छिप कर रहना पड़ता है, बल्कि पुलिसप्रशासन से बच कर भी रहना जरूरी होता है. ऊपर से बदनामी का भी डर लगा रहता है.

उन की कोशिश रहती कि वे किसी के साथ आपत्तिजनक स्थिति में नहीं पकड़ी जाएं. जबकि हमेशा उन के मन के अनुकूल स्थिति बनी रहना संभव नहीं होती. नतीजा पुलिस की छापेमारी में कुछ पकड़ी जाती हैं तो कुछ अड्डे से भागने में सफल हो जाती हैं.

युवती को एक दिन में 3 सर्विस देनी होती थी.

सेंटर में आने वाले ग्राहकों का कोई आंकड़ा मौजूद नहीं था. जबकि उन की बिलिंग होती थी. उसे किसी रजिस्टर में दर्ज नहीं किया जाता था. फिर भी पुलिस ने जांच में पता लगाया कि सेंटर को प्रतिदिन 50 हजार की कमाई होती थी.

स्पा सेंटर से बरामद सभी युवतियों ने स्वीकार किया कि वे किसी न किसी मजबूरी की वजह से मसाज की आड़ में देह बेचने का काम करती हैं.

इसी के साथ उन्होंने सेंटर के मालिक पर आरोप भी लगाया कि उन्हें बहुत कम पैसा मिलने के कारण मजबूरी के चलते बेसमेंट में रहना होता है, जहां काफी मुश्किल होती है.

पुलिस पूछताछ के बाद सीओ के निर्देश पर सभी युवतियों को मुखानी स्थित वन स्टौप सेंटर में भेज दिया गया. उसी दौरान 7 अगस्त, 2021 को पुलिस को पता चला कि स्पा सेंटर की आड़ में कई जगहों पर देह व्यापार चल रहा है.

इस सूचना के आधार पर एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट प्रभारी ने सीओ अमित कुमार के साथ मीटिंग कर इस अपराध

पड़ा धंधे पर असर

देह व्यापार के धंधे में लगे रहने की उन की मजबूरी थी. एक अड्डा बंद होता है तो उन के द्वारा तुरंत नया ठिकाना बना लिया जाता है. वैसे अधिकतर औरतों के पति दिहाड़ी मजदूरी करने वाले या फिर रिक्शा चलाने वाले हैं. वह शाम तक जितना कमाते हैं, उस का बड़ा हिस्सा शराब में उड़ा देते हैं.

शाम को घर पहुंचने पर घर का खर्च बीवी से चलाने की उम्मीद करते हैं. घर चलाने के खर्च से ले कर कमरे का किराया, कपड़ेलत्ते, बच्चों की परवरिश आदि तक उन्हीं के कंधों पर रहती है.

उस के बावजूद शराबी पतियों की मारपीट भी झेलनी पड़ती है. यह उन की दिनचर्या में शामिल हो चुका है. इस तरह देह के धंधे को अपनाने की मजबूरी बन गई है.

किसान कानून में बदलाव आने का असर उन के धंधे पर भी हुआ. कारण इस कानून के लागू होने पर किसान अपनी फसल कहीं भी बेचने के लिए आजाद हो गए. इस वजह से उन का काशीपुर की मंडी में आनाजाना बहुत कम हो गया. इस का असर उन औरतों के धंधे पर भी हुआ.

अनाज की मंडियों का काम ढीला होने से पहले के मुकाबले वहां औरतें कम आने लगी हैं. मजबूरी में उन्होंने नया तरीका निकाला और अपने घरों में ही धंधा करना शुरू कर दिया. जबकि वह जानती हैं कि यह धंधा किसी भी सूरत में महफूज नहीं है. ○

को जड़ से मिटाने का निर्णय लिया. इस की जानकारी एसएसपी दलीप सिंह को दे कर अनुमति मांगी गई. अनुमति मिलते ही अमित कुमार ने ठोस कदम उठाए.

उस योजना को अंजाम देने के लिए पुलिस ने नगर में चल रहे स्पा सेंटरों पर मुखबिरों का जाल बिछा दिया. पुलिस को जहां से भी जानकारी मिलती, वहां तुरंत छापेमारी की जाने लगी.

इस सिलसिले में मैट्रोपोलिस सिटी बिग बाजार स्थित सेवेन स्काई स्पा सेंटर में कुछ संदिग्ध युवकयुवतियां दबोचे गए. एक कमरे के केबिन से 2 युवकों को 3 युवतियों के साथ, जबकि दूसरे कमरे में बने केबिनों में 2-2 युवकयुवतियां मसाज में तल्लीन पकड़े जाने पर दबोचा गया. सभी अर्धनग्नावस्था में थे.

सेंटर की गहन छानबीन में प्रयोग किए गए और नए महंगे कंडोम बरामद हुए. रिसैप्शन काउंटर से भी कंडोम बरामद किए गए.

कस्टमर एंट्री रजिस्टर से पुलिस को

नौकरी के बहाने बेच दी जाती हैं युवतियां

16 जुलाई, 2021 को एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट प्रभारी बसंती आर्या को सूचना मिली कि रुद्रपुर ट्रांजिट कैंप से कुछ लोग कार यूके18जे4364 से एक महिला को बेचने के लिए गदरपुर की ओर ले जाया जा रहे हैं.

यह जानकारी मिलते ही बसंती आर्या ने गदरपुर गाबा चौक पर वाहनों की चैकिंग शुरू करवा दी. जैसे ही मुखबिर द्वारा बताए गए नंबर वाले कार को चैकिंग के लिए रोकने का इशारा किया गया, उस के ड्राइवर ने कार की स्पीड बढ़ा दी.

उस ने यूनिट प्रभारी को टक्कर मारने की कोशिश की. यूनिट प्रभारी ने फुरती से अपने को संभाला, लेकिन इस के बावजूद उन के हाथ और पैर में चोट लग गई.

अपनी चोट की परवाह किए बगैर उन्होंने वायरलेस पर सूचना प्रसारित कर टीम के साथ कार का पीछा किया. कुछ दूर जाते ही कार जाम में फंस गई. इस के बाद पुलिस ने उसे घेराबंदी कर कार की तलाशी ली.

कार में बैठी महिला को बाहर निकाला. बाहर निकलते ही उस ने अपना मुंह दोनों हाथों से छिपा लिया. एक पुलिसकर्मी ने उस के चेहरे से उस का हाथ हटाया. वह बहुत डरी हुई थी.

उसी कार से पुलिस ने 2 लोगों को भी बाहर निकाला. उन्होंने अपना नाम सोनू सिंह और भूपेंद्र सिंह बताया. इसी बीच एक पुलिसकर्मी ने बताया कि मुखबिर द्वारा इन तीनों की ही तसवीर वाट्सऐप की गई थी.

पकड़े गए दोनों युवकों ने बताया

ग्राहकों के एंट्री की तारीख और समय का पता चला. सेंटर की संचालिका सोनू थी. उस ने पुलिस को पूछताछ में बताया कि स्पा सेंटर का मालिक हरमिंदर सिंह हैं, उन के निर्देश पर ही सेंटर में सब कुछ होता रहा है. सेंटर से बरामद 5 युवतियों ने स्वीकार किया कि उन्हें एक ग्राहक के साथ हमबिस्तर होने पर 500 रुपए मिलते थे.

इस मामले को पंतनगर थाने में दर्ज किया गया. गिरफ्तार युवकयुवतियों और सेंटर के मालिक हरमिंदर सिंह के खिलाफ रिपोर्ट लिख ली गई. बिलासपुर जिला रामपुर निवासी हरमिंदर सिंह फरार था. पुलिस उस की तलाश में लगा दी गई थी. इसी तरह ऊधमसिंह नगर में चल रहे स्पा सेंटर पर भी 13 अगस्त को छापेमारी की गई.

उस के बाद वहां बसंती आर्या ने सभी स्पा सेंटरों व होटल मालिकों को आवश्यक दिशानिर्देश जारी किए.

उन से कहा गया कि सभी ठहरने वाले ग्राहकों के आईडी की फोटो कौपी रखें और उन के नाम व पते रिसैप्शन सेंटर पर जरूर दर्ज करें. साथ ही होटल में सभी जगह पर सीसीटीवी कैमरे चालू हालत में रखने अनिवार्य कर दिए गए.

कहते हैं, जहां चाह वहां राह, तो

कि लक्ष्मी ने इस युवती को एक महिला के हाथों 50 हजार रुपए में बेचा है. उसे नौकरी दिलाने का झांसा दे कर लाया गया था. उसे महिला के पास पहुंचाने की जिम्मेदारी दी गई थी, किंतु दुर्भाग्य से पकड़ा गया.

इस के साथ ही पुलिस को यह भी मालूम हुआ कि युवती को गदरपुर छोड़ना था, जिस की जिम्मेदारी लक्ष्मी की थी. इस काम के लिए लक्ष्मी एक गिरोह चला रही थी.

उस के बाद युवती को देह व्यापार के लिए हरियाणा ले जाने की योजना थी. पुलिस को सही समय पर जानकारी मिलने से युवती का जीवन नारकीय होने से बच गया. ○

एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट द्वारा गिरफ्तार किए गए सोनू सिंह और भूपेंद्र सिंह

इस धंधे को स्मार्टफोन से नई राह मिल गई है. देह व्यापार में लिप्त काशीपुर की सैक्स वर्करों ने स्मार्टफोन को ग्राहक तलाशने का जरिया बना लिया है. पुरुष भी धंधेबाज औरतों की तलाश आसानी से करने लगे हैं.

देह व्यापार में लिप्त महिलाएं मोबाइल पर चंद अश्लील बातें कर अपने ग्राहकों को फंसा लेती हैं. पैसे का लेनदेन भी उसी के जरिए हो जाता है.

वाट्सऐप और वीडियो कालिंग तो इस धंधे के लिए वरदान साबित हो रहा है. इस पर वे अपनी अश्लील फोटो या वीडियो भेज कर उन को लुभा लेती हैं.

फिर वह ग्राहक की सुविधानुसार कुछ समय के लिए किराए पर ले रखे कमरे पर ही उसे बुला लेती हैं या उस के बताए ठिकाने पर पहुंच जाती हैं.

जो महिलाएं कल तक मंडी से जुड़ी हुई थीं, वे अब इसी तरीके से अपना धंधा चला रही हैं, यही उन की रोजीरोटी का साधन बन चुका है.

जांच में यह भी पता चला कि काशीपुर में कुछ ऐसी बस्तियां हैं, जहां पर कई औरतें अपना धंधा चला कर मोटी कमाई कर रही हैं. उन में कुछ औरतें अधेड़ उम्र की हैं, वे नई लड़कियों के लिए ग्राहक ढूंढने के साथसाथ उन की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी निभाती हैं. ऐसी औरतें ही किराए का मकान या कमरा ले कर रखती हैं. उन में वह खुद रहती हैं.

किसी ग्राहक की मांग आते ही वह उन से सौदा तय कर आगे के काम में लग जाती हैं. उन्हें थोड़े समय के लिए अपना घर उपलब्ध करवा देती हैं.

ग्राहक को 15 मिनट से ले कर

देहव्यापार में लिप्त महिलाओं की गिरफ्तारी पर प्रेस कौन्फ्रेंस करते एसएसपी(ऊधमसिंह नगर)

आधे घंटे तक का समय मिलता है. इसी समय के लिए 300 से 500 रुपए वसूले जाते हैं. इस आय में आधा हिस्सा लड़की को मिलता है. कभीकभी लड़की को ज्यादा भी मिलता है.

यह ग्राहक की संतुष्टि और उस से मिलने वाले अतिरिक्त बख्शीश पर निर्भर करता है. इस गिरोह में घरेलू किस्म की औरतें, स्टूडेंट या पति से प्रताड़ित या उपेक्षित सफेदपोश संभ्रांत किस्म की महिलाएं शामिल होती हैं, जिन के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता कि उस पर भी गंदे धंधे के दाग लगे हुए हैं. उन की पब्लिसिटी पोर्न वेबसाइटों के जरिए भी होती रहती है.

इस तरह के देह व्यापार का धंधा काशीपुर ही नहीं, बल्कि पूरे उत्तराखंड में अपने पैर पसारता जा रहा है. बताते हैं कि यहां लड़कियां तस्करी के माध्यम से उपलब्ध करवाई जाती हैं, जिन में अधिकतर मजबूर महिलाएं और युवतियां ही होती हैं.

इसी साल जुलाई माह की भी ऐसी एक घटना 21 तारीख को रुद्रपुर में सामने आई. एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट के प्रभारी को ट्रांजिट कैंप गंगापुर रोड के पास मोदी मैदान में खड़ी एक संदिग्ध कार के बारे में सूचना मिली. मुखबिर ने एक कार यूके06एए3844 में कुछ पुरुष और महिलाओं के द्वारा अश्लील हरकतें करने की जानकारी दी.

इस सूचना पर काररवाई करते हुए इंसपेक्टर बसंती आर्या अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचीं. अपनी टीम के साथ चारों तरफ से कार को घेरते हुए उस कार से 3 लोगों को पकड़ा गया. उन में एक आदमी और 2 औरतें थीं.

जब वे पकड़े गए, तब उन की हरकतें बेहद आपत्तिजनक थीं. तीनों को अपनी कस्टडी में ले कर पूछताछ के लिए थाने लाया गया.

आदमी की पहचान उत्तर प्रदेश में बरेली जिले के बहेड़ी थाना के रहने वाले 29 वर्षीय भगवान दास उर्फ अर्जुन के रूप में हुई. महिला की पहचान 32 वर्षीया भारती के रूप में हुई.

उस ने बताया कि वह उत्तर प्रदेश में रामपुर जिले के अंतर्गत दिनकरी की रहने वाली है, लेकिन अब वह ऊधमसिंह नगर जिला में सिडकुल ढाल ट्रांजिट कैंप में रहती है.

इसी तरह से दूसरी 21 वर्षीया युवती ने अपना नाम पूजा यादव बताया. उस ने कहा कि उस का पति उत्तर प्रदेश में

बाराबंकी जिले के गांव सनसडा में रहता है. तीनों से गहन पूछताछ के बाद उन की तलाशी ली गई. तलाशी में उन के पास से 2 स्मार्टफोन बरामद हुए. मोबाइलों में तमाम अश्लील फोटो, वीडियो के साथ ही अनेक अश्लील मैसेज भी भरे हुए थे.

उन्हीं मैसेज से मालूम हुआ कि ये दोनों महिलाएं एक रात के 1000 से 1500 रुपए लेकर ग्राहकों की रातें रंगीन करती थीं.

उन के साथ पकड़ा गया भगवान दास का काम ग्राहक तलाशना होता था. वह उन्हें ग्राहकों तक पहुंचाने का काम करता था. बदले में 500 रुपए वसूलता था. दास ने बताया कि वह ग्राहक की जानकारी होटलों में ठहरने वालों से जुटाता था.

एसपी
प्रमोद कुमार

इस के लिए अपने संपर्क में आई युवतियों को किसी एकांत जगह पर कार में बैठा कर रखता था और फिर वहीं से ग्राहकों के फोन का इंतजार करता था. जैसे ही किसी ग्राहक का फोन आता वह 10 से 15 मिनट में उस के बताए स्थान पर लड़की को पहुंचा देता था.

तीनों 21 जुलाई को ग्राहक का फोन आने का ही इंतजार कर रहे थे. उन की कोई सूचना नहीं मिल पाने के कारण वे आपस में ही हंसीमजाक करते हुए टाइमपास कर रहे थे. ऐसा करते हुए वे बीचबीच में अश्लील हरकतें भी करने लगे थे.

उस दिन भगवान दास ने दोनों को 1500-1500 रुपयों में तय किया था. लेकिन जब काफी समय गुजर जाने के बाद भी उसे कोई ग्राहक नहीं आया था. पुलिस मुखबिर की निगाह उन पर गई और उन्होंने पुलिस को इस की सूचना दे दी.

पूछताछ में भगवान दास ने कई मोबाइल नंबर दिए, जो देहव्यापार करने वाली महिलाओं के थे.

वे अपनी बुकिंग एक दिन पहले करवा लेती थीं. बुकिंग के आधार पर ही उन्हें होटल या किसी निजी घर पर ले जाया जाता था. उन्हें ले जाने वाला ही उन का सौदा पक्का कर देता था. औनलाइन पेमेंट आने के बाद ही बताए जगह पर पहुंचती थीं.

एंटी ह्यूमन
ट्रैफिकिंग
यूनिट प्रभारी
बसंती आर्या

इस मामले को थाना ट्रांजिट कैंप में दर्ज किया गया. पकड़े गए व्यक्तियों पर सार्वजनिक स्थान पर अश्लील हरकतें कर अनैतिक देह व्यापार करने के संबंध में रिपोर्ट दर्ज की गई.

उन पर आईपीसी की धारा 294/34 लगाई गईं. इसी के साथ उन्हें अनैतिक देह व्यापार निवारण अधिनियम की धारा 5/7/8 के तहत काररवाई की गई. ●

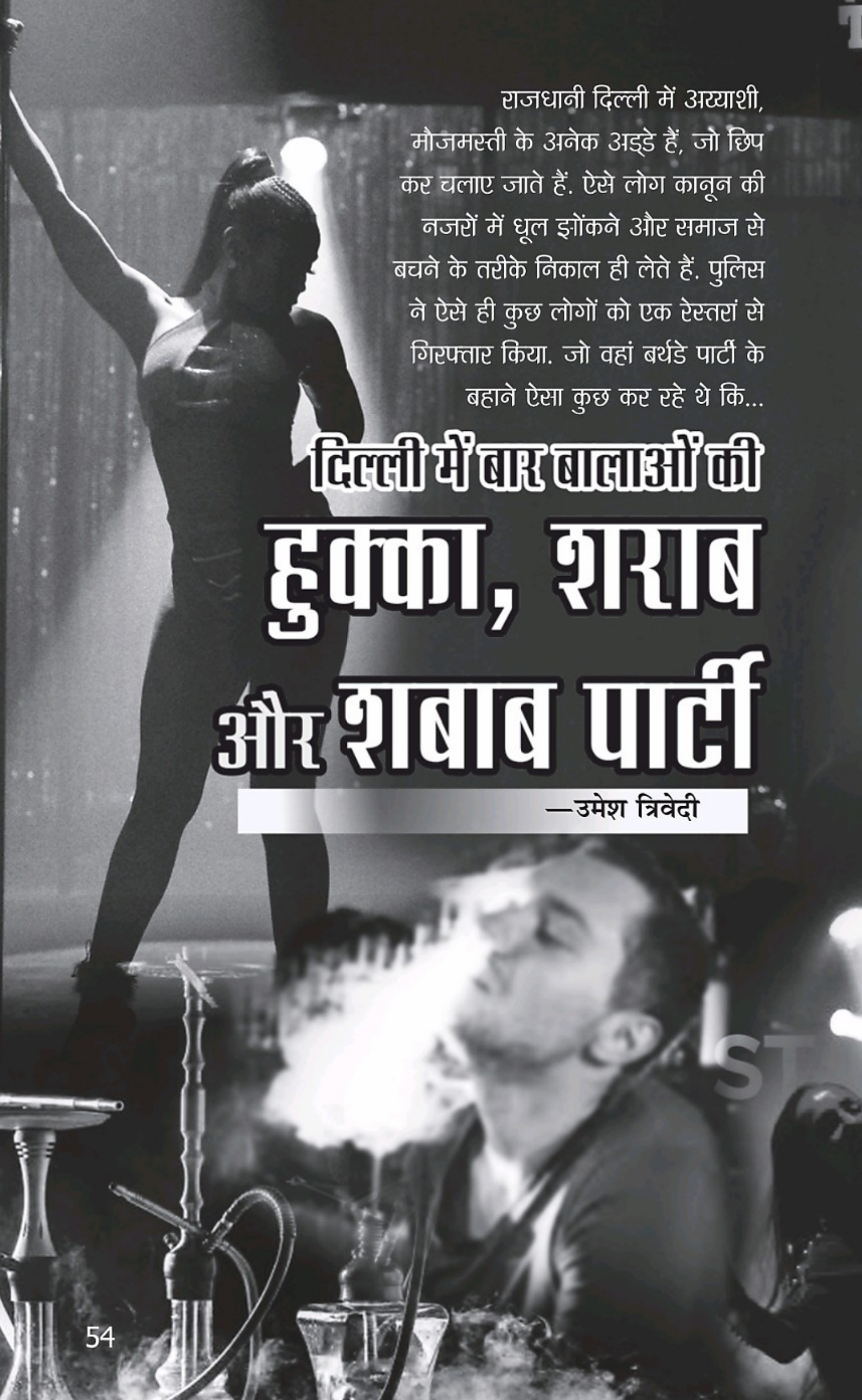

राजधानी दिल्ली में अय्याशी, मौजमस्ती के अनेक अड्डे हैं, जो छिप कर चलाए जाते हैं. ऐसे लोग कानून की नजरों में धूल झोंकने और समाज से बचने के तरीके निकाल ही लेते हैं. पुलिस ने ऐसे ही कुछ लोगों को एक रेस्तरां से गिरफ्तार किया. जो वहां बर्थडे पार्टी के बहाने ऐसा कुछ कर रहे थे कि...

दिल्ली में बार बालाओं की हुक्का, शराब और शबाब पार्टी

—उमेश त्रिवेदी

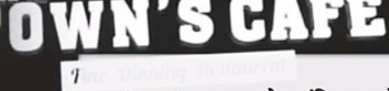

अगस्त माह के अंतिम हफ्ते में एक दिन दिल्ली के राजगढ़ एक्सटेंशन के रहने वाले मनु अग्निहोत्री के मोबाइल फोन की घंटी बजी. फोन रश्मि का था. उस ने अपनी खनकती आवाज में पूछा, ‘‘सर जी, काम कब से शुरू करवा रहे हो?’’

‘‘उम्मीद है अगले हफ्ते से... और सुन तुम्हें कितनी बार कहा है इस नंबर पर फोन मत किया कर.’’ मनु डपटते हुए बोला.

‘‘क्या करूं, मजबूरी में करना पड़ा. कोई काम नहीं है. कर्ज भी बहुत हो गया है.’’ रश्मि बोली.

‘‘ठीक है, ठीक है. तुम्हारे संपर्क में कितनी और लड़कियां हैं?’’ मनु ने पूछा.

‘‘10-12 तो हो ही जाएंगी.’’

‘‘सब को तैयार कर लो. अगले हफ्ते से रेस्टोरेंट और बार खुलने वाले हैं. मैं ने पता कर लिया है.’’ मनु बोला.

‘‘वही पहले वाला काम करना है?’’ रश्मि ने पूछा.

‘‘हांहां, वही. डांसिंग का है, साथ में थोड़ी शराब भी परोस देना. नशेड़ियों का दिल बहला देना.’’

‘‘उस से अधिक कुछ और नहीं न! कितने पैसे मिल जाएंगे?’’ रश्मि तपाक से पूछ बैठी.

‘‘तुम सवाल बहुत करती हो. अभी तो मैं इंतजाम में लगा हुआ हूं.’’ मनु ने समझाया.

‘‘फिर भी कुछ तो बताओ, तभी तो लड़कियों को तैयार रखूंगी.’’

‘‘सभी फ्रैश होनी चाहिए. एकदम से झकास. लेटेस्ट मौडल की. पढ़ीलिखी दिखने वाली. समझ गई न.’’ मनु बोला.

‘‘मेरे पास अभी एक से बढ़ कर एक मौडल हैं, उन के सामने हीरोइनें और प्रोफैशनल मौडल फेल हो जाएंगी.’’ रश्मि चहकती हुई बोली.

‘‘चल, चल. अब फोन बंद कर, लगता है किसी क्लाइंट का फोन आ रहा है. बाद में बात करता हूं.’’ यह कहते हुए मनु ने आने वाले काल का फोन रिसीव कर लिया.

‘‘हैलो कौन?... अरे तुम. मैं तुम्हारे

फोन का ही इंतजार कर रहा था. तुम ने नया नंबर ले लिया क्या? बताओ कुछ इंतजाम हुआ.'' मनु ने जिज्ञासा से पूछा.

''हां, हो गया है, लेकिन सौरी यार पहाड़गंज या कनाट प्लेस में नहीं हो पाया.'' फोन करने वाला मनु का खास दोस्त था. उस के भरोसे मनु के कई कामधंधे चलते थे. वह जिस काम में लगता था, उसे पूरा कर के ही दम लेता था. उसे मनु ने एक ऐसा रेस्टोरेंट रेंट पर लेने का काम सौंपा था, जहां वह पार्टियां आर्गनाइज कर सके. उसी बारे में उस के दोस्त ने फोन किया था.

मनु ने उस से उत्सुकता से पूछा, ''तो कहां इंतजाम किया है?''

''शाहदरा के पास कृष्णा नगर में. अच्छा रेस्टोरेंट है... और हम लोगों के काम के हिसाब से सेफ भी.'' मनु को बताया.

''नाम क्या है? लोकेशन कैसी है? ...आसपास का माहौल किस तरह का है? ''द टाउंस कैफे नाम का रेस्टोरेंट मंदिर मार्ग पर लाल क्वार्टर में स्थित है. वहीं पर फर्स्ट फ्लोर पर अपना काम चलेगा. वहां सब कुछ सही है. लेकिन एक ही समस्या है कि उस के पास अभी पूरे कागज नहीं है.''

सूचना के अनुसार जयदीप, अरुण भाटी रेस्टोरेंट पहुंच गए. उन्होंने देखा कि रेस्टारेंट के फर्स्ट फ्लोर पर कुछ लड़केलड़कियां एक साथ बैठे थे. एक बार काउंटर लगा था. कुछ लोग शराब पी रहे थे. टेबलों पर हुक्के भी रखे हुए थे और लोग उस की पाईप से कश लगा रहे थे.

''तो कैसे होगा?'' मनु ने पूछा.

''अरे वह सब तो उस के मालिक का मसला है, हमें क्या? हमें रेंट देना है.'' दोस्त के कहने पर मनु ने आगे के अपने इंतजाम के बारे में जानकारी दी. बातोंबातों में लड़कियों के बारे में भी थोड़ी बातें बता दीं.

''तू तो इस का बड़ा खिलाड़ी है. तो फिर बुकिंग शुरू कर दूं?'' कहते हुए मनु का दोस्त हंसने लगा.

मनु के धंधे में जितने भी लोग जुड़े हुए थे, उन से मनु के दोस्त की तरह ही संबंध रहते थे. मुन्ना भी उस के खास दोस्तों में से एक था.

JOHNNIE WALKER
RED LABEL
ROCKFORD
1959
MAGIC MOMENTS
SEAGRAM'S
ROYAL STAG
CHIVAS

द टाउंस कैफे रेस्टोरेंट में
छापे के दौरान बरामद शराब की बोतलें और हुक्के

हुक्के का धुआं उड़ाया, जाम छलकाई

पुलिस की सख्ती के बावजूद पश्चिमी दिल्ली इलाके के बार और रेस्तरां अवैध रूप से लोगों को हुक्का परोस रहे हैं. ऐसे ही हुक्का बारों के खिलाफ पश्चिमी दिल्ली के पंजाबी बाग व राजौरी गार्डन थाना पुलिस ने अपनेअपने इलाके में अभियान चलाया.

इस में अवैध रूप से हुक्का परोस रहे रेस्तरां में छापेमारी कर वहां से 10 लोगों को गिरफ्तार किया. पुलिस ने 15 हुक्के भी बरामद किए. राजौरी गार्डन थाना पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ 3 अलगअलग मामले दर्ज किए हैं.

डीसीपी उर्विजा गोयल ने बताया कि पुलिस को बार और रेस्तरां में प्रतिबंध के बावजूद ग्राहकों को हुक्का परोसे जाने की शिकायतें मिल रही थीं. इस के बाद दोनों पुलिस थानों को मामले की जांच के निर्देश दिए गए थे.

इस पर दोनों थानों के एसएचओ के नेतृत्व में टीम बनाई गई थी. उस टीम ने एक साथ राजौरी गार्डन थाना इलाके के मिस्टिक रेस्तरां, हार्ट बीट रेस्तरां व कृष्णा पान भंडार में छापेमारी की, जहां उन्हें अवैध रूप से हुक्के परोसे हुए पाए.

इसी तरह पंजाबी बाग क्लब रोड पर ट्राय लौज एंड बार में पुलिस ने छापेमारी की तो वहां पर भी हुक्का परोसा जा रहा था. इस के बाद पुलिस ने काररवाई करते हुए मैनेजर के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया. इस दौरान वहां से अनेक हुक्के भी बरामद हुए. इस के बाद पुलिस ने 2 अन्य जगहों पर छामेपारी कर हुक्के बरामद किए. ○

एक दिन मुन्ना दिल्ली के कनाट प्लेस में स्थित एक छोटे से रेस्टोरेंट में अपने दोस्त अमित के साथ डिनर कर रहा था. अमित केरल का रहने वाला था. वह किसी काम से दिल्ली आया था. उसी दौरान अमित ने उस से कहा, ''यार, मुझे मिनिस्ट्री से एक प्रोजैक्ट पास कराना है.''

मुन्ना ने उसे आश्वासन दिया था, ''तू चिंता क्यों कर रहा है, हो जाएगा. क्योंकि मिनिस्ट्री में मेरी अच्छी जानपहचान है. मैं तेरा काम करा दूंगा.'' मुन्ना ने भरोसा दिया.

''जितनी जल्द हो सके, करा दे. वैसे एक बात बताऊं, जिस अधिकारी के हाथ में मेरा काम है, वह अय्याश किस्म का है. इसलिए उस के लिए शराब के साथसाथ कुछ और शबाब का इंतजाम भी करना होगा.''

''अभी तेरे सामने बात करता हूं.'' यह कहते हुए मुन्ना ने बाएं हाथ से टेबल पर रखे अपने मोबाइल से एक नंबर पर काल लगाई. वह नंबर मनु का था.

काल रिसीव होने के बाद तुरंत

स्पीकर औन कर दिया. बोला, ''हैलो मुन्ना भाई, कैसे हो ?''

उधर से आवाज आई, ''अरे भाई तुम्हें मैं ने कितनी बार समझाया है स्पीकर औन कर बातें मत किया करो.''

''सौरी यार, दरअसल खाना खा रहा था.'' इसी के साथ मुन्ना ने स्पीकर बंद किया और बाएं हाथ से ही फोन को कान से लगा लिया.

''अरे मैं पूछ रहा था कि तुम्हारा बार में पार्टी वाला काम शुरू हुआ या नहीं ?''

''बस, एक दिन और इंतजार कर लो.''

''एक क्लाइंट से एडवांस ले लूं. हम 3 लोग रहेंगे. बाकी सब ठीक है न.'' मुन्ना बोला.

''उसे रेडी कर ले. बाकी बाद में बात करता हूं.'' मनु ने कहा.

रेस्टोरेंट संचालक मनु अग्निहोत्री

मनु की तरफ से ग्रीन सिग्नल मिलने के बाद मुन्ना अमित को देख कर बोला, ''लीजिए, मैं ने आधे मिनट में इंतजाम कर दिया, और बोलो.''

सब कुछ सही चलने लगा. उस ने

अमृतसर में मसाज के बहाने जिस्मफरोशी

अमृतसर में मसाज के अत्याधुनिक स्पा सेंटर की भरमार है. आए दिन उन में जिस्मफरोशी की चौंकाने वाली खबरें आती रहती हैं. ऐसा ही एक ताजा मामला 4 सितंबर, 2021 को सामने आया. सिविललाइंस थाने की पुलिस ने शहर के लारेंस रोड पर स्पा सेंटर की आड़ में चल रहे जिस्मफिरोशी के अड्डे का परदाफाश कर उस के मैनेजर आजाद अली को गिरफ्तार कर लिया.

कहने को तो वहां जाने वाले ग्राहक अपनी थकान मिटाने और रिफ्रेश होने के लिए जाते हैं, लेकिन उन में से बहुत से ऐसे भी होते हैं देह की थकान मिटाने के साथसाथ देह सुख की भी चाहत रखते हैं.

उन की इच्छा होती है कि उन के देह की मालिश नर्म हाथों से की जाए. मसाजर न केवल दिखने में सुंदर और ग्लैमर से भरी हो, बल्कि उन में एक खास तरह की सेक्स अपील की झलक भी दिखे.

यही कारण है कि कई स्पा सेंटर मसाज की आड़ में देशीविदेशी लड़कियों से मसाज की सुविधाएं उपलब्ध करते हैं.

बदले में मसाजर को मोटी रकम मिलती है. इस तरह से मसाज की आड़ में सैक्स का सौदा भी तय हो जाता है.

और फिर यौनाकर्षण के साथसाथ यौनाचार का तालमेल बड़ी आसानी से बन जाता है, जिसे सरलसहज भाषा में जिस्मफरोशी का अनैतिक धंधा कहा जा सकता है.

यह मुनाफे का धंधा बन चुका है.

बार में कुछ लड़कियों को देह दिखाने वाली ड्रैस पहना कर शराब परोसने के लिए लगा दिया गया था, जबकि कुछ लड़कियां म्यूजिक की धुन पर डांस करती थीं.

बर्थडे पार्टी के नाम पर ग्राहकों को हुक्का, शराब और डांस के नाम पर बुलाना शुरू कर दिया था. बार में कुछ लड़कियों को देह दिखाने वाली ड्रैस पहना कर शराब परोसने के लिए लगा दिया गया था, जबकि कुछ लड़कियां म्यूजिक की धुन पर डांस करती थीं.

इस के लिए बाकायदा डांसिंग फ्लोर बनाई थी. चारों तरफ से डांसर पर रंगीन रोशनियां बरस रही थीं, उस में लड़कियों के उभार, सुडौल जांघें, चिकनी कमर, अधखुली पीठ,

---

गिरफ्तार मैनेजर ने पूछताछ में पुलिस को बताया कि वह एक ग्राहक से मसाज के अलावा 2 से 3 हजार रुपए चार्ज करता. उस ने पुलिस के मुखबिर से भी 3 हजार रुपए लिए थे, जिस से वह रंगेहाथों पकड़ा गया था.

उस के बाद स्पा सेंटर के मालिक राहुल कुमार चौधरी और उस के मैनेजर आजाद अली के खिलाफ केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी थी. संयोग से कोई भी मसाजर लड़की पकड़ में नहीं आ पाई थी.

थाना सिविललाइंस के इंचार्ज इंसपेक्टर शिवदर्शन सिंह ने बताया कि पिछले कुछ समय से लगातार सूचना मिल रही थी कि उपरोक्त स्पा सेंटर में आने वाले ग्राहकों से पैसा ले कर लड़कियां पेश की जा रही हैं.

मसाज की आड़ में जिस्मफिरोशी का कारोबार चलाया जा रहा है. मालिक पुलिस को चकमा दे कर फरार हो गया चुका था. इस छापेमारी के बाद अमृतसर में चल रहे कई स्पा सेंटर पुलिस के रडार पर आ चुके हैं. ○

सपाट पेट की नाभि की झलक दिख जाती थी.

एकदो लड़कियों ने नाभि पर झुमकेनुमा जेवर लटका रखे थे. लड़कियां बीचबीच में उस की ओर अंगुली से अश्लील इशारे कर शराब पी रहे ग्राहकों को बुला लेती थीं.

2 सितंबर, 2021 को भी सामने की दीवार पर बड़ेबड़े उभरे सुनहरे अक्षरों में 'हैप्पी बर्थडे' लिखा हुआ था, लेकिन जन्मदिन किस का था, पता नहीं. कहीं किसी भी टेबल पर केक काटे जाने का नामोनिशान भी नहीं था. उस की जगह हुक्के जरूर रखे थे. टेबल के चारों ओर 2-3 की संख्या मे बैठे ग्राहक हुक्के की पाइप एकदूसरे के साथ शेयर कर रहे थे.

बीचबीच में शराब परोसने वाली लड़कियां वहां से गुजर जाती थीं. कुछ समय बाद कुछ ग्राहक भी डांसिंग फ्लोर पर पहुंच चुके थे. उन के आते ही एक लड़की ने अपनी मादक अदा से नाचना शुरू कर दिया था.

एक ग्राहक उस की कमर में हाथ डालने वाला ही था कि दूसरी लड़की ने उस का हाथ पकड़ कर प्यार से अपने चारों ओर घुमा लिया. कुल मिला कर पूरा दृश्य किसी 80-90 के दशक की फिल्मों जैसा ही दिख रहा था.

इस पार्टी की बात यहीं खत्म नहीं हुई. इस की भनक कृष्णानगर थाने के ड्यूटी औफिसर एसआई इमरोज को भी लग गई थी. उन्हें पता चला कि लाल क्वार्टर मार्केट में कुछ लड़के और लड़कियां शराब की पार्टी कर रहे हैं.

ड्यूटी औफिसर ने यह जानकारी थानाप्रभारी रजनीश कुमार को दी. चूंकि मामला गंभीर था, इसलिए थानाप्रभारी ने एसीपी डा. चंद्रप्रकाश को भी इस से अवगत करा दिया.

EUP STUDIO
EUP | NAILART
PPH FASHION
THE TOWN'S CAFE
Fine Dinning Restaurant

कृष्णानगर का 'द टाउंस कैफे' रेस्टोरेंट

इस के बाद थानाप्रभारी रजनीश कुमार एसआई नरेश कुमार, जयदीप, अरुण भाटी आदि के साथ रेस्टोरेंट पहुंच गए. उन्होंने देखा कि रेस्टारेंट के फर्स्ट फ्लोर पर कुछ लड़केलड़कियां एक साथ बैठे थे. एक बार काउंटर लगा था. कुछ लोग शराब पी रहे थे. टेबलों पर हुक्के भी रखे हुए थे. और लोग उस की पाईप से कश लगा रहे थे.

कुछ लोगों से पूछने पर उन्होंने बताया कि वे पार्टी सेलिब्रेट करने आए थे. वे सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नहीं कर रहे थे. लेकिन डांस करती लड़कियां, हुक्के और शराब कुछ और ही कहानी बयां कर रही थीं.

पुलिस ने छापे में संचालक और कर्मचारियों के साथ ही कुल 32 लोगों को गिरफ्तार कर लिया

इस के बाद रेस्टोरेंट में पुलिस टीम ने छापेमारी कर दी. छापेमारी में अवैध रूप से शराब व हुक्के की पार्टी का गंभीर मामला सामने आया. पुलिस ने मौके से हुक्के और शराब की बोतलें बरामद कीं.

इस की सूचना पुलिस को रात के 2 बजे मिली थी. इन में से कोई भी कोरोना नियमों का पालन नहीं कर रहा था. किसी के चेहरे पर मास्क नहीं था. पुलिस के अनुसार, संचालक मनु से शराब परोसने, हुक्का बार चलाने का लाइसैंस और देर रात तक पार्टी का अनुमति पत्र दिखाने को कहा गया तो उस के पास ये दस्तावेज नहीं थे.

एसीपी डा. चंद्रप्रकाश मीणा

थानाप्रभारी रजनीश कुमार

एसआई नरेश कुमार

साथ ही संचालक और कर्मचारियों के साथ ही मौके पर मौजूद कुल 32 लोगों को गिरफ्तार कर लिया, जिन में 8 लड़कियां थीं. पुलिस सभी को थाने ले आई. उन से की गई पूछताछ में पता चला कि संचालक मनु अग्निहोत्री ने पार्टी दी थी, जिस में कर्मचारी और उस के जानकार शामिल हुए थे.

पुलिस ने वहां से भारी मात्रा में शराब की बोतलें, हुक्के आदि बरामद किए.

इस के बाद पुलिस ने रेस्तरां में मौजूद सभी लोगों के खिलाफ भादंवि की धारा 188, 269, 270, 285 के तहत गिरफ्तार कर सभी 32 लोगों के कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया. बताया जाता है कि मनु अग्निहोत्री के दिल्ली के पहाड़गंज और कनाट प्लेस में कई रेस्तरां हैं. ●

देहरादून में पर्यटकों को मिलती एस्कार्ट सर्विस

—नितिन शर्मा 'सबरंगी'

अभिषेक वेबसाइट के जरिए देहरादून में एस्कार्ट सर्विस चलाता था. इंटरनेट पर ग्राहक ढूंढना, उन से सौदेबाजी करना और बताई गई जगह पर लड़कियों को भेजना उस का रोज का काम था. राजधानी देहरादून के अलावा पर्यटन नगरी मसूरी, ऋषिकेश व हरिद्वार में आने वाले पर्यटक ही ज्यादातर उस के ग्राहक होते. उस का सपना पूरे उत्तराखंड में अपना जाल फैलाने का था, लेकिन...

एक कमरे में बैठे संदीप की निगाहें मोबाइल की स्क्रीन पर टिकी हुई थीं. वह वाट्सऐप पर चैट कर रहा था, उस चैट में कई लड़कियों के फोटो थे. वह बारीबारी से उन्हें ध्यान से उन्हें देख रहा था. उस ने एक फोटो की तरफ अंगुली से इशारा करते हुए अपने दोस्त मुकेश से पूछा, ''यह कैसी लग रही है ?''

''अच्छी लग रही है.''

''मस्ती करेगा इस के साथ ?'' संदीप ने पूछा.

''मतलब ?'' मुकेश उस की बात पर चौंका.

''अब इतना भोला भी मत बन मेरे दोस्त. मतलब यह कालगर्ल है,'' संदीप ने बताया तो मुकेश ने थोड़ा आश्चर्य से पूछा, ''यह तो तुम्हारे साथ चैट कर रही है ?''

''हां तो क्या हुआ, वाट्सऐप पर तो यह खूब चलता है. अब जमाना बदल गया है मेरे दोस्त. इस तरह की लड़कियां और दलाल अब इसी तरह अपने ग्राहकों से बात करते हैं. वह फोटो भी भेज देते हैं, जो लड़की पसंद आए उस के उन से रेट तय कर लो.'' संदीप ने बताया.

''तुम्हें यह आइडिया कहां से आया ?''

''मेरे भी एक दोस्त ने मुझे बताया था. तू इतने दिनों बाद मिला है तो सोचा

देवऋषि एनक्लेव के फ्लैट से पकड़ी गई कालगर्ल्स और उन के ग्राहक

कि थोड़ा तेरा भी मनोरंजन करा दूं.''

''कोई खतरा तो नहीं है?'' मुकेश बोला.

''बिलकुल सेफ है यार, कालगर्ल के मामले में 2 ही औप्शन होते हैं या तो लड़की को अपने पास बुलवा लो या खुद उस के ठिकाने पर चले जाओ. यह चालाक होती हैं. अच्छी सोसाइटी में फ्लैट किराए पर ले कर कई लड़कियां एक साथ रहती हैं. वहीं से बुकिंग करती हैं. आजकल यह धंधा खूब हो रहा है.'' संदीप ने मुकेश को बताया.

''तो ठीक है चलते हैं.'' मुकेश ने खुश होते हुए कहा.

दरअसल, संदीप उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में रह कर नौकरी करता था. मुकेश उस का दोस्त था, जो उस के पास मिलने के लिए आया था. कालगर्ल से बातचीत पक्की होने के बाद दोनों उस के बताए गए पते पर पहुंच गए.

26 जुलाई, 2021 की बात थी, जब पुलिस टीम दनदनाते हुए देवऋषि एनक्लेव पहुंच गई. फ्लैट में दबिश दी गई तो वहां का नजारा देख कर टीम हैरान रह गई. वहां बाहर के कमरे में एक महिला व पुरुष आपत्तिजनक अवस्था में एकदूसरे से आलिंगनबद्ध थे.

यह अड्डा पटेलनगर थाना क्षेत्र में देहराखास मितांस अपार्टमेंट, देवऋषि एनक्लेव के लेन नंबर-7 में था, जिस कालगर्ल से उन की बात हुई थी, वहां वह अकेली नहीं थी, बल्कि उस के जैसी अन्य लड़कियां भी थीं.

पतिपत्नी मिल कर चला रहे थे सैक्स रैकेट

उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में नशे का कारोबार जितना तेजी से पनपा है, उतनी ही तेजी देह व्यापार के काम में दिखती नजर आती है. हालांकि पुलिस समयसमय पर इस तरह के लोगों को पकड़ती रहती है, क्योंकि ऐसे लोग न सिर्फ गैरकानूनी काम करते हैं, बल्कि शहर की छवि को भी प्रभावित करते हैं.

देह व्यापार का एक और चौंकाने वाला मामला सामने आया 16 अगस्त, 2021 को. बसंत विहार थानाप्रभारी देवेंद्र सिंह चौहान को अपने क्षेत्र में देह व्यापार की सूचना मिली.

एसएसपी डा. योगेंद्र सिंह रावत, एसपी (सिटी) सरिता डोभाल व सीओ (सिटी) शेखरचंद्र सुयाल के संज्ञान में ला कर थाना व एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट की टीम ने मुखबिर के बताए स्थान जीएमएस रोड स्थित नर्मदा एनक्लेव के एक मकान में दबिश दी.

मकान के अंदर के कमरे में एक लड़की व पुरुष को आपत्तिनजक स्थिति में पकड़ लिया. इस के अलावा बाहर के कमरे में बैठे उस मकान के किराएदार संदीप शर्मा व उस की पत्नी रिया शर्मा को भी हिरासत में ले लिया.

कालगर्ल व उन के बीच पैसों का लेनदेन हुआ और फिर करीब एक घंटा रुक कर दोनों खुशीखुशी वहां से वापस चले आए.

कालगर्ल के अड्डे पर जाने वाले संदीप व मुकेश कोई अकेले नहीं थे, बल्कि उन की तरह वहां अनेक लोगों का आवागमन भी बना रहता था

कहते हैं कि बुराई कोई भी हो, उस की उम्र ज्यादा लंबी कभी नहीं होती और इस तरह की बातें छिपती भी नहीं हैं. इस मामले में भी ऐसा ही हुआ. एक दिन पटेलनगर थानाप्रभारी प्रदीप कुमार राणा के पास एक व्यक्ति का फोन आया. उस ने बताया, ''सर, आप के इलाके में बहुत कुछ गलत हो रहा है.''

''मतलब ?''

''मेरा मतलब गलत धंधे से है सर, मैं आप से मिलना चाहता हूं.''

''ठीक है मैं थाने में ही हूं, तुम आ सकते हो.'' कुछ देर बाद वह व्यक्ति थाने आ कर उन से मिला और कुछ देर बातचीत कर के वापस चला गया. उस ने मितांस अपार्टमेंट में चल रहे सैक्स रैकेट के अड्डे के बारे में ही सूचना दी थी.

दरअसल, वह व्यक्ति कोई और नहीं, बल्कि पुलिस का मुखबिर था. पुलिस ने इस संबंध में कुछ और जानकारियां जुटाईं तो यह भी पता चला कि वहां लड़कियों की बुकिंग औनलाइन एस्कार्ट वेबसाइट से भी की जाती थी.

नर्मदा एनक्लेव से गिरफ्तार देहव्यापार के आरोपी

जिस व्यक्ति को आपत्तिजनक हालत में पकड़ा, उस का नाम रविकांत पाल जबकि लड़की का नाम वजीफा खातून था.

रविकांत देहरादून का रहने वाला था जबकि वजीफा पटपड़गंज दिल्ली की रहने वाली थी. पूछताछ में सामने आया कि संदीप व उस की पत्नी वाट्सऐप के जरिए सैक्स रैकेट चला रहे थे. रिया शर्मा के संपर्क ऐसी लड़कियों से थे, जो शरीर बेचने को तैयार रहती थीं.

वह ऐसी लड़कियों को गाजियाबाद, दिल्ली आदि शहरों से अपने किराए के मकान में कुछ दिनों के लिए बुलाते थे जबकि संदीप ग्राहकों से संपर्क कर के उन्हें घर लाता था. लड़कियों को वह ग्राहकों से मिलने वाला 50 प्रतिशत हिस्सा देते थे. मौके पर पकड़ा गया रविकांत भी एक ग्राहक था, जिसे संदीप ले कर आया था. लंबे समय से उन का धंधा आबाद था.

पुलिस ने अनैतिक देह व्यापार अधिनियम की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर के उन्हें जेल भेज दिया. ●

राजधानी में देह व्यापार का इस तरह का धंधा गंभीर था. पुलिस के सामने बड़ा सवाल यह भी था कि इस धंधे में शामिल लड़कियां कौन थीं और उन का जाल कहां तक फैला था, इस गलत धंधे पर चोट करना जरूरी था.

थानाप्रभारी ने इस की सूचना एसएसपी डा. योगेंद्र सिंह रावत, एसपी (सिटी) सरिता डोभाल व सीओ अनुज कुमार को दी. उन्होंने पटेलनगर पुलिस को इस संबंध में काररवाई करने के निर्देश दिए.

काररवाई के लिए एसएसपी ने सीओ अनुज कुमार के निर्देशन में एक पुलिस टीम का गठन किया. इस पुलिस टीम में सीनियर एसआई भुवनचंद्र पुजारी, एसआई कुंदन राम, बाजार चौकीप्रभारी विवेक राठी, महिला एसआई ज्योति कन्याल, सरिता बिष्ट, कांस्टेबल पिंकी भंडारी, निकिता, ऊषा भट्ट, अजय कुमार, प्रदीप कुमार, रिंकू, योगेश व संदीप कुमार को शामिल किया गया.

26 जुलाई, 2021 की बात थी, जब पुलिस टीम दनदनाते हुए देवऋषि एनक्लेव पहुंच गई. फ्लैट में दबिश दी गई तो वहां का नजारा देख कर टीम हैरान रह गई. वहां बाहर के कमरे में एक महिला व पुरुष आपत्तिजनक अवस्था में एकदूसरे से अलिंगनबद्ध थे.

पुलिस दूसरे कमरे में पहुंची, तो वहां 6 लड़कियों के साथ 5 लोग फर्श पर बिछे बिस्तरों पर रंगरलियां मना रहे थे. पुलिस को देखते ही सभी सकपका गए.

''क्या हो रहा है ये सब यहां?'' थानाप्रभारी ने पूछा.

''सर, ये तो हमारे गेस्ट हैं,'' एक लड़की ने सकपकाते हुए कहा, तो एसआई ज्योति कल्याण ने उसे हड़काया, ''हमें मालूम है किस तरह के गेस्ट हैं तुम्हारे. तुम लोगों की पूरी कुंडली ले कर ही आए हैं हम लोग. गेस्ट का स्वागत कैसे होता है, यह भी हम ने अपनी आंखों से देख लिया है.''

''सर, गलती हो गई, माफ कर दीजिए,'' एक व्यक्ति हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाया.

''गलत काम भी करोगे और माफी भी चाहिए, क्या नाम है तुम्हारा?'' पुलिसकर्मी ने पूछा.

> पकड़ी गई लड़कियों में किसी की मजबूरी थी, तो कोई खुशी से पैसों के लिए यह काम करती थी. लड़कियों को एजेंट के जरिए अड्डे पर लाया जाता था. अभिषेक के संपर्क में दिल्ली, हरियाणा, बिहार व पश्चिमी बंगाल की लड़कियां होती थीं.

''सर, मेरा नाम अभिषेक कुशवाह है.''

''ओह! तुम्हीं अभिषेक हो, तुम ही इस रैकेट के लीडर हो.'' पुलिसकर्मियों ने सभी लोगों को कस्टडी में ले लिया और कमरों की तलाशी ली.

तलाशी में पुलिस को वहां से कई आपत्तिजनक चीजें मिलीं. पुलिस ने उन के कब्जे से 17 मोबाइल फोन, एक लैपटाप, 13 एटीएम कार्ड, एक स्विफ्ट डिजायर कार, 3 ड्राइविंग लाइसैंस व 16 हजार रुपए नकद बरामद किए.

पुलिस मौके पर पकड़े गए सभी लोगों को ले कर थाने आ गई.

देहव्यापार में गिरफ्तार युवतियां

पकड़े गए लोगों में देह व्यापार रैकेट का मुख्य संचालक अभिषेक कुशवाह उर्फ वरुण उर्फ साहिल निवासी शाहदरा, दिल्ली, नौशाद हुसैन निवासी बिजनौर, राजवीर गिल निवासी पंजाब, संजीत निवासी पीलीभीत, उत्तर प्रदेश, सुरेंद्र निवासी ऊधमसिंह नगर, प्रीति सोनिया, लाबोनी, नूरेशा खातून, कुसुमा भूसाल सभी निवासी दिल्ली, महिमा निवासी कोलकाता व पलक निवासी हरियाणा शामिल थे.

पुलिस ने सभी से बारीबारी से गहराई से पूछताछ की. पुलिस पूछताछ व जांचपड़ताल में औनलाइन व औफलाइन दोनों तरह से देह व्यापार करने वाले रैकेट की कहानी निकल कर सामने आई—

अभिषेक कुशवाह ने देवऋषि एनक्लेव के इस फ्लैट को अपना हैड औफिस बनाया हुआ था. वह इंटरनेट से वेबसाइट के जरिए एस्कार्ट सर्विस चलाता था. इंटरनेट पर ग्राहक ढूंढना, उन से सौदेबाजी करना और बताई गई जगह पर लड़कियों को भेजना उस का प्रतिदिन का काम था.

समयसमय पर वह अपना नाम बदलता रहता था. वाट्सऐप के जरिए भी ग्राहकों से बातचीत कर के लड़कियों के फोटोग्राफ भेजे जाते थे. लड़कियों के अलगअलग रेट होते थे. ग्राहक को कोई लड़की पसंद आ जाती थी, तो एडवांस में पैसे मंगा लिए जाते थे.

राजधानी देहरादून के अलावा पर्यटक नगरी मसूरी, ऋषिकेश व हरिद्वार में बाहरी लोग घूमने के लिए आते हैं. ऐसे लोग ही ज्यादातर उन के ग्राहक होते हैं. अभिषेक के तार कई ऐसी लड़कियों से जुड़े हुए थे, जो देह व्यापार करने के लिए तैयार रहती थीं.

पकड़ी गई लड़कियों में किसी की मजबूरी थी तो कोई खुशी से पैसों के लिए यह काम करती थी. लड़कियों को एजेंट के जरिए अड्डे पर लाया जाता था. अभिषेक के संपर्क में दिल्ली, हरियाणा, बिहार व पश्चिमी बंगाल की लड़कियां होती थीं.

लड़कियों को कई बार एक महीने व 15 दिनों के हिसाब से ठेके पर लाया जाता था. इतने दिनों की एक तयशुदा एकमुश्त रकम के बदले लड़की को ग्राहकों के सामने परोसा जाता था.

लड़कियों को ग्राहक होटल या अन्य जगहों पर ले जाते थे. ग्राहकों से दिन व रात के हिसाब से पैसे लिए जाते थे. फुल नाइट का चार्ज ज्यादा होता था. किसी लड़की के साथ एक रात साथ बिताने की कीमत 7 से 15 हजार रुपए तक होती थी.

एसएसपी
डा. योगेंद्र
सिंह रावत

लड़कियों को ग्राहकों तक पहुंचाने के लिए अभिषेक के पास कार भी थी और सुरेंद्र नाम का ड्राइवर भी. ड्राइवर की जिम्मेदारी लड़कियों को ग्राहकों तक पहुंचाने और फिर तय वक्त पर वापस लाने की होती थी. इस के अलावा फ्लैट पर भी देह व्यापार होता था.

जो ग्राहक लड़कियों के साथ थोड़ा ही वक्त बिताना चाहते थे, उन्हें फ्लैट पर ही बुलवा लिया जाता था. अभिषेक अपने रैकेट में लड़कियां बदलता रहता था. उस की कोशिश होती थी कि ग्राहकों को नईनई लड़कियां मिलती रहें, ताकि उस का धंधा ज्यादा से ज्यादा आबाद हो.

फ्लैट में रहने वाले ज्यादातर लोगों को अपने आसपास के लोगों से ज्यादा मतलब नहीं होता, इसलिए किसी को शक नहीं होता था कि फ्लैट में रह कर क्या कुछ धंधा किया जा रहा है.

यदि रैकेट में किसी को ऐसा लगता था कि शक किया जा रहा है तो वे लोग जगह बदल दिया करते थे. अभिषेक के रैकेट में शामिल लड़कियां भी कुछ कम नहीं थीं.

अभिषेक के जरिए जो बुकिंग होती थी, उस के अलावा भी वह अपने लिए अलग से सोशल प्लेटफार्म पर अपने फोटोग्राफ अपलोड कर के ग्राहक ढूंढती थीं.

एसपी
(सिटी)
सरिता
डोभाल

कई लोग उन के जाल में फंस जाते थे. इन ग्राहकों से होने वाली कमाई को वह खुद रखती थीं. इस में कोई दूसरा हिस्सेदार नहीं होता था. अभिषेक को देह व्यापार के धंधे में खूब फायदा हो रहा था. वह इसे पूरे उत्तराखंड में फैलाने का सपना देख रहा था.

उस का यह सपना पूरा हो पाता, उस से पहले ही वह पुलिस के शिकंजे में आ गया. विस्तृत पूछताछ के बाद पुलिस ने सभी आरोपियों के खिलाफ अनैतिक देह व्यापार अधिनियम की धाराओं 3/4/6/7 के अंतर्गत मुकदमा दर्ज कर के अदालत में पेश किया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया. ●

12 घंटे में 919 लोगों से सैक्स कर बनाया रिकौर्ड

दुनिया में जुनूनी लोगों की कोई कमी नहीं है. अपने जुनून के कारण अनेक लोग ऐसे काम करने की कोशिश करते हैं, जिस से उन के नाम अलग रिकौर्ड दर्ज हो और दुनिया भर में उन का नाम हो. ऐसे तमाम लोगों के अलगअलग क्षेत्रों में बनाए गए रिकौर्ड गिनीज बुक औफ वर्ल्ड रिकौर्ड्स में दर्ज हैं. कुछ लोग अपनी मेहनत और जतन से उन रिकौर्ड्स को तोड़ने की कोशिश में लगे रहते हैं.

लेकिन हम यहां जिस रिकौर्ड की बात कर रहे हैं, उसे सुन कर आप चौंक जरूर जाएंगे. वह रिकौर्ड है 12 घंटे में सब से ज्यादा पुरुषों के साथ सैक्स संबंध बनाने का.

पोलैंड में लिजा स्पार्क्स नाम की पोर्न अभिनेत्री ने 12 घंटे में 919 लोगों के साथ सैक्स संबंध बना कर यह रिकौर्ड अपने नाम किया. यानी एक आदमी के साथ सैक्स संबंध बनाने में उन्होंने करीब 45 सैकेंड का समय बिताया.

दरअसल, पोलैंड में तीसरी गैंगबैंग चैंपियनशिप का आयोजन किया गया था. पहली और दूसरी चैंपियनशिप जिन महिलाओं ने जीती थी उन्होंने क्रमश: 646 और 754 लोगों के साथ सैक्स करने का रिकौर्ड बनाया था.

इस प्रतियोगिता में 3 महिलाओं ने भाग लिया. इस में गत प्रतियोगिता की विजेता भी थी, जिस ने 754 का रिकौर्ड बनाया था. जज प्रतियोगिता को लाइव देख रहे थे.

प्रतियोगिता के नियमों का पालन करते हुए पोर्न अभिनेत्री लिजा स्पार्क्स ने 919 लोगों से सैक्स संबंध बना कर यह रिकौर्ड अपने नाम कर लिया. लिजा का यह रिकौर्ड अभी तक दुनिया में बना हुआ है. ●

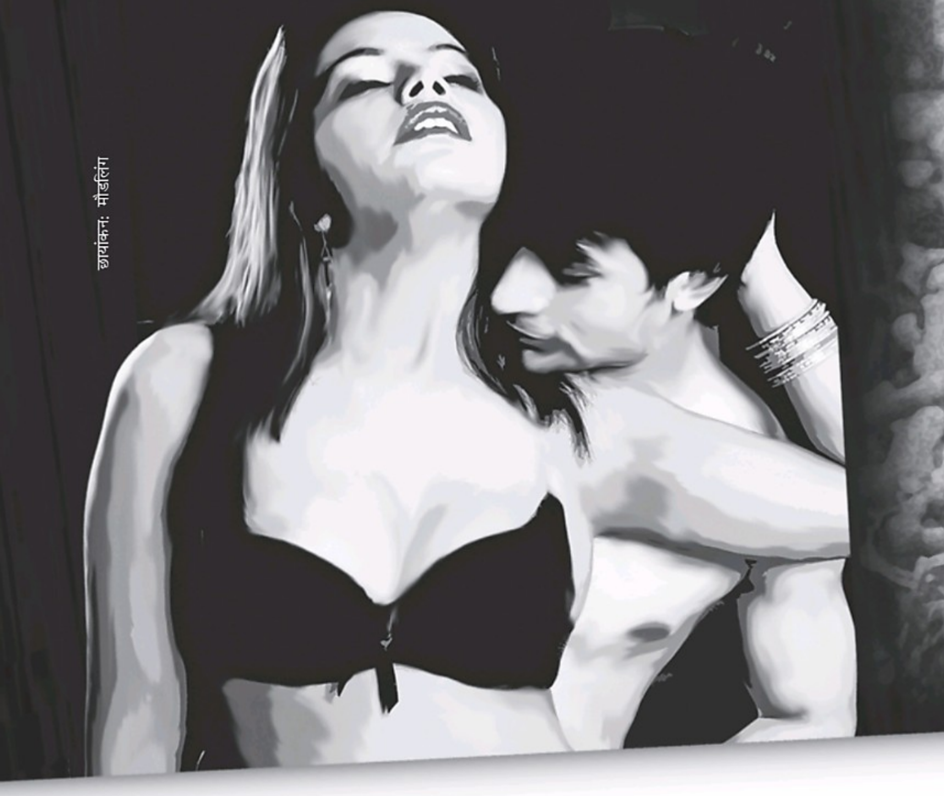

छायांकन: मौडलिंग

शहरों की पहचान हैं
ये बदनाम इलाके

—भारत भूषण श्रीवास्तव

एक समय था, जब देह व्यापार के लिए बड़े शहरों में एक खास मोहल्ला निर्धारित होता था. लेकिन जैसेजैसे तकनीकी का विकास हुआ तो इस धंधे के तरीके भी हाईटैक हो गए. धंधा कोठों से निकल कर ब्यूटी पार्लर, मसाज सेंटर, होटलों तक पहुंच गया. भले ही कोठों की तवायफों में अब पहले जैसी नजाकत और अदाएं नहीं हैं. लेकिन वहां कुछ तो खास है, जो लोग अभी भी वहां जाते हैं. पेश है कुछ बड़े शहरों के कोठों के हाल...

माठीपुरा
११ वी गल्ली

देह व्यापार के तौरतरीके कितने हाईटेक हो चले हैं, यह बात अब किसी सबूत की मोहताज नहीं रह गई है. दुनिया के सब से बड़े और पुराने इस कारोबार की खूबी है कि यह वक्त के हिसाब से खुद को बदलता रहा है.

एक वक्त था जब देह व्यापार के लिए हर शहर में एक खास मोहल्ला हुआ करता था, लेकिन बढ़ते शहरीकरण के चलते अब पूरे शहर में ही देह व्यापार होने लगा है. यह भी ग्राहकों की मांग की ही देन कहा जाएगा.

ब्यूटी पार्लर और मसाज पार्लर अब देह व्यापार के बड़े केंद्र बन चुके हैं. छोटी से ले कर नामी सितारा होटलों और रिसौर्ट्स तक में देह बेची और खरीदी जाती है.

लेकिन कुछ तो बात है बदनाम इलाकों में, जो इन की पहचान पूरी तरह धुंधली नहीं पड़ रही. कहा जा सकता है कि मंडी मंडी ही होती है और फुटकर दुकान फुटकर ही होती है, जो शहर को कोई पहचान नहीं देती.

देश के चुनिंदा शहरों के कुछ इलाके आज भी पूरी शिद्दत से देह व्यापार के लिए जानेपहचाने जाते हैं. इन में से कई खत्म हो चुके हैं और कई खत्म किए जा रहे हैं, जो हर्ज की बात नहीं, बशर्ते सैक्स वर्कर्स के विस्थापन को गंभीरता से लिया जाए तो.

कानून और धर्म तो सैक्स वर्कर्स के साथ कभी नहीं रहे और वह समाज जो इन का उपभोग करता है, वह भी इन्हें तिरस्कृत करता रहा है.

आइए देखें कुछ देह मंडियों के ताजा हाल, जो बताते हैं कि अब तवायफों में भी पहले सी नजाकत और अदाएं नहीं

HIV
SETH
श्रद्धानन्द मार्ग (जी.बी. रोड)
Shradhanand Marg (G.B. Road)

रह गई हैं जो अब फुलटाइम या पार्टटाइम कालगर्ल्स में तब्दील हो चुकी हैं.

कोलकाता का सोनागाछी

सोनागाछी यानी सोने का पेड़ जो न केवल देश और एशिया बल्कि दुनिया के सब से बड़े रेडलाइट इलाके का नाम है, कोलकाता में है. इस बदनाम बाजार में कालगर्ल्स की तादाद 10 हजार के लगभग है जिन की बदहाली का रोना मीडिया और समाजसेवियों का पार्टटाइम बिजनैस, जौब या शौक कुछ भी कह लें, है.

सोनागाछी की गलियों में ग्राहकों का इंतजार करती सैक्स वर्कर्स

दिक्कत तो यह है कि यहां के लिए कोई कुछ कर भी नहीं सकता और जो कर सकते हैं, वे इस इलाके में झांकते तक नहीं, लेकिन वह पूरी खबर यहां की रखते हैं.

लौकडाउन के दौरान सूनी पड़ी रही जिस्मफरोशी की इस मंडी में थोड़ी हलचल पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के दौरान देखने को मिली थी, जब कुछ मीडियाकर्मियों ने यहां की सैक्स वर्कर्स के इंटरव्यू हमेशा की तरह लिए थे.

हमेशा की ही तरह नतीजा कुछ नहीं निकला, जिस की उम्मीद यहां की सैक्स वर्कर करती भी नहीं. लेकिन लौकडाउन के दौरान जो मुसीबतें इन लोगों ने झेलीं, उस से इन्हें भी एहसास हो गया कि सिवाय ग्राहक के हमारा कोई और पालनहार नहीं.

मुसीबत के उन दिनों में कई सैक्स वर्कर्स को उन के नियमित ग्राहकों ने नेट बैंकिंग के जरिए पैसा भेजा था. उत्तरी कोलकाता में बसी इस देह मंडी का इतिहास कुछ भी हो, पर वर्तमान कभी अच्छा नहीं रहा.

खासतौर से नेपाल, बांग्लादेश और पूर्वोत्तर राज्यों सहित ओडिशा व झारखंड से बड़ी तादाद में नाबालिग लड़कियां यहां जबरन देह व्यापार के लिए लाई जाती हैं.

तंग संकरी गलियों के छोटेछोटे बदबूदार मकानों और कमरों में रहने को मजबूर सोनागाछी की सैक्स वर्कर्स की आंखों में कोई बड़ेबड़े सपने नहीं होते. उन्हें बस एक बार की सर्विस के एवज

ग्राहकों की राह देखतीं मुंबई के कमाठीपुरा की सैक्स वर्कर्स

में मिले औसतन 2 सौ रुपए ही बहुत लगते हैं.

साल भर में कोई एक हजार नई लड़कियां इस बाजार में आती और लाई जाती हैं. इन में से कई दूसरे शहरों का रुख कर लेती हैं तो कुछ पैसों की जरूरत के मुताबिक शाम ढलने के बाद पार्टटाइम धंधे के लिए आतीजाती हैं.

हां, कोई 6 हजार जरूर स्थाई रूप से यहां बस गई हैं. उन के घर भी हैं, पति भी है और बच्चे भी हैं. नहीं है तो बस आगे की जिंदगी की गारंटी, जो सोनागाछी नाम पड़ने के बाद से ही दलालों की मुट्ठी में कैद है.

जरूरतमंद और शौकीन लोगों की चहलपहल से आबाद इस इलाके में दरअसल में एक नर्क सा बसता है, जिस में सुधार की बाबत कुछ नहीं हो रहा.

कभीकभार स्वास्थ्य कैंप लग जाते हैं, कंडोम बंट जाते हैं और जिन के पास राशन कार्ड हैं, उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ मिल जाता है.

पर यह नाकाफी है क्योंकि यहां जिस्म बेचना मुनाफे का सौदा नहीं है. इस से इन का पेट भर भरता है, गाड़ी और बंगले नहीं आ जाते. फिर हालात और वक्त की मारी औरतें कहां जाएं.

इस सवाल का जबाब शायद ही कोई समाजशास्त्री या विद्वान दे पाएगा और देगा भी तो यही कि ये यहीं ठीक हैं, यदि कहीं और धंधा करेंगी तो ज्यादा शोषण का शिकार होंगी. घुटन भरी जिंदगी जी रही इन देहजीवाओं को ज्यादा सहूलियतें देने का मतलब होगा यहां की पहचान खत्म करना. सोनागाछी की इस देहमंडी के बाद कोलकाता शहर रसगुल्ले के लिए मशहूर है.

मुंबई का कमाठीपुरा

सोनागाछी में बहुत कुछ है पर सब कुछ नहीं है. यह सब कुछ मुंबई के रेडलाइट इलाके कमाठीपुरा में मिलता है. साउथ का सांवला माल भी, कश्मीरी भी और पंजाबी व उत्तराखंड सहित देश भर की लड़कियों का मिलना ग्राहकों को कमाठीपुरा खींच लाता है.

मुंबई फिल्म वालों की भी है, अंडरवर्ल्ड व माफिया की भी है. अमीरों

की भी है और गरीबों की भी है. गलत नहीं कहा जाता कि पैसा कमाने का जज्बा और जूनून हो तो मुंबई आप को निराश नहीं करेगी.

अंगरेजों ने कमाठीपुरा, जिस का नाम पहले लाल बाजार हुआ करता था, विकसित तो अपने सैनिकों की हिफाजत और सहूलियत के लिए किया था, पर देखते ही देखते यह रेडलाइट इलाके में तब्दील हो गया.

देशदुनिया की लड़कियां कमाठीपुरा की शान और जान हैं, जिन्हें मुंबई की चकाचौंध से कोई वास्ता नहीं. चालों में रहने वाली ये कालगर्ल्स बिंदास हैं पर शोषित भी कम नहीं हैं. वेश्याओं की जिंदगी पर जितनी भी फिल्में अब तक बनी हैं, उन में कहीं न कहीं कमाठीपुरा जरूर दिखा है.

जो लोग मुंबई घूमने जाते हैं उन की भी उत्सुकता एक बार कमाठीपुरा देख लेने की होती है. लेकिन यह हर कोई नहीं समझ पाता कि हाथ में सिगरेट और दारू का ग्लास पकड़ कर नाचने और झूमने की एक्टिंग करती कालगर्ल्स की हालत बहुत ज्यादा अच्छी नहीं.

अपनी चमड़ी बेच कर जो कमाई ये करती हैं, उस का आधे से भी ज्यादा हिस्सा पुलिस वालों, दलालों, गुंडों और मवालियों की जेब में चला जाता है.

बाबजूद तमाम सचों के बड़ा सच यह है कि यहां की दुश्वार भरी जिंदगी जीने वाली कालगर्ल्स इस धंधे के संविधान में समयसमय पर जरूरी संशोधन करती रही हैं, मसलन वह कमाठीपुरा ही है, जहां की सैक्स वर्कर्स फैशन सब से पहले अपनाती हैं.

सत्तर के दशक में यहां मीना कुमारी मधुबाला और हेमा मालिनी जैसा दिख कर ग्राहकों को लुभाया जाता था तो अब करीना कपूर, आलिया भट्ट और विद्या बालन जैसी स्टाइल चलन में हैं. कोई भी नया फैशन आम घरों में दाखिल होने से पहले कमाठीपुरा की खिड़कियों और दरवाजों से झांकता दिख चुका होता है.

मुंबई की चालों में रहने वाली ये कालगर्ल्स बिंदास हैं पर शोषित भी कम नहीं हैं. वेश्याओं की जिंदगी पर जितनी भी फिल्में अब तक बनी हैं, उन में कहीं न कहीं कमाठीपुरा जरूर दिखा है. जो लोग मुंबई घूमने जाते हैं उन की भी उत्सुकता एक बार कमाठीपुरा देख लेने की होती है.

साल 2000 की शुरुआत में जैसे ही डिजिटल युग का आगाज हुआ तो यह मंडी सब से पहले डिजिटल हुई. दूसरे राज्यों की सैक्स वर्कर्स जब नोकिया के बटन वाले फोन को चलाना सीख रही थीं, तब ये सैमसंग और दूसरी कंपनियों के टच स्क्रीन मोबाइल फोन औपरेट करने लगी थीं.

हालांकि इस से उन की दुर्दशा नहीं सुधरी, पर थोड़ा फायदा धंधे में जरूर इन्हें हुआ. जबरिया देह धंधे में लाई जाने वाली लड़कियों का यह ट्रेनिंग सेंटर सरीखा है.

कम उम्र में दलाल और रिटायर्ड सैक्स वर्कर्स इन्हें धंधे के सारे गुर सिखा देती हैं, जिन की कोशिश इन के जरिए ज्यादा से ज्यादा पैसे बना लेने की होती है.

कमाठीपुरा में सैक्स वर्कर्स की तादाद 4 हजार के लगभग ही आंकी

श्रद्धानन्द मार्ग (जी.बी. रोड)
Shradhanand Marg (G.B. Road)

दिल्ली के जीबी रोड में अंधेरा घिरते ही खास शौकीन लोगों की भीड़ जुटने लगती है

जाती है लेकिन यह बदनाम इतना है कि सुधार और कल्याण के नाम पर मशहूर रामकथा वाचक मोरारी बापू भी यहां आ चुके हैं.

अप्रैल 2018 में उन्होंने कमाठीपुरा की कोई 60 कालगर्ल्स को रामकथा सुनने अयोध्या बुलाया था, जिस के लिए न केवल आनेजाने का किराया भी उन्होंने दिया था बल्कि रामनगरी में खानेपीने, ठहरने और घूमनेफिरने का इंतजाम भी किया था.

बहुत गौर से देखें तो कमाठीपुरा का नाम भी बिकता है. संजय लीला भंसाली निर्देशित और आलिया भट्ट अभिनीत फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी के नाम का विरोध भी यहां की सैक्स वर्कर्स ने किया था. और अब जल्द ही प्रदर्शित होने जा रही वेब सीरीज कमाठीपुरा के नाम का विरोध भी खूब हुआ.

इस में इस इलाके में रहने वाले लोगों ने भी सैक्स वर्कर्स का साथ दिया, लेकिन क्या यह हल है और क्या इस से गुंडेमवालियों जैसी मुसीबतों से इन्हें छुटकारा मिल जाएगा.

इस सवाल का जबाब हां में तो कतई नहीं मिलता दिखता. जब तक देह है तब तक कमाठीपुरा कमाठीपुरा ही रहेगा, जो हर शहर में अलग नाम से होता है जैसे कि देश की राजधानी दिल्ली में जीबी रोड है.

दिल्ली का जीबी रोड

शहर का तब्दील होना शाद रहना और उदास...
रौनकें जितनी यहां हैं औरतों के दम से हैं.

मशहूर शायर मुनीर नियाजी ने यह शेर किस मूड में कहा होगा, यह तो वही जानें लेकिन दिल्ली की जीबी रोड का आबाद रहना बताता है कि दिल्ली की तमाम रौनकों में से एक रौनक यह बदनाम इलाका भी है.

मुगल काल में यहां 5 कोठे यानी रेडलाइट इलाके हुआ करते थे, जिन्हें अंगरेजों ने मिला कर एक कर दिया था और नाम दिया था गारस्टिन बास्टिन रोड, जिसे संक्षेप में जीबी रोड कहा जाने लगा.

दिल्ली आने वाले लगभग सभी लोगों ने जीबी रोड नाम सुना होता है और उन के दिमाग में इस की एक अलग तसवीर भी होती है.

जान कर कोई भी आसानी से यकीन नहीं कर सकता कि जीबी रोड हार्डवेयर और आटोमोबाइल का एक बड़ा बाजार भी है, जो नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के नजदीकी अजमेरी गेट से ले कर लाहौरी गेट तक फैला हुआ है.

दिन भर दुकानों पर हार्डवेयर और आटोमोबाइल का व्यापार होता है, लेकिन रात होते ही सब कुछ ठीक वैसे ही बदल जाता है जैसे ठीक से न देख पाने के चलते परदे पर मंजर बदल जाया करते हैं.

इस इलाके की 25 इमारतों में कोई एक हजार सैक्स वर्कर रहती हैं, जिन से शाम होते ही यह इलाका गुलजार हो उठता है. यह शायद देश का पहला रेडलाइट इलाका है, जहां लौकडाउन और उस के भी पहले नोटबंदी तक ग्राहक कतार में लगे नजर आते थे.

अब बात पहले सी नहीं रही खासतौर से लौकडाउन के बाद देह के शौकीन लोग यहां आने से कतराने लगे हैं. जिन्हें फरमाइश और खासा पैसा देने के बाद मुजरा भी देखने को मिल जाता था.

देश के दूसरे बदनाम इलाकों की तरह जीबी रोड के कोठों पर लड़कियां बहुत बड़ी तादाद में जबरिया नहीं लाई जातीं. कहने का मतलब यह नहीं कि यहां शौक के चलते देह व्यापार होता है बल्कि यहां भी हालात की सताई औरतें सजधज कर होंठों पर फरजी मुसकराहट लिए ग्राहकों को इशारे से बुलाती नजर आती हैं.

चूंकि यह एक तरह से परंपरागत इलाका है इसलिए कालगर्ल का रेट भी यहां के मर्द तय करते हैं. जैसे ही ग्राहक 2 दुकानों के बीच बनी सीढ़ियों से हो कर ऊपर पहुंचता है तो उस का पहला सामना खुद को खूंखार दिखाने की कोशिश कर रहे दलाल से होता है, जो उसे कालगर्ल दिखाता है. वह ग्राहक को उस का रेट बताता है.

फुलनाइट चार्ज यहां के मेन्यू कार्ड का सब से ज्यादा दाम वाला आइटम है, जिस की शुरुआत ही 5 हजार से ऊपर होती है फिर इस से रेट का बढ़ना लड़की की उम्र और जिस्म के भूगोल पर निर्भर करता है.

मुगलों के जमाने में यहां की तवायफों की बड़ी इज्जत हुआ करती थी. हरेक ब्रांडेड तवायफ का तयशुदा दाम हुआ करता था, जिस में आज की तरह मोलभाव नहीं होता था. यह कोठों और कोठेवालियों की तौहीन मानी जाती थी. पर अब सब गुजरे कल की बातें हो चली हैं.

कभीकभार ग्राहकों और दलालों के बीच का झगड़ा बढ़ जाता है तो पुलिस की सेवाएं लेनी पड़ती हैं जो सभी को मंहगी पड़ती है खासतौर से ग्राहक को. अगर वह दिल्ली के बाहर का हो तो बेचारा जेब से निचुड़ जाता है.

वैसे भी पुलिस के छापे पड़ना यहां आम बात है, क्योंकि हर किसी की नजर यहां की बेशकीमती जमीनों पर है जहां रह रहे नगीनों को हटाने की साजिश आए दिन रची जाती है.

पुलिसिया छापों में जब नाबालिग पकड़ाती हैं तो खूब सनसनी मचती है कि गौर से देखिए 12 साल की इस

मासूम को, जिसे जिस्मफरोशों ने देह व्यापार की दलदल में धकेल दिया... और यह मासूम... यह तो आगरा से बहलाफुसला कर लाई गई थी.

इसे अच्छी नौकरी और बेहतर जिंदगी देने का वादा दिया गया था, लेकिन जब आंखें खुलीं तो स्कूल जाने और खिलौनों से खेलने की उम्र वाली इस मासूम के सामने जिस्म के भूखे भेड़िए जीभ लपलपा रहे थे.

तमाम कोशिशों के बाद भी सैक्स वर्कर्स को यहां से खदेड़ा नहीं जा सका.

ऐसे ही गंदे और सीलन भरे कमरों में रहने को विवश हैं रेड लाइट इलाकों की सैक्स वर्कर्स

साल 1965 में इसी मकसद से जीबी रोड का नाम श्रद्धानंद मार्ग रख दिया गया था, जिस का कोई फर्क नहीं पड़ा.

अब फिर जीबी रोड की रौनक वापस लौटने लगी है. देश भर के छोटेमोटे व्यापारी जो दिल्ली आते हैं, वे पहाड़गंज के बजाय जीबी रोड की होटलों में ठहरने को तवज्जो देते हैं क्योंकि यह नजदीकी उन्हें सस्ती पड़ती है.

ये लोग मुनीर नियाजी के कलाम तो दूर की बात है, उन के नाम से भी वाकिफ नहीं होते पर यह बेहतर जानते हैं कि रौनकें तो औरत से ही होती हैं फिर वे चाहे जैसी भी हो.

वाराणसी का शिवदासपुर

कभी तवायफों के लिए मशहूर रहे वाराणसी के रेडलाइट इलाके शिवदासपुर का मुजरा सुनने और नृत्य देखने देश भर के शौकीन लोग आया करते थे, जो काशी विश्वनाथ के दर्शन भी हाथोंहाथ कर लेते थे.

इसी मंदिर से सटा इलाका था दाल मंडी, जो देहव्यापार का बड़ा अड्डा था. 70 के दशक में तवायफों को शिवदासपुर शिफ्ट कर दिया गया था. परंपरागत वेश्यावृत्ति के लिए पहचाने जाने वाले वाराणसी शहर की फिजा अब बदल रही है.

अब शरीफ लोग चाहते हैं कि जिस्मफरोशी का यह कलंकित धंधा बंद हो. वाराणसी की वेश्याओं ने बहुत उतारचढ़ाव देखे हैं. कई बार उन का विस्थापन और पुनर्वास हुआ है लेकिन हर बार उन की संख्या घटी है. अब शिवदासपुर के 40-45 घरों से ही यह धंधा होता है जिस में सैक्स वर्कर्स की तादाद पूरी एक हजार भी नहीं.

अब जो बची हैं उन में से ज्यादातर पीढ़ी दर पीढ़ी यह धंधा करती रही हैं. उजड़ी नवाबी और जमींदारी की तरह

नई पीढ़ी की तवायफों के पास भी अपने वैभवशाली इतिहास के संस्मरण भर बचे हैं.

इस रिहायशी इलाके में हर तरह के लोग रहते हैं. कुछ घरों में तो गृहस्थ घर होने की तख्ती भी टंगी है जिस से ग्राहक गलतफहमी में पड़ कर देर रात उन का दरवाजा न खटखटाएं. फिर भी कलह और कहासुनी रोज रोज की बात है.

3 साल पहले यहां के लोगों ने एक बड़ा धरना दिया था कि वेश्याओं को यहां से हटाओ. अपनी जगह इन के अपने तर्क सटीक थे, पर जबाब में तवायफों ने भी कई दलीलें दी थीं जिन की कोई काट नहीं.

वाराणसी की तवायफें सहज ही किसी पर भरोसा नहीं करतीं. हालांकि वे शाम से ही सजधज कर बैठ जाती हैं और उन में से कइयों के परिवारजन नीचे ग्राहक तलाश रहे होते हैं.

नरेंद्र मोदी जब यहां से सांसद बने थे तो इन तवायफों ने भी उन से ज्यादा उम्मीदें पाल लीं थीं. कई घरों में मोदी की तसवीर भी लटकती नजर आती है.

इन तवायफों को अब धीरेधीरे समझ आ रहा है कि कोई राजनैतिक दल इन का भला नहीं कर सकता, इसलिए वे अब किसी पचड़े में नहीं पड़तीं.

अपने बच्चों के लिए शिवदासपुर में स्कूल की मांग सालों से सैक्स वर्कर कर रही हैं, लेकिन उन की कहीं सुनवाई नहीं होती.

आए दिन परेशान करने की गरज से वेश्यावृत्ति का मुकदमा दायर कर दिया जाता है जिस में खासा वक्त और पैसा तवायफों का जाया होता है.

प्रयागराज का मीरगंज

वाराणसी के शिवदासपुर की तरह ही प्रयागराज का मीरगंज भी बदहाल है, जहां देह व्यापार कोई 200 साल से हो रहा है. लेकिन अब यहां कहने भर को ही कालगर्ल्स बची हैं.

साल 2016 में एक बड़ा छापा मीरगंज में पड़ा था, जिस में लगभग 200 सैक्स वर्कर्स को यहांवहां के आश्रमों में भेज दिया गया था. इन में से कुछ ही वापस आ पाईं, बाकी दूसरे शहरों में जा कर धंधा करने लगीं.

शहर के बीचोबीच के इस पौश इलाके के चौक की संकरी गलियों में लड़कियां सजसंवर कर बैठ जाती हैं और आतेजाते लोगों को आ जा राजा मजे ले ले.. जैसे जुमलों से बुलाती नजर आ जाती हैं.

मीरगंज भी पहले तवायफों और मुजरों के लिए मशहूर था लेकिन धीरेधीरे यह भी पूर्वी उत्तर प्रदेश का देहव्यापार का बड़ा अड्डा बन गया.

ऐसा माना जाता है कि देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का जन्म मीरगंज में हुआ था. इस पर आए दिन बहस और विवाद होते रहे हैं जिस से सैक्स वर्कर्स को कोई लेनादेना नहीं होता. वे अब अपने वजूद की लड़ाई लड़ रहीं हैं, जो हालात देख लगता नहीं कि ज्यादा चल पाएगी.

मीरगंज की सैक्स वर्कर्स की दशा श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित 1983 में प्रदर्शित फिल्म 'मंडी' जैसी होती जा रही है, जिस में वेश्याओं को खदेड़ने नेता, अधिकारी और रियल एस्टेट के कारोबारी साजिश रच कर उन्हें पुनर्वास

के नाम पर यहां से वहां भगाते रहते हैं. लेकिन अफसोस की बात यह है कि मीरगंज में तो ऐसा भी नहीं हो रहा.

पुणे का बुधवार पैठ

दिल्ली के जीबी रोड की तरह ही बसाहट है पुणे के बुधवार पैठ इलाके की, जहां नीचे ज्ञान बांटती किताबों का बाजार है और ऊपर हैं कालगर्ल्स के मकान, जिन्हें कोठे कहा जाता है. इस इलाके में इलेक्ट्रौनिक्स का कारोबार भी बड़े पैमाने पर होता है.

> सैक्स वर्कर्स की दशा श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित फिल्म 'मंडी' जैसी होती जा रही है, जिस में वेश्याओं को खदेड़ने नेता, अधिकारी और रियल एस्टेट के कारोबारी साजिश रच कर उन्हें पुनर्वास के नाम पर यहां से वहां भगाते रहते हैं.

बुधवार पैठ को सोनागाछी के बाद देश का दूसरा बड़ा रेडलाइट इलाका माना जाता है, जहां लगभग 3 हजार स्थाई और 4 हजार अस्थाई कालगर्ल्स अपना और अपनों का पेट देह बेच कर पालती हैं.

दिलचस्प बात यह कि यहां नेपाली लड़कियों की भरमार है जो साल 2 साल में एकाध बार घर का चक्कर लगा आती हैं और साथ में एक नई लड़की लटका लाती हैं. यह दृश्य देख कर सहज ही गरीबी नाम के अभिशाप को समझा जा सकता है.

बुधवार पैठ का नजारा ठीक वैसा ही रहता है जैसा कि हिंदी फिल्मों में दिखाया जाता रहा है. तंग गलियों की भीड़भाड़ में हाथ में गजरा लपेटे ग्राहक, उन्हें खोजते दलाल, पान की दुकानों पर होता मोलभाव, नशे में झूमते लोग, ऊपर की मंजिल से सैक्सी इशारे कर रही कालगर्ल्स और गानों की तेज आवाज लेकिन असल तसवीर हर किसी को नहीं दिखती कि यह रौनक चंद घंटों की होती है.

सुबह होते ही इक्कादुक्का लोग नजर आते हैं. दोपहर बाद सेक्स वर्कर्स सो कर उठती हैं रोजमर्रा के काम निबटाती हैं और फिर कभी न खत्म होने वाले धंधे में अपना रोल निभाने तैयार हो जाती हैं.

बुधवार पैठ की सैक्स वर्कर्स पर मुंबई का असर जल्द होता है शायद यही वजह थी कि लौकडाउन के दौरान उन्हें भी बाहर से मदद मिलती रही थी. कइयों ने सेठ साहूकारों और व्यापारियों से कर्ज भी लिया था.

आम दिनों में सैक्स वर्कर्स की औसत आमदनी 25 हजार रुपए महीना होती है, लेकिन इस में भी खर्च मुश्किल से चलता है.

अधिकांश लड़कियों को आधा पैसा घर भेजना पड़ता है. खुद वे भी बहुत अच्छी स्थिति में नहीं रहतीं. कई तो पुराने जमाने के लकड़ी के बने मकानों में रह रही हैं. इन के पास अपनी पहचान साबित करने के जरूरी दस्तावेज भी नहीं हैं.

साल 2008 में माइक्रोसाफ्ट के मुखिया बिल गेट्स जब बुधवार पैठ आए थे और कोई एक घंटे सैक्स वर्कर्स से बात की थी, तब खासा हल्ला देशदुनिया में मचा था. बिल गेट्स ने 200 अरब डालर की भारीभरकम मदद का ऐलान किया था.

बीती 26 अगस्त को नागपुर प्रशासन ने फरमान जारी कर दिया कि आगामी 2 महीने तक गंगाजमुना में देहव्यापार प्रतिबंधित रहेगा

इस पैसे का क्या हुआ, किसी को कुछ नहीं मालूम. हां, यह जरूर साफसाफ दिखता है कि बुधवार पैठ में कोई बदलाव नहीं आया है. यहां की सैक्स वर्कर्स अंधेरे बदबूदार सीलन भरे कमरों में ही रहती हैं.

नागपुर का गंगाजमुना

बीती 26 अगस्त को नागपुर में उस वक्त सन्नाटा सा खिंच गया था, जब प्रशासन ने यह फरमान जारी कर दिया था कि आगामी 2 महीने तक शहर के बदनाम इलाके गंगाजमुना में देह व्यापार प्रतिबंधित रहेगा.

ऐसा स्थानीय नागरिकों की शिकायतों पर किया गया था, जिन के मुताबिक यहां की सैक्स वर्कर्स आए दिन राह चलते लोगों को भद्दे इशारे करती हैं और इस इलाके में अपराध अब आम हो चले हैं.

अलावा इस के नाबालिग लड़कियों से भी देह व्यापार कराया जाता है. ये शिकायतें पूरी तरह गलत नहीं हैं क्योंकि यह नागपुर के इस बदनाम इलाके का उजागर सच है.

लेकिन एक कड़वा सच इस सवाल का जबाब न मिलना भी है कि कोई एक हजार सैक्स वर्कर्स अब कैसे पेट भरेंगी क्योंकि प्रशासन ने उन के लिए कोई वैकल्पिक जगह नहीं सुझाई है. अब मुमकिन है ये आसपास के शहरों में अस्थाई पलायन कर जाएं पर यह समस्या का हल नहीं है.

विदर्भ में देह व्यापार का इतिहास काफी पुराना है जिस का सीधा संबंध गरीबी और भुखमरी से है, जो अभी भी ज्यों की त्यों हैं. नागपुर जंक्शन पूरे देश को जोड़ता है, जहां चारों दिशाओं से लोग कामकाज की तलाश में आते हैं. जिन को काम नहीं मिलता, उन की औरतें धंधा करने लगती हैं जिस में गंगाजमुना उन का बड़ा मददगार होता है.

यहां देह दूसरे शहरों के मुकाबले सस्ती है और माहौल भी परंपरागत बाजारों जैसा है. शरमाए सकुचाए पहली बार आए ग्राहकों का हाथ पकड़ कर सैक्स वर्कर्स अपने कमरों में ले जाती हैं और उस की पूरी जेब खाली कर देती हैं.

तंग संकरी गलियां गंगाजमुना की भी पहचान हैं जहां के अधिकांश मकान नीचे ही हैं. बीते कुछ सालों में नागपुर में

तेजी से बार खुले तो मुंबई के बारों की तरह यहां के बारों में भी जवान लड़कियां कमर, छाती और कूल्हे मटका कर बारबाला की नौकरी करने लगीं और देह व्यापार के नए नए अड्डे भी विकसित होने लगे. स्थानीय लोगों ने इन लड़कियों को वारांगनाएं शब्द दे दिया है.

अब आलम यह है कि इन्हें मुश्किल से भी रहने के लिए किराए पर मकान नहीं मिलते. दूसरे दलालों ने धंधा बढ़ता देख अपना नेटवर्क बढ़ाना शुरू कर दिया, जिस से नागपुर बदनाम तो हुआ पर इस से सैक्स वर्कर्स को एक नया ठिकाना भी मिला, जिसे प्रशासन साजिश के तहत खत्म कर रहा है.

> नागपुर में देह दूसरे शहरों के मुकाबले सस्ती है और माहौल भी परंपरागत बाजारों जैसा है. शरमाए सकुचाए पहली बार आए ग्राहकों का हाथ पकड़ कर सैक्स वर्कर्स अपने कमरों में ले जाती हैं और उस की पूरी जेब खाली कर देती हैं.

2 महीने बाद गंगाजमुना की तसवीर कुछ और होगी जो सैक्स वर्कर्स दूसरे शहरों का रुख कर रही हैं, वे सभी वापस नहीं लौटने वाली. लेकिन यह तय है कि तब तक और नई लड़कियां यहां सप्लाई होंगी यानी परेशानी और समस्या बजाय कम होने के और बढ़ेगी.

बदल रही है पहचान

सारे देश के बदनाम इलाकों की इमारतें इस पेशे की तरह जर्जर हालत में हैं, जिन के पूरी तरह टूटने का इंतजार भूमाफिया के अलावा स्थानीय लोग भी कर रहे हैं, जो सीधे इन से टकराने की हिम्मत नहीं जुटा पाते.

मेरठ का कबाड़ी बाजार हो, ग्वालियर का रेशम बाड़ हो या फिर इंदौर का बौंबे बाजार, इन सभी की पहचान धीरेधीरे खत्म हो रही है. इन बाजारों में अब कहने भर को कालगर्ल्स बची हैं. ग्राहकों को भी यहां आना महंगा पड़ने लगा है क्योंकि सैक्स वर्कर अब हर कहीं मिल जाती हैं.

कल तक रिक्शे, तांगे और आटो वाले जो इन के दलाल तो नहीं कहे जा सकते पर इन से वाकिफ अच्छे से हुआ करते थे, इन्हें ग्राहक लाने पर ठीकठाक बख्शीश मिल जाया करती थी. उन का दायरा भी इन्हीं की तरह बढ़ने के नाम पर तितरबितर हो गया है.

देहव्यापार धर्म और संस्कृति का अटूट हिस्सा हमेशा से ही रहा है और अब भी है क्योंकि तमाम जिल्लतें झेलने के बाद भी सैक्स वर्कर्स धर्मभीरु ही हैं.

हर बदनाम इलाके में स्कूल हों न हों लेकिन पाप धोने को मंदिर जरूर हैं. नई साजिश एनजीओ वगैरह के जरिए इन इलाकों में घुसपैठ कर उन्हें उजाड़ने की हो रही है. ये संस्थाएं सैक्स वर्कर्स को बदनाम ज्यादा करती हैं उन की बेहतरी के लिए ठोस कुछ नहीं करतीं.

आज जो सभ्य शहरी लोग इन इलाकों की पहचान पर एक खतरे की तरह मंछरा रहे हैं, वे शायद यह नहीं सोच पा रहे कि कल को उन्हीं के पौश इलाके में यह कारोबार फलेगाफूलेगा और ऐसा होने भी लगा है. रिहायशी इलाकों से पकड़ाते सैक्स रेकेट इस बात के गवाह भी हैं. ●

छायांकन: मौडलिंग

मध्य प्रदेश में मातापिता कराते हैं बेटियों से देहव्यापार

—वेणीशंकर पटेल 'ब्रज'

लड़की को मातापिता की इज्जत समझा जाता है, लेकिन मध्य प्रदेश की बांछड़ा जाति में ऐसी परंपरा चली आ रही है कि वहां खुद मातापिता ही बेटी से देहव्यापार कराते हैं. जो लड़की जितने ज्यादा पैसे इस धंधे से कमाती है, उसे उतना ही सम्मान मिलता है. देश और समाज में आए इतने बदलाव के बाद भी यह समाज आखिर बदलाव की धारा में क्यों शामिल नहीं हो रहा?

करीब 3 महीने पहले की बात है. शाम का समय था. रतलाम से मंदसौर नीमच की ओर करीब 7 किलोमीटर का सफर तय हुआ था कि सड़क पर खड़ी जवान लड़कियों को देख कर कौतूहल हुआ. कार की रफ्तार धीमी कर मीलों दूर तक हम यह नजारा देख रहे थे.

कुछ ही मील चलने के बाद हम ने एक ढाबे पर कार रोक दी और ढाबे पर खाने का और्डर कर वहीं पड़ी खाट पर बैठ गए. मन में कई तरह के सवाल उठ रहे थे.

ढाबे के मालिक जगदीश से जब हम ने सड़क किनारे खड़ी इन लड़कियों के बारे में जानना चाहा तो उन से जो कहानी पता चली, उसे सुन कर जैसे कानों को विश्वास ही नहीं हो रहा था.

जगदीश ने बताया कि ये लड़कियां यहां के बांछड़ा समुदाय की हैं, जो अपने जिस्म का सौदा करने रोज ही सड़कों पर उतर आती हैं.

ऐसा नहीं है कि ये लड़कियां चोरीछिपे मजबूरी में इस तरह का धंधा करती हैं, बल्कि इन जवान लड़कियों के मातापिता बड़े शौक से इन से यह घिनौना काम करवाते हैं. कई बार तो मातापिता खुद ही इन के लिए ग्राहक ढूंढ कर लाते हैं और ये लड़कियां ग्राहकों से शारीरिक संबंध बनाती हैं.

सड़कों किनारे पर भड़कीले कपड़ों में सजीधजी लड़कियों को देख कर वाहन की रफ्तार अपने आप ही धीमी हो जाती है. होंठों पर लिपस्टिक का चटख लाल रंग और काजल भरी आंखों से इशारा करती ये लड़कियां ट्रक और कार चलाने वालों का ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं.

अपनी अदाओं से लोगों को लुभाती जवान लड़कियां दरअसल अपने जिस्म का सौदा करती हैं. जिस्मफरोशी के इस बाजार में रोजाना न जाने कितनी ही लड़कियां चंद सौ रुपयों के लिए अपनी बोली लगाती हैं.

जिन लोगों ने महू-नीमच राष्ट्रीय राजमार्ग का सफर किया है, वे कभी न कभी समाज की इन लड़कियों से मुखातिब हो चुके होंगे. भले ही किसी की गाड़ी न रुकी हो, लेकिन सड़क

पुलिस भी शामिल देह व्यापार में

मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में पुलिस अधिकारियों के गैंग द्वारा लोगों को हनीट्रैप मामले में फंसाने की सनसनीखेज घटना की स्याही अभी सूखी भी नहीं थी कि देवास जिले में एक पुलिस अधिकारी के होटल में देह व्यापार का बड़ा रैकेट पकड़े जाने की बात सामने आ गई.

23 जुलाई की देर रात को पुलिस ने देवास के उज्जैन रोड स्थित बांगर गांव में मेपल्स ब्लू होटल में छापा मार कर सैक्स रैकेट का खुलासा किया. इस काररवाई में पुलिस ने दिल्ली की 6 लड़कियों समेत एक दरजन से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया है.

पुलिस की जांच में पता चला है कि दिल्ली की लड़कियों को एक दलाल ले कर आया था. देवास में अभी तक का यह सब से बड़ा सैक्स रैकेट पकड़ा गया था. सीएसपी विवेक सिंह चौहान ने बताया कि इस होटल का नाम पहले ओशो था, बाद में इस का नाम मेपल्स ब्लू कर दिया गया.

यह होटल पहले भी जुए के कारण पूरे जिले में बदनाम हो चुका है. कुछ समय पहले इसी होटल के स्विमिंग पूल में एक युवक की मौत हो चुकी है.

जब से होटल बना है तब से इस में कोई न कोई गैरकानूनी गतिविधि चलती रही है. इस होटल के 4 पार्टनर हैं, जिन में एक पुलिस अधिकारी भी है. उस की तैनाती इस समय उज्जैन में है.

पुलिस ने जब होटल में छापा मारा तो उस समय अलगअलग कमरों में 6 युवक युवतियों के संग आपत्तिजनक अवस्था में थे. सभी युवतियां दिल्ली की रहने वाली थीं. उन्हें देह व्यापार के लिए देवास लाया गया था.

किनारे खड़ी 16-17 साल की उन लड़कियों को जरूर देखा होगा, जो खुले बालों के साथ, कमर मटकाती खुद के बिकने का इंतजार करती हैं.

रतलाम में मंदसौर, नीमच की ओर जाने वाले महू-नीमच राष्ट्रीय मार्ग पर जावरा से करीब 7 किलोमीटर दूर स्थित बगाखेड़ा गांव से बांछड़ा समुदाय के डेरों की शुरुआत होती है.

यहां से करीब 5 किलोमीटर दूर हाईवे पर ही परवलिया डेरा स्थित है. इस डेरे में बांछड़ा समुदाय के लगभग 50 परिवार रहते हैं.

बांछड़ा समुदाय के परिवार मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के रतलाम, मंदसौर व नीमच जिले में रहते हैं. इन तीनों जिलों के कुल 68 गांवों में इस समुदाय के डेरे बसे हुए हैं.

रतलाम जिले में रतलाम, जावरा, आलोट, सैलाना, पिपलौदा व बाजना तहसील, मंदसौर जिले में मंदसौर, मल्हारगढ़, गरोठ, सीतामऊ, पलपुरा, सुवासरा तथा नीमच में नीचम, मनासा व जावद तहसील में इन के डेरे हाईवे के दोनों तरफ देखे जा सकते हैं.

पिछली जनगणना में सरकार को

मेपल्स ब्लू होटल में सैक्स रैकेट पकड़ने के बाद होटल को सील करते अधिकारी

पूछताछ में पता चला कि आरोपी अशोक नाथ निवासी राजगढ़, जयेश विश्वकर्मा निवासी धार, सूरजभान राजपूत, विनोद राठौर, अमित गुप्ता, राहुल गुप्ता सभी निवासी दिल्ली और विनोद इंदौर का रहने वाला है. पुलिस ने इन के खिलाफ अनैतिक देह व्यापार अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर लिया.

पुलिस ने वहां से 3 कारें भी जब्त कीं जिन में से 2 दिल्ली की थीं. इन्हीं से युवतियों को दिल्ली से लाया गया था.

जिस मेपल्स ब्लू होटल में देह व्यापार का कारोबार हो रहा था, उसे अशोक नाम का शख्स चला रहा था. फिलहाल यह होटल लीज पर अशोक नाम के व्यक्ति को दिया गया था, जो यहां कई महीनों से सैक्स रैकेट का कारोबार चला रहा था.

इस के पहले भी 5 जून को पुलिस ने इसी मेपल्स ब्लू होटल पर छापेमारी कर सैक्स रैकेट का भंडाफोड़ किया था. उस समय भी जो युवतियां गिरफ्तार हुई थीं, वह दिल्ली से लाई गई थीं. सभी आरोपियों के खिलाफ बीएनपी थाने में विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया था. ○

मंदसौर से चौंकाने वाले आंकड़े मिले थे. इस के अनुसार, मदंसौर के 38 गांवों में 1047 बांछड़ा परिवार थे, जिन की कुल आबादी 3435 थी. इन में 2243 महिलाएं और महज 1192 पुरुष थे. यानी पुरुषों के मुकाबले दोगुनी महिलाएं.

इसी तरह नीमच जिले के 24 बांछड़ा बाहुल्य गांवों में 1319 बांछड़ा परिवारों में 3595 महिलाएं और 2770 पुरुष पाए गए. आंकड़ों के मुताबिक, करीब 35 हजार आबादी वाले समुदाय में लगभग 7 हजार महिलाएं वेश्यावृत्ति के काम में लगी हैं, जिन में से करीब 2 हजार नाबालिग हैं.

समुदाय में 10 से 12 साल की बच्चियों को अपने मातापिता द्वारा जबरन देह व्यापार में डाल दिया जाता है. एक लड़की के पास एक दिन में 10 से 12 ग्राहक आते हैं. वो एक दिन में करीब 2 हजार रुपए कमा लेती है.

बांछड़ा समुदाय के लोगों के जिस्मफरोशी के इस धंधे में आने की कहानी कम दिलचस्प नहीं है. मंदसौर व नीमच जिला वैसे तो अफीम उत्पादन के लिए दुनियाभर में प्रसिद्ध है, इन जिलों की पहचान संयुक्त रूप से बांछड़ा समुदाय के परंपरागत देह व्यापार के कारण भी होती है.

बांछड़ा समुदाय की उत्पत्ति कहां से हुई, इस का कुछ लिखित प्रमाण नहीं है. जहां समुदाय के लोग खुद को राजपूत बताते हैं, जो राजवंश के इतने वफादार थे कि इन्होंने दुश्मनों के राज जानने के लिए अपनी महिलाओं को गुप्तचर बना कर वेश्या के रूप में भेजने में संकोच नहीं किया था.

वहीं कुछ लोगों का तर्क है कि करीब डेढ़ सौ साल पहले अंगरेज इन्हें नीमच में तैनात अपने सिपाहियों की वासनापूर्ति के लिए राजस्थान से लाए थे. इस के बाद यह नीमच के अलावा रतलाम और मंदसौर में भी फैलते गए.

बांछड़ा समुदाय की विशेषता यह है कि यह हमेशा ग्रुप में रहता है, जिन्हें डेरा कहते हैं. इस समुदाय के अधिकतर लोग झोपड़ीनुमा कच्चे मकानों में रहते हैं. इन की बस्ती को सामान्य बोलचाल की भाषा में डेरा कहते हैं.

इन के बारे में यह भी कहा जाता है कि मेवाड़ की गद्दी से उतारे गए राजा राजस्थान के जंगलों में छिप कर अपने विभिन्न ठिकानों से मुगलों से लोहा लेते रहे थे.

कुछ लोगों का तर्क है कि करीब डेढ़ सौ साल पहले अंगरेज इन्हें नीमच में तैनात अपने सिपाहियों की वासनापूर्ति के लिए राजस्थान से लाए थे. इस के बाद यह नीमच के अलावा रतलाम और मंदसौर में भी फैलते गए.

माना जाता है कि उन के कुछ सिपाही नरसिंहगढ़ में छिप गए और फिर वहां से मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले के काडिया चले गए. जब सेना बिखर गई तो उन लोगों के पास रोजीरोटी चलाने का कोई जरिया नहीं बचा, गुजारे के लिए पुरुष राजमार्ग पर डकैती डालने लगे तो महिलाओं ने वेश्यावृत्ति को पेशा बना लिया. ऐसा कई पीढ़ियों तक चलता रहा और बाद में यह परंपरा बन गई.

बांछड़ा समुदाय के लोग किसी जमाने में खानाबदोश जीवन व्यतीत करते थे. एक गांव से दूसरे गांव भ्रमण

बांछड़ा समुदाय के एक युवक को औद्योगिक प्रशिक्षण का प्रमाणपत्र देते एसपी

कर अपना गुजरबसर करते थे, मगर यह सब अब इतिहास का हिस्सा बन कर रह गया है.

गांव के एक बुजुर्ग हुकमल बांछड़ा का कहना है, ''बांछड़ा समुदाय में लड़कियों को वेश्यावृत्ति में भेजना हमारी परंपरा का हिस्सा है और यह सदियों से चला आ रहा है.''

वह एक किस्सा सुनाते हुए कहते हैं, ''पहले हमारे लोग गांव में नहीं रहते थे. वे एक रात कहीं रुकते थे तो दूसरी रात उन का डेरा कहीं और होता था. एक बार शहर में चोरी हो गई और पुलिस ने हमारे लोगों को पकड़ लिया. तब थानेदार की निगाह हमारी एक लड़की पर पड़ी. लड़की बहुत सुंदर थी. उस ने बोला कि एक रात मुझे इस लड़की के साथ रहने दो और उस के बाद गांव छोड़ कर निकल जाओ.''

हुकमल बांछड़ा ने आगे कहा, ''उस दिन उस लड़की ने बापदादा की जान बचाई. उस दिन हमारे समाज के लोगों में यह बात बस गई कि लड़कियां जान बचाती हैं. हम लोगों के पुरखों ने चोरीचकारी जैसा कुछ काम नहीं किया था, लेकिन झूठा आरोप लगा दिया गया.

''बस, वहीं से यह कहावत आ निकली कि लड़की जान बचाती है. समाज को लगने लगा कि लड़की किसी भी समस्या का समाधान निकाल लेती है और तब से इस परंपरा की शुरुआत हो गई.''

इन के देह व्यापार में उतरने की कहानी मुगल सम्राट शाहजहां से भी जुड़ी हुई बताई जाती है. इस कहानी की सत्यता की जांच अब तक नहीं की गई है. फिर भी समुदाय के लोगों का मानना है कि देह व्यापार का काम तभी शुरू हुआ, जब आगरा में ताजमहल बनने का खयाल आया.

दरअसल, मुमताज महल की मौत के बाद 1632 में ताजमहल का निर्माण शुरू हुआ. शाहजहां ने इस काम को पूरा करने के लिए दुनिया भर से सब से अच्छे कारीगरों को जमा किया. मुख्य आर्किटेक्ट उस्ताद अहमद लाहौरी इन मजदूरों को ले कर आए थे.

शर्त के अनुसार, वह मजदूर कहीं और काम नहीं कर सकते थे. यानी उन का दिन और रात केवल ताजमहल के निर्माण के लिए थी. ऐसे में मजदूरों का मन लगा रहे, इसलिए नाटक नौटंकी का इंतजाम किया गया.

हर रोज नए करतबबाजों को तलाशना मुश्किल था, इसलिए उस्ताद ने मालवा से बेड़िया, बांछड़ा समाज के लोगों को आगरा के आसपास ही बसा लिया. इस समाज के लोग पहले नाचनेगाने का काम भी करते थे. वहीं पर खेल, तमाशे और संगीत के बीच देह व्यापार की शुरुआत हुई.

ताजमहल का निर्माण 21 साल चला, तब तक बेड़िया बांछड़ा समुदाय की एक पीढ़ी गुजर गई. ताजमहल का निर्माण पूरा होने के साथ ही समुदाय के कुछ लोग आगरा में ही बस गए और बाकी मालवा लौट आए. जब वे लौटे तो संगीत को पीछे छोड़ आए थे और साथ आ गया था देह व्यापार.

संगीत कार्यक्रम के लिए जहां ग्राहक तलाशना मुश्किल था, वहीं देह व्यापार में ग्राहकों का तांता लग गया. देखते ही देखते समाज के पुरुषों ने वाद्ययंत्रों से किनारा किया और दलाली के काम में उतर गए. आज मालवा के मंदसौर में इस समाज की मुख्य देहमंडी है.

भारत में समाज का एक बड़ा हिस्सा जहां बेटी के जन्म को अभिशाप मानता है और कोख में बेटियों को मारने की घटनाएं मीडिया की सुर्खियां बनती हैं, वहीं इस समुदाय में बेटी के जन्म होने पर जश्न मनाया जाता है.

बांछड़ा जाति की लगभग 200 बस्तियों में समाज की सब से बड़ी लड़की को समुदाय की रीति, रस्म और परंपरा के अनुसार वेश्यावृत्ति का शर्मनाक काम अपनाना ही पड़ता है. बांछड़ा समुदाय में प्रथा के अनुसार घर में जन्म लेने वाली पहली बेटी को जिस्मफरोशी करनी ही पड़ती है.

एकदूसरे को प्रेम करने वाले यदि बालिग हों तो उन्हें विवाह कर जिंदगी भर साथ निभाने की स्वतंत्रता कानून देता है, लेकिन बांछड़ा समुदाय में बालिगों को इस तरह के फैसले लेने का हक नहीं दिया जाता.

इस दिशा में कोई एक कदम आगे बढ़ा भी तो फैसले के मुताबिक युवक को अपनी होने वाली पत्नी के परिजनों को बदले में लाखों रुपए चुकाने पड़ते हैं.

कहा जाता है कि यह वसूली एक ही बार में इस कारण की जाती है क्योंकि लड़की से देह व्यापार कराने से होने वाली आमदनी विवाह के बाद हमेशा के लिए खत्म हो जाती है. साथ में पंचायत का खर्च भी देना होता है.

भारत में समाज का एक बड़ा हिस्सा जहां बेटी के जन्म को अभिशाप मानता है और कोख में बेटियों को मारने की घटनाएं मीडिया की सुर्खियां बनती हैं, वहीं इस समुदाय में बेटी के जन्म होने पर जश्न मनाया जाता है.

25 अप्रैल, 2016 को एक बांछड़ा समुदाय के युवकयुवती ने इसी परंपरा के प्रति विद्रोह करने का साहस दिखाया था. दोनों सीधे तत्कालीन एसपी मनोज कुमार सिंह के सामने पेश हुए और स्पष्ट तौर पर बताया कि युवती से 2 सालों से देह व्यापार कराया जा रहा था.

गांव में अपनी ही बिरादरी के युवक से वह शादी करना चाहती थी, तब पंचायत बैठाई गई और युवक से दंडस्वरूप 50 हजार रुपए केवल इस

पुलिस रेड में पकड़ी गईं बांछड़ा युवतियां और उन के ग्राहक

बात के वसूल किए गए कि उस ने शादी के बारे में सोचने की गुस्ताखी क्यों की.

इस दंड के बाद उसे सख्त हिदायत भी दी गई कि युवती की तरफ पलट कर देखा तो परिणाम गंभीर हो सकते हैं. दंड भोगने के बाद युवक खरगोन चला गया, लेकिन युवती इस दलदल से बाहर निकलना चाहती थी. उस ने हिम्मत दिखाई और खरगोन जा कर उस ने युवक के साथ कोर्टमैरिज कर ली.

इस के बाद नीमच एसपी के सामने दोनों पेश हो गए. एसपी ने मामले की गंभीरता समझी और उन्होंने उस नवदंपति को अपने ही गांव में रहने के लिए सुरक्षित व्यवस्था कराई.

इस समुदाय के युवा बताते हैं कि अब तक जात में आपसी विवाह जितने भी हुए हैं, अधिकांश में युवकों को 10 से 12 लाख रुपए या इस से अधिक भी वधू मूल्य चुकाना पड़ा है. ताजा हालात यह हैं कि भले ही पढ़ेलिखे नौजवान हैं, लेकिन उन की हालत लाखों रुपए चुकाने जैसी नहीं है, इसलिए वे कुंवारे बैठे हैं.

समुदाय के लोग देह व्यापार का पक्ष लेते हुए यहां भी नियमों का हवाला देते हैं. जैसे एक नियम के अनुसार इन महिलाओं या बच्चियों के साथ उन के समाज का कोई भी पुरुष संबंध नहीं बना सकता. यदि ऐसा होता तो उसे समाज से निष्कासित कर दिया जाता है.

यदि वह युवती से शादी करना चाहे तो उसे युवती के पिता को लगभग 15 लाख रुपए का दहेज देना अनिवार्य है. यानी उतनी कमाई, जितनी एक लड़की अपने जीवन में पिता को दे सकती है.

शिक्षक योगेश सारवाड़ कहते हैं कि इस समाज ने इस तरह के नियम बनाए हैं कि कोई भी लड़का लड़कियों से शादी न कर सके और वह देह व्यापार के लिए मजबूर हो जाएं.

नियम के अनुसार शादीशुदा महिलाएं देहव्यापार नहीं करतीं. यानी जब तक शादी नहीं हुई है वे सार्वजनिक उपभोग की वस्तु हैं और उस के बाद निजी. बांछड़ा समुदाय में ऐसा काम करने वाली औरतों को खिलावड़ी कहा जाता है.

यह महिलाएं अपना जिस्म बेच कर

पैसा कमाती हैं, लेकिन समाज में इसे बुरा नहीं माना जाता. बल्कि यहां ऐसी औरतों को सम्मान भी खूब मिलता है और यह लोग संयुक्त परिवार में रहते हैं. समाज में महिलाओं का रुतबा पुरुषों के मुकाबले ऊंचा होता है.

बांछड़ा समुदाय में प्रचलित इस प्रथा ने मन को झकझोर दिया था. सफर के दौरान ही विचार आया कि क्यों न देह व्यापार करने वाली कुछ लड़कियों से मिल कर इस की तह तक पहुंचा जाए.

तब हम ने रतलाम के एक पत्रकार मित्र को फोन लगा कर संपर्क किया तो उन्होंने बताया कि बांछड़ा समुदाय की एक लड़की है, जो इस समुदाय में जागरुकता के लिए काम कर रही है. उन के द्वारा बताए गए ठिकाने पर पहुंच कर हम ने विस्तार से बातचीत की तो देह व्यापार के इस शर्मनाक धंधे की कहानी हमें पता चली.

15 साल की उम्र में जिस्मफरोशी के दलदल में कदम रखने वाली निशा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उस ने बचपन से अपने आसपास की लड़कियों को यह काम करते हुए देखा था, मगर सोचा नहीं था कि ऐसा समय भी आएगा कि उसे खुद को उन्हीं लड़कियों के साथ सड़क के किनारे पर खड़ा होना पड़ेगा.

निशा ने इस काम को करने का खूब विरोध किया था. उस ने घर वालों से कहा था कि वह पढ़ना चाहती है तो उसे मां बापू ने परंपरा की दुहाई दी.

फिर भी नहीं मानी तो कहा गया कि तुम्हारी नानी और मां ने भी यही काम किया है. आखिर में दो जून की रोटी का वास्ता दिया गया.

निशा की आंखों के सामने अपने छोटेछोटे भाईबहनों के चेहरे घूमने लगे और घुटने टेकते हुए समझौता कर लिया.

निशा भी इन्हीं परिस्थितियों से गुजर रही थी. उस का दम घुट रहा था और इसी बीच उस ने एक बेटी को जन्म दिया. इसी के बाद निशा ने ठान लिया था कि वह अपनी बेटी को अब इस पेशे में नहीं आने देगी.

उस ने कहा, ''गुस्सा आता था. गलत लगता था. तकलीफ होती थी शरीर में. लेकिन मजबूरी के कारण करना पड़ता था. नहीं करते तो खाते क्या. बहुत सारी ऐसी लड़कियां थीं, जिन्हें एड्स की बीमारी भी लग गई. संबंध बनाते समय यह भी डर लगा रहता था कि कहीं गर्भवती न हो जाएं. इस के बावजूद कई लड़कियों के कम उम्र में बच्चे भी हो गए.''

उस ने बताया कि उसी दौरान उसे एक गैरसरकारी संस्था 'जन साहस' के बारे में पता चला. यह संस्था लड़कियों को वेश्यावृत्ति से निकलने में मदद करती है. इस संस्था के लोग बांछड़ा समुदाय की लड़कियों से मिल कर उन्हें समझाते हैं. वह इस संस्था के लोगों से मिली.

संस्था ने इस में उस की मदद की और उसे अपने यहां नौकरी भी दे दी. अब निशा अपने समुदाय की दूसरी लड़कियों को कुप्रथा के इस दलदल से निकालने में मदद कर रही है. वह उन से मिलती है और उन्हें शिक्षा से जोड़ने की कोशिश करती है.

निशा की कोशिशों से समुदाय की कुछ लड़कियां इस कुचक्र से बाहर आ गई हैं लेकिन अब भी अनेक हैं, जो इस में फंसी हुई हैं.

इस कुप्रथा को खत्म करने की कोशिशों के तहत मध्य प्रदेश सरकार ने

इन के पुनर्वास के लिए वर्ष 1993 में जबाली योजना शुरू करने का ऐलान किया गया था. इस योजना के तहत समुदाय के लोगों को जागरूक किया जाना, उन्हें शिक्षा से जोड़ना, कोई काम करने के लिए ट्रेनिंग देना शामिल है.

लेकिन निशा का कहना है कि समुदाय की लड़कियों को कुछ रोजगार मिल जाए तो वे इस सब से बाहर निकल सकती हैं. वे कहती हैं, ''कमाने के लिए कुछ है भी नहीं. इसीलिए तो मजबूरी में उन्हें वही काम करना पड़ता है. लड़कियां चाहती भी हैं कि निकल जाएं लेकिन निकल नहीं पाती हैं. क्योंकि दूसरा कोई रास्ता नहीं है न उन के पास.''

बांछड़ा जनजाति के ही कुछ युवक इस कुप्रथा के खत्म करना चाहते हैं. तभी तो इस जनजाति के ही युवक आकाश चौहान ने हाईकोर्ट में एक याचिका दायर कर इस परंपरा को बंद करने की अपील की. न्यायालय ने इस संबंध में पुलिस को जरूरी काररवाई करने के आदेश दिए.

अब पुलिस इस जनजाति के डेरों पर महीने 2 महीने में दबिश डाल कर इस धंधे में लिप्त लोगों के खिलाफ काररवाई करने की इतिश्री करती है.

बांछड़ा समुदाय के लोगों का कहना है कि पुलिस ने अब उन से चौथ वसूलना शुरू कर दिया है. जब पुलिस को पैसा मिलना बंद हो जाता है तो रेड डाल कर लड़कियों व घर वालों को गिरफ्तार कर लेती है. लेकिन कोर्ट से जमानत के बाद लड़कियां फिर से इसी धंधे में जुट जाती हैं.

मध्य प्रदेश पुलिस ने बांछड़ा समुदाय को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए पहल शुरू की है. नीमच और मंदसौर जिलों में युवाओं को पुलिस भरती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है. उन्हें विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी पाठ्य सामग्री दी जा रही है. इस के अलावा लड़कियों को नर्स की परीक्षा के लिए तैयार किया जा रहा है.

समुदाय के युवाओं के निजी कंपनियों में मुफ्त प्रशिक्षण ओर रोजगार के अवसर मुहैया कराने की मुहिम में पहले चरण में 100 युवाओं को नौकरी भी दिलाने में सहायता की.

इतनी जागृति फैलाने के बाद भी इस समाज की लड़कियां पूरी तरह जिस्मफरोशी का धंधा नहीं छोड़ रहीं.

एसपी गौरव तिवारी

अशिक्षा और अंधविश्वास से घिरे बांछड़ा समुदाय की लड़कियों के जिस्मफरोशी की यह परंपरा उस समुदाय के नाकारा पुरुषों के दिमाग की उपज है, जो खुद कोई कामधंधा करने के बजाय महिलाओं के जिस्म का सौदा कर के अपने परिवार का पेट भरते हैं.

महिला सशक्तीकरण का ढोल पीटने वाली सरकार की नाकामी का ये जीताजागता उदाहरण है. 21वीं सदी में इस तरह की दकियानूसी परंपराएं समाज के लिए किसी कोढ़ से कम नहीं हैं. ●

—कथा समुदाय के लोगों से बातचीत और मीडिया रिपोर्ट पर आधारित

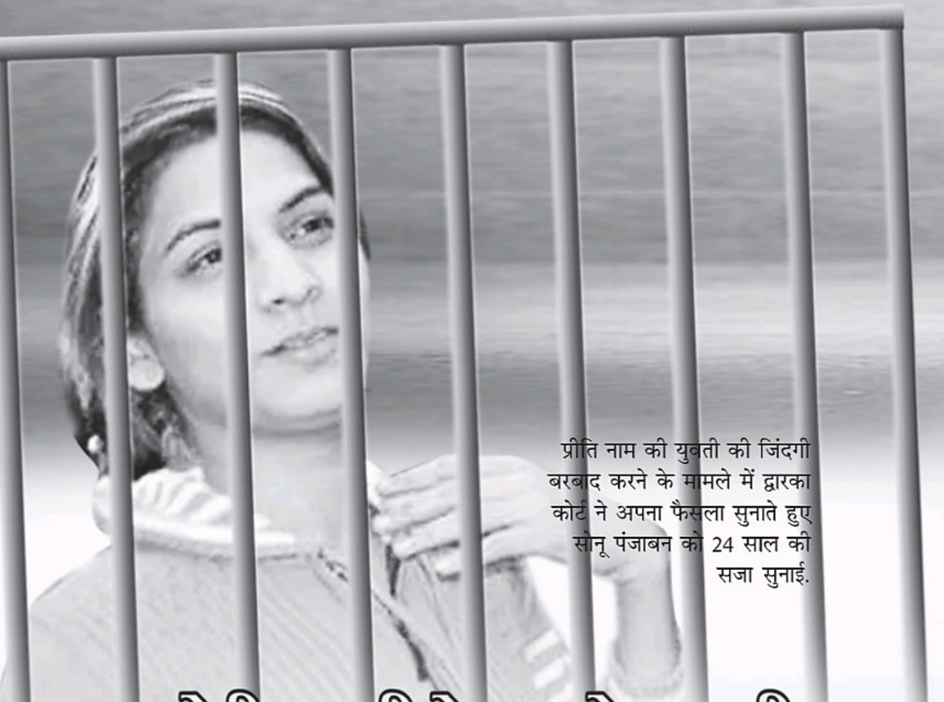

प्रीति नाम की युवती की जिंदगी बरबाद करने के मामले में द्वारका कोर्ट ने अपना फैसला सुनाते हुए सोनू पंजाबन को 24 साल की सजा सुनाई.

गोरी चमड़ी के कारोबार की बड़ी खिलाड़ी सोनू पंजाबन

—सुनील वर्मा

सोनू पंजाबन को देह व्यापार क्षेत्र की लेडी डौन के नाम से जाना जाता है. दिल्ली के एक सामान्य परिवार की लड़की गीता अरोड़ा के जीवन में आखिर ऐसे कौनकौन से मोड़ आए कि वह सोनू पंजाबन के रूप में अपनी पहचान बना कर गोरी चमड़ी के कारोबार की सब से बड़ी खिलाड़ी बन गई...

दिल्ली की तिहाड़ जेल के महिला वार्ड के विशेष सेल में बंद गीता अरोड़ा उर्फ सोनू पंजाबन (41) जमीन पर लगे बिस्तर पर लेटी छत की तरफ देखते हुए शून्य में निहार रही थी. रहरह कर अतीत का एकएक घटनाक्रम उस की आंखों के आगे चलचित्र की तरह तैर रहा था.

दिल्ली ही नहीं, देश भर के अय्याश लोगों के दिलों में सोनू पंजाबन रानी की तरह राज करती थी. चाहे किसी पांच सितारा होटल में रात की रंगीनियां बिखेरनी हों या किसी फार्महाउस में प्राइवेट पार्टी करनी हो. अमीरजादों को दिल बहलाने वाली खूबसूरत हसीनाओं की जरूरत होती तो उन्हें एक ही नाम याद आता था सोनू पंजाबन का.

यूं कहे तो गलत न होगा कि सोनू पंजाबन दिल्ली से ले कर मुंबई तक में एक ऐसा नाम रहा है, जिसे जिस्मफरोशी की दुनिया की क्वीन यानी रानी कहा जाता था.

लेकिन प्रीति के साथ उस ने जो भी किया था, उस ने एक झटके में उस की जिंदगी बदल दी. बड़ीबड़ी गाड़ियों में घूमने वाली और नोटों की गड्डियों का बिस्तर बिछा कर सोने वाली सोनू पंजाबन इन दिनों जेल की सलाखों के पीछे पथरीली जमीन पर कंबलों का बिस्तर बिछा कर सोने के लिए मजबूर थी.

22 जुलाई, 2020 को

द्वारका कोर्ट के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश प्रीतम सिंह ने सोनू पंजाबन को आईपीसी की धारा 328, 342, 366ए, 372, 373 और 120बी के तहत कुल 24 सालों के कठोर कारावास की सजा सुनाई थी.

इसी मामले में सोनू के साथ संदीप बेदवाल को भी कोर्ट ने 20 सालों तक जेल में रहने की सजा सुनाई थी.

हालांकि गीता अरोड़ा उर्फ सोनू पंजाबन ने अपनी सजा को एक महीने बाद ही दिल्ली हाईकोर्ट में चुनौती दे दी थी. जिस पर जस्टिस मनोज कुमार ओहरी की एकल पीठ ने सोनू पंजाबन की याचिका पर दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी कर जवाब दाखिल करने के लिए कहा.

सोनू पंजाबन के वकील आर.एम. तुफैल और आस्था की सोनू के खिलाफ दिए गए ट्रायल कोर्ट का फैसले को टालने व उसे जमानत दिए जाने की याचिका पर सुनवाई टलती रही.

सोनू पंजाबन कभी दिल्ली शहर की सब से नामचीन कालगर्ल हुआ करती थी, लेकिन जल्द ही उस ने गोरी चमड़ी बेच कर पैसा कमाने की कला के सारे गुर सीख लिए तो वह बाद में खुद धंधा छोड़ कर दूसरी लड़कियों से धंधा कराने लगी और खुद बन गई कालगर्ल सरगना.

लेकिन सोनू ने आखिर ऐसा कौन सा गुनाह किया था कि जिस्मफरोशी का धंधा करने के गुनाह में अदालत को उस के खिलाफ इतनी बड़ी सजा का ऐलान करना पड़ा, जितनी सजा आज तक इस धंधे के किसी गुनाहगार को नहीं दी थी. इस के लिए सोनू पंजाबन के काले अतीत में झांकना होगा.

हिंदुस्तान के बंटवारे के बाद लाखों रिफ्यूजियों की तरह ही गीता अरोड़ा उर्फ सोनू पंजाबन के दादा अपने परिवार को ले कर पाकिस्तान से भारत चले आए थे. दादा के साथ परिवार के दूसरे लोग तो रोहतक में ही बस गए.

बाद में ओमप्रकाश अरोड़ा काम की तलाश में अपने परिवार को ले कर दिल्ली आए और यहां गीता कालोनी में किराए के मकान में रहने लगे.

वह आटोरिक्शा चलाने लगे. ओमप्रकाश के परिवार में पत्नी बीना अरोड़ा, 2 बेटे व 2 बेटियां थीं. बड़ी बेटी की शादी उन्होंने दिल्ली के ही रहने वाले सतीश से कर दी.

1981 में जन्म लेने वाली गीता से छोटे उस के 2 भाई थे. गीता परिवार की आर्थिक तंगी के कारण 10वीं कक्षा से ज्यादा नहीं पढ़ सकी.

गीता महत्त्वाकांक्षी और विद्रोही स्वभाव की थी. उस के नाकनक्श अपनी उम्र की दूसरी लड़कियों से ज्यादा आकर्षक और सुंदर थे.

गीता ब्यूटी पार्लर का कोर्स कर के गीता कालोनी के ही एक बड़े पार्लर में नौकरी करने लगी. उन दिनों दिल्ली में ब्यूटीपार्लर की आड़ में चोरीछिपे जिस्मफरोशी का धंधा जोर पकड़ रहा था. गीता जिस पार्लर मे काम करती थी, वहां भी ये काम होता था.

उन्हीं दिनों गीता की जिंदगी में विजय नाम का शख्स आया, जिस के बाद उस के जीवन ने एक नई करवट ली. विजय सिंह हरियाणा के रोहतक का रहने वाला था और पेशे से अपराधी था.

हरियाणा, दिल्ली और यूपी में लूटमार और हफ्तावसूली उस का पेशा

था. विजय सिंह जरायम से जुड़े अपने दोस्तों के पास दिल्ली में पनाह ले कर रहता था. यहीं उस की मुलाकात गीता से हुई.

दोनों में पहले प्रेम हुआ फिर गीता अरोड़ा ने परिवार के विरोध के बावजूद विजय से प्रेम विवाह कर लिया. विजय सिंह की कमाई से गीता परिवार की भी मदद करने लगी. गीता की जिंदगी मजे से गुजर रही थी. गीता ने एक बेटे को जन्म दिया.

गीता की हसंतीखेलती जिंदगी अचानक एक दिन तबाह हो गई. दरअसल, यूपी पुलिस की एसटीएफ ने विजय को उस के एक साथी के साथ गढ़मुक्तेश्वर के पास पुलिस मुठभेड़ में मार गिराया. ये 1998 की बात है. गीता पर विजय की मौत वज्रपात बन कर गिरी.

विजय की मौत के कुछ दिन बाद ही बीमारी और सदमे के कारण गीता के पिता ओमप्रकाश अरोड़ा की भी मौत हो गई. गीता के दुखों का पहाड़ और भारी हो गया. गीता ने परिवार की गुजरबसर व पेट पालने के लिए ब्यूटीपार्लर की नौकरी कर ली.

कुछसमय बाद निक्कू उस की जिंदगी में सहारा बन कर सामने आया जो उस के पहले पति विजय का दोस्त था और वह उस से पहले से परिचित थी.

निक्कू त्यागी भी दबंग और दिलेर होने के साथ अपराध की दुनिया का जानामाना नाम था. गीता बेटे को अपनी मां और भाइयों के पास छोड़ कर गीता कालोनी में ही निक्कू के साथ कमरा ले कर रखैल के रूप में उस के साथ रहने लगी. निक्कू ज्यादातर दिल्ली से बाहर ही रहता था.

इसी दौरान गीता को दिल्ली के बड़े होटलों और डांस बार में जाने की लत लग गई. वह डिस्को और पब में जाने की आदी हो गई थी.

खूबसूरत वह थी ही अकसर वहां रंगीनमिजाज रईसजादों के साथ रातें गुजारने लगी. बाद में धीरेधीरे जिस्म बेच कर पैसे कमाने का उस का ये शौक पेशे में बदल गया.

कुछ समय बाद गीता ने निक्कू से कुछ पैसा ले कर गीता कालोनी में ही अपना खुद का ब्यूटीपार्लर खोल लिया और इस की आड़ में खुद तो जिस्मफरोशी का धंधा करती ही थी, साथ में उस ने नौकरी दे कर कुछ लड़कियों को भी पार्लर में जोड़ लिया.

सब कुछ ठीक चल रहा था, लेकिन एक बार फिर उस की खुशियों को ग्रहण लग गया. साल 2000 में एक दिन ऐसा आया जब यूपी पुलिस ने निक्कू त्यागी को हापुड़ के पास मुठभेड़ में मार गिराया.

एक बार फिर गीता के सिर से उस के सरपरस्त का साया उठ गया और वह उदास हो गई. लेकिन तब तक वह जिस्मफरोशी की दुनिया के जिस धंधे में वह उतर चुकी थी, उस ने गम की परछाई को ज्यादा दिन गीता के ऊपर रहने नहीं दिया.

गीता धीरेधीरे यमुनापार के गरीब परिवार की खूबसूरत लड़कियों को अपने साथ जोड़ कर उन से धंधा कराने लगी.

एक दिन गीता की मुलाकात दीपक जाट से हुई. दीपक उस के पास आया तो था अपने जिस्म की प्यास बुझाने के लिए, लेकिन वह गीता की अदाओं और हुस्न के जाल में इस तरह उलझा कि तन ही नहीं, मन से भी उस से प्यार करने

लगा. इस के बाद तो दीपक अकसर गीता से मिलनेजुलने लगा.

ऐसा लगता था कि तकदीर ने गीता की जिंदगी में आने वाले हर मर्द के हाथों में अपराध की लकीरें बना कर भेजी थीं. नजफगढ़ इलाके का रहने वाला दीपक भी विजय और निक्कू की तरह अपराधी ही था. उस की गिनती दिल्ली के नामी वाहन चोरों में होती थी.

दिल्ली के नजफगढ़ इलाके में दीपक और उस के छोटे भाई हेमंत उर्फ सोनू का जबरदस्त खौफ था.

गीता जीवन में आई तो दीपक को लगने लगा कि जैसे भटकती जिंदगी को किनारा मिल गया हो. कुछ समय बाद दीपक ने बिना सात फेरे लिए ही गीता के साथ पतिपत्नी की तरह रहना शुरू कर दिया.

लेकिन 2003 में असम पुलिस ने दीपक को स्कौर्पियो कार चुराने के आरोप में मुठभेड़ में मार गिराया. गीता फिर तन्हा हो गई. लेकिन इस बार उस का ये तन्हापन ज्यादा दिन नहीं रहा क्योंकि इस बार उसे सहारा देने वाला कोई और नहीं वरन दीपक का छोटा भाई हेमंत उर्फ सोनू था.

दीपक के भाई हेमंत उर्फ सोनू ने भाई की मौत के बाद गीता से अपनी इकरारे मोहब्बत बयान कर उसे अपनी जिंदगी में शामिल कर लिया.

सोनू भी दिल्ली से ले कर हरियाणा और यूपी के कई गैंगस्टरों के साथ मिल कर लूट, डकैती, अपहरण, जबरन वसूली और ठेके पर हत्या करने की वारदातों को अंजाम देता था.

लेकिन 6 मार्च, 2006 को स्पैशल सेल के एसीपी संजीव यादव की टीम ने गुड़गांव के सागर अपार्टमेंट में हेमंत को उस के 2 साथियों जसवंत और जयप्रकाश के साथ मुठभेड़ में मार गिराया.

हेमंत की मौत के बाद गीता एक बार फिर अकेली हो गई. लेकिन अब तक गीता का नाम बदल चुका था. सोनू की पत्नी होने के कारण लोग उसे गीता की जगह सोनू और जाति से पंजाबी होने के कारण पंजाबन ज्यादा कहने लगे थे.

एक बार सोनू नाम क्या पड़ा कि जल्द ही गीता अरोड़ा सोनू पंजाबन के नए नाम से विख्यात हो गई. अपने अतीत की वजह से सोनू पंजाबन का अपराध से करीब का रिश्ता बन चुका था.

> सोनू पंजाबन ने किसी का आसरा लेने की जगह जिस्मफरोशी के अपने धंधे को ही चमकाने और बढ़ाने का काम शुरू किया. वह अपने धंधे को संगठित रूप से बढ़ाने व चलाने लगी.

सोनू पंजाबन हेमंत के एक दोस्त गैंगस्टर अशोक बंटी से पहले से परिचित थी. इस के बाद उस ने बुलंदशहर के अशोक उर्फ बंटी के साथ दिलशाद गार्डन में रखैल की तरह रहना शुरू कर दिया. लेकिन सोनू को शायद पता नहीं था कि अपराध से उस ने जो नाता जोड़ा है, उस से अभी उस का पीछा छूटा नहीं है.

उसे शायद ये भी नहीं पता था कि उस की किस्मत में स्थायी रूप से किसी मर्द का साथ लिखा ही नहीं था.

बंटी को अप्रैल 2006 में एक दिन दिल्ली पुलिस की स्पैशल सेल ने मुठभेड़ में मारा गिराया.

सोनू के जीवन में जो भी मर्द आया वह पुलिस के हाथों मारा गया. इसलिए अब उस ने किसी का आसरा लेने की जगह जिस्मफरोशी के अपने धंधे को ही चमकाने और बढ़ाने का काम शुरू किया. वह अपने धंधे को संगठित रूप से बढ़ाने व चलाने लगी.

सोनू गीता कालोनी इलाके में बदनामी के कारण अपने बेटे को अपनी मां और भाइयों के पास छोड़ कर साकेत के पर्यावरण कौंप्लैक्स में रहने चली गई और वहीं से धंधा औपरेट करने लगी.

गीता अरोड़ा उर्फ सोनू पंजाबन

सोनू पंजाबन को जिस्मफरोशी के आरोप में पहली बार 31 अगस्त, 2007 को प्रीत विहार पुलिस ने 7 लड़कियों के साथ गिरफ्तार किया था. इस के बाद सोनू पूरी तरह एक कालगर्ल सरगना के रूप में बदनाम हो गई.

उस ने प्रीत विहार छोड़ कर साकेत में नया ठिकाना बना लिया. लेकिन वहां भी 21 नवंबर, 2008 को साकेत पुलिस ने सोनू को सैक्स रैकेट चलाने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया.

सोनू ने फिर ठिकाना बदला और प्रीत विहार में एक दूसरा बंगला किराए पर ले लिया. लेकिन 22 नवंबर, 2009 को वहां भी प्रीत विहार पुलिस ने छापा मार दिया. सोनू को फिर से 4 लड़कियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया.

इस के बाद तो सोनू के दिमाग से पुलिस का खौफ पूरी तरह निकल गया. अब वह खुल कर बड़े पैमाने पर धंधा करने लगी.

उस ने अपराध की दुनिया से जुड़े प्रेमियों और जिस्मफरोशी के कारोबार से जुटाई गई दौलत से दिल्ली के महरौली इलाके के सैदुल्लाजाब के अनुपम एनक्लेव में एक आलीशान फ्लैट खरीद लिया और वहीं से अंडरग्राउंड रह कर धंधे का संचालन करने लगी.

सोनू अब लड़कियों को खुद ले कर नहीं जाती थी उस ने एजेंट रख लिए. सोनू ने अपने सभी फोन नंबर भी बदल लिए थे. वह आमतौर पर अंजान लोगों से फोन पर बात नहीं करती बल्कि किसी पुराने ग्राहकों का रैफरेंस देने पर ही नए ग्राहकों को लड़की उपलब्ध कराती थी.

5 अप्रैल, 2011 को सोनू को महरौली पुलिस ने 5 लड़कियों और साथ धर दबोचा. इस बार पुलिस ने उस के ऊपर मकोका कानून के तहत मुकदमा दर्ज किया.

इस बार उस के साथ पकड़ी गई लडकियों में ज्यादातर लड़कियां मौडल या टेलीविजन कार्यक्रमों में काम करने वाली अभिनेत्रियां थीं.

इस बार यह खुलासा हुआ कि सोनू का धंधा कई राज्यों तक फैल चुका था. उस का पूरा कारोबार संगठित तरीके से चलता था.

हालांकि पुलिस सोनू पंजाबन पर मकोका कानून के आरोप सिद्ध नहीं कर सकी, इसीलिए 2013 में वह

मकोका के आरोप से बरी हो कर जेल से रिहा हो गई.

3 साल जेल में रहने के बाद सोनू पंजाबन अदालत से बरी हुई तो उस ने बेहद सावधानी से अपने धंधे को आगे बढ़ाना शुरू किया. अब वह खुद सामने नहीं आती थी बल्कि अपने लोगों को सामने रख कर इस काम को करती थी.

सोनू पंजाबन ने अब लड़कियों को अपने यहां काम पर रख लिया है. इन लड़कियों को वह ग्राहक के पैसों में हिस्सा नहीं देती थी, बल्कि उन्हें एकमुश्त सैलरी देती थी.

यूं कहें तो गलत न होगा कि उस ने अपने काम करने के तरीके को एकदम कारपोरेट शैली में बदल दिया था.

उस के सिंडीकेट से जुड़े हर शख्स का काम बंटा हुआ था. कोई लड़कियों को एस्कार्ट करता था तो कोई उन का ड्राइवर बन कर उन्हें बड़ेबड़े ग्राहकों के पास छोड़ कर आता था.

सब कुछ ठीक चल रहा था, लेकिन 2011 में प्रीति नाम की एक लड़की को खरीदने के आरोप में उसे 24 साल तक जेल की सलाखों के पीछे रहने की सजा मिलेगी, यह उस ने कभी नहीं सोचा था.

दरअसल, उन दिनों प्रीति 13 साल की थी. जब वह कोंडली में स्थित दिल्ली सरकार के स्कूल में 7वीं कक्षा में पढ़ती थी. गरीब परिवार में जन्मी प्रीति के पिता एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी करते थे.

अभावों में पलीबढ़ी लेकिन सूरत व शरीर से बेहद खूबसूरत प्रीति की दोस्ती स्कूल आतेजाते संदीप बेलवाल से हो गई, जो उस से 4-5 साल बड़ा था.

संदीप कभी उसे कार तो कभी मोटरसाइकिल से घुमाने लगा. संदीप से प्रभावित होने के बाद प्रीति उस के प्यार में कुछ ऐसी दीवानी हो गई कि वह उस पर आंख बंद कर के भरोसा करने लगी.

एक दिन इसी विश्वास में प्रीति संदीप के साथ उस के जन्मदिन की पार्टी मनाने नजफगढ़ में उस की किसी सीमा आंटी के पास चली गई. बस यही उस के जीवन की सब से बड़ी भूल थी.

संदीप ने उस दिन कोल्डड्रिंक में उसे कोई मदहोश करने वाली दवा पिला कर उस की इज्जत को तारतार कर दिया.

> क्राइम ब्रांच ने एकएक कर उन लोगों को गिरफ्तार करने का सिलसिला शुरू किया जो प्रीति की जिंदगी को बरबाद करने के जिम्मेदार थे. पुलिस ने इस मामले में 2018 में सोनू पंजाबन के साथ संदीप बेदवाल को गिरफ्तार किया.

इतना ही नहीं वह उसे सीमा आंटी के पास एक लाख रुपए में बेच कर चला गया. बाद में उसे पता चला कि सीमा आंटी देहव्यापार करने वाली औरत थी और संदीप उस के साथ जुड़ा था.

इस के बाद शुरू हुआ प्रीति की जिंदगी में हर रोज होने वाले यौनशोषण का ऐसा सिलसिला जो कई साल तक चला.

सीमा आंटी ने करीब एक साल तक जबरन प्रीति से जिस्मफरोशी का धंधा कराने के बाद उसे एक दिन साउथ दिल्ली में रहने वाली सोनू पंजाबन के सुपुर्द कर दिया.

अन्य कालगर्ल्स के साथ पकड़ी गई सोनू पंजाबन

सोनू ने सीमा को कितने नोट दिए ये तो नहीं पता, लेकिन सोनू पंजाबन ने 3 महीने तक प्रीति को अपने कई ग्राहकों के पास भेजा और उस की मोटी कीमत वसूली. लेकिन 3 महीने बाद वह उसे अपने साथ लखनऊ ले गई. यहां उस ने लाला नाम के एक कालगर्ल सरगना के हवाले कर दिया.

लाला ने 2 साल तक न जाने कितने लोगों से उस के जिस्म का सौदा किया. लाला ने इस के बाद प्रीति को दिल्ली में रहने वाली मधु आंटी को बेच दिया.

वहीं पर प्रीति की मुलाकात हरियाणा के रहने वाले सतपाल व राजपाल हुई दोनों रिश्ते में सगे भाई थे. लेकिन दोनों ही जिस्मफरोशी के धंधे के दलाल थे.

एक दिन राजपाल उसे मधु आंटी के चंगुल से मुक्त कराने का झांसा दे कर अपने साथ अपने गांव पानीपत ले गया, जहां 60 साल के राजपाल ने उस से जबरन शादी कर के अपनी बीवी के रूप में घर में रख लिया.

राजपाल पहले से शादीशुदा था. परिवार में 3 बेटियां और 2 बेटे थे. एक बेटे और 2 बेटियों की शादी हो चुकी थी. इस बीच प्रीति गर्भवती हो गई तो राजपाल ने शहर ले जा कर उस का जबरन गर्भपात करवा दिया. अपने गर्भपात के बाद प्रीति के मन में राजपाल के लिए भी खटास भर गई.

बस इसी के बाद एक दिन प्रीति राजपाल की गैरमौजूदगी में उस के घर से निकल भागी और पानीपत से दिल्ली जाने वाली बस में बैठ कर नजफगढ़ पहुंच गई. यह 28 अगस्त, 2014 की बात है जब नजफगढ़ पुलिस ने प्रीति को बदहाल हालत में बरामद किया और मदद करने के लिए उसे थाने ले आई.

वहीं पर प्रीति ने पुलिस को 3 साल में अपने साथ हुए उत्पीड़न की सारी कहानी सुनाई.

नजफगढ़ पुलिस ने प्रीति के बयान पर आईपीसी की धारा 363, 366, 342, 370, 370, 372, 373, 376, 34, 120बी और पोक्सो एक्ट की विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज कर लिया.

प्रीति के बयान मजिस्ट्रैट के सामने दर्ज कर पुलिस ने उसे वूमन शेल्टर होम भेज दिया, जहां उस की काउंसलिंग होने लगी. इधर प्रीति के बयान के आधार पर जब पुलिस पड़ताल शुरू हुई तो पता चला कि 2011 में पूर्वी दिल्ली के हर्ष

विहार थाने में उस की गुमशुदगी दर्ज कराई गई थी.

सुराग लगातेलगाते पुलिस प्रीति के परिजनों तक पहुंच गई और बाद में उसे कोर्ट के आदेश से उस के मातापिता को सौंप दिया गया.

पिछले 4 सालों में प्रीति जिस्मफरोशी की दुनिया में रहने के कारण नशे की आदी हो चुकी थी. इसलिए परिवार के बीच आ कर बंदिशों में रहने के कारण जल्द ही उस का दम घुटने लगा. अगस्त, 2014 में ही एक दिन प्रीति अपने घर से किसी को बिना कुछ बताए फिर से गायब हो गई.

डीसीपी भीष्म सिंह

एसीपी संदीप लांबा

एसआई पंकज नेगी

बेटी के दोबारा गायब होने से परिवार परेशान हो गया. प्रीति के पिता ने नजफगढ़ पुलिस से संपर्क कर जब प्रीति के फिर से गायब होने व उस के किडनैप होने की आशंका जताई.

इस के बाद नजफगढ़ पुलिस ने अपहरण का मामला दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी. लेकिन पुलिस की तमाम कोशिशों के बाद भी प्रीति का कोई सुराग नहीं मिला.

वक्त धीरेधीरे गुजरने लगा और प्रीति का रहस्यमय ढंग से गायब हो जाना एक मिस्ट्री बन गया. अगस्त 2017 में 3 साल बीत जाने के बाद तत्कालीन पुलिस आयुक्त अमूल्य पटनायक ने इस मामले की जांच अपराध शाखा को सौंप दी.

जिस के बाद साइबर सेल के एसीपी संदीप लांबा की देखरेख में एक टीम बनाई गई. टीम में इंसपेक्टर उपेंद्र सिंह और लेडी सबइंसपेक्टर पंकज नेगी को शामिल किया गया.

इस टीम ने लंबी कवायद की और 23 नवंबर, 2017 को प्रीति को पानीपत के उस पार्लर से बरामद कर लिया, जहां वह नौकरी करती थी.

इस के बाद क्राइम ब्रांच ने एकएक कर उन लोगों को गिरफ्तार करने का सिलसिला शुरू किया जो प्रीति की जिंदगी को बरबाद करने के जिम्मेदार थे. पुलिस ने इस मामले में 2018 में सोनू पंजाबन के साथ संदीप बेदवाल को गिरफ्तार किया. उस के बाद राजपाल व सतपाल को गिरफ्तार किया.

बाद में लखनऊ से लाला नाम के दलाल की गिरफ्तारी की गई. इसी मामले में तेजी से सुनवाई करते हुए द्वारका कोर्ट ने अपना फैसला सुनाते हुए सोनू पंजाबन को 24 साल की सजा सुनाई.

देरसबेर सोनू पंजाबन अपनी सजा के खिलाफ अपील के बाद अदालत से जमानत ले कर सलाखों से बाहर आ ही जाएगी, लेकिन उस के बाद जिस्मफरोशी के कारोबार में उस की क्या भूमिका होगी, यह देखना होगा.●

—कथा पुलिस की जांच पर आधारित

लुधियाना के होटल में बिकता जिस्म

शहर में चल रहे जिस्मफरोशी के धंधे पर लगातार लुधियाना पुलिस शिकंजा कस रही है, लेकिन बारबार ऐसे मामले सामने आ ही जाते हैं. ऐसे ही एक मामले में एक मकान पर छापेमारी कर एक महिला को गिरफ्तार किया. वह ग्राहकों और लड़कियों को अपने घर पर ही बुलाती थी.

जबकि दूसरे मामले में 2 सितंबर, 2021 को पुलिस ने लुधियाना के बस स्टैंड के पास स्थित होटल पार्क ब्लू में रेड कर के वहां पर चल रहे देह व्यापार के अड्डे पर छापेमारी की. मौके पर पहुंची पुलिस पार्टी और सीआईए-2 टीम ने वहां पर ऐशपरस्ती कर रहे 6 युवक व 6 युवतियों को गिरफ्तार किया. मौका देख कर होटल का मालिक व मैनेजर पुलिस को गच्चा दे कर फरार हो गए.

घटना 2 सितंबर को शाम करीब पौने 8 बजे की है. थाना डिवीजन नंबर 5 व सीआईए-2 टीम बस स्टैंड के आसपास स्थित होटलों में रुटीन जांच करने पहुंची थी. उस दौरान पुलिस ने कई होटलों में जा कर चैकिंग की.

वहां रह रहे लोगों का रिकौर्ड चैक किया. इसी बीच पुलिस की टीम जब होटल पार्क ब्लू में पहुंची तो उस के अलगअलग कमरों में 6 जोड़े आपत्तिजनक स्थिति में पाए गए. जिन्हें साथ में आई महिला पुलिस ने हिरासत में ले लिया.

करीब एक साल पहले भी इसी होटल में पुलिस ने दबिश दे कर वहां रंगरलियां मना रहे कई जोड़ों को गिरफ्तार किया था. लुधियाना ही नहीं पंजाब के जालंधर व अन्य शहरों में भी देह व्यापार के मामले लगातार बढ़ रहे हैं.

लुधियाना पुलिस ऐसे मामलों में काफी तेजी से कारवाई कर रही है लेकिन जालंधर पुलिस ऐसे मामलों में ढीली साबित हो रही है. जालंधर में कई होटलों, गेस्ट हाउसों व अन्य स्थानों पर ऐसे गलत धंधे चल रहे हैं, पर पुलिस मूकदर्शक बनी तमाशा देखती रहती है. ●

देह व्यापार का एक बाजार ऐसा भी है, जहां के सैक्सवर्कर औरतें नहीं बल्कि मर्द होते हैं. जिन्हें जिगोलो कहा जाता है. उन्हें यौन पिपासा से भरी औरतों को हर तरह से खुश करना होता है. आजकल जिगोलो की मांग लगातार बढ़ती जा रही है. इस धंधे में मोटी कमाई तो होती ही है साथ ही...

पुरुष वेश्यावृत्ति जिस्म के बाजार में जिगोलो

—प्रेक्षा सक्सेना

भरे बदन वाली एक अधेड़ महिला कमसिन दिखने की अदाओं के साथ ड्राइंगरूम में खड़ी थी. वहीं कुछ दूसरी महिलएं सिगरेट का धुंआ उड़ाती कुछ दूरी बना कर सोफे पर क्रास टांगों के साथ बैठी थीं. सभी के बीच अपनेअपने सैक्स अपील वाले यौवन को दर्शाने की होड़ सी दिख रही थी.

इसी बीच बलिष्ठ चुस्त टीशर्ट और टाइट पाजामे में एक युवक वहां आया. वहां वह सिर्फ उसी माहिला को पहचानता था, जो खड़ी थी. वह महिला उस के पास आई और बोली, ''तुम को मालूम है कि तुम कहां खड़े हो. यहां जिस्म का बाजार लगता है.''

यह सुनते ही युवक चौंक पड़ा,''क्या ?''

महिला उस की कान के पास मुंह लगा कर बोली, ''यहां तुम मेरे रिश्तेदार नहीं, केवल एक मर्द हो. नीले, गुलाबी बल्बों की रोशनी में तुम्हें अपनी अदाएं बिखेरनी हैं. बैठी महिलाओं को अट्रैक्ट करना है. बदले में तुम्हें ये अमीर महिलाएं मुहमांगी कीमत देंगी. आज तुम एक बिकाऊ मर्द हो, देखती हूं तुम्हारी कौन कितनी बोली लगाती है...''

युवक चुपचाप महिला की बातें सुनता रहा. उस ने इसी क्रम में कुछ हिदायतें भी दीं. बोली, ''तुम्हें यहां सभी के चेहरे पर सैक्स के भूख की एक ललक साफ तौर पर दिख रही होगी. याद रखना ये ललक जब तक दिखती रहेगी तब तक तुम्हारी मांग बनी रहेगी.''

''जी भाभी,'' युवक बोला.

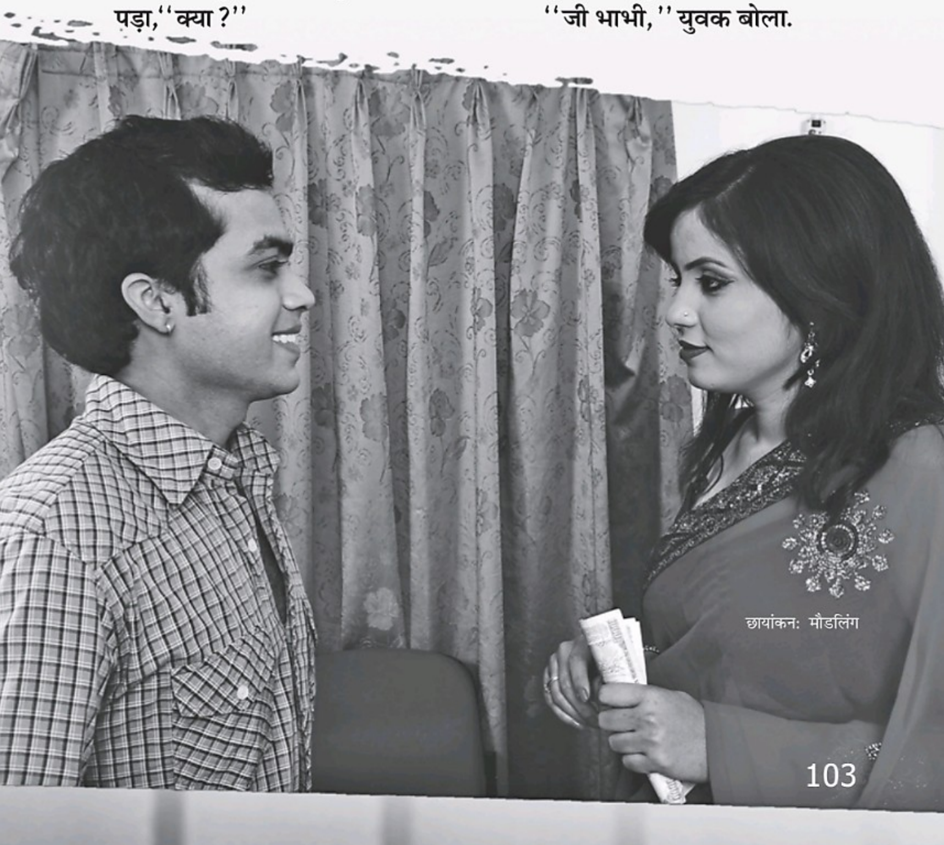

छायांकन: मौडलिंग

''नहींनहीं, यह नाम नहीं, यहां मैं तुम्हारी मैडम हूं, मैडम एम.''

''जी समझ गया.'' युवक बोला.

''आओ, तुम्हारा सभी से परिचय करवाती हूं. उन की तारीफ मैडम के साथ एक अक्षर जोड़ कर करना.'' कहती हुई मैडम एम ने पास बैठी महिला की ओर इशारा किया, ''ये हैं मैडम एस... और ये हुई मैडम डी, ये हैं मैडम एक्स, वाई और...''

इस तरह से मैडम एम ने युवक का हाथ पकड़ कर वहां बैठीं 8 महिलाओं से उस का परिचय करवा दिया. फिर सब की ओर मुखातिब हो कर बोली, ''मैडमों, अब खेल शुरू किया जाए, जिसे जो ड्रिंक लेना है, प्लीज किचन से जा कर ले सकती हैं...सेल्फ सर्विस है...ग्लास खाली होने पर उसे भरने के लिए ये है ही...'' युवक की ओर उंगली उठाती हुई बोली.

मैडम एम ने सेंटर टेबल के नीचे से रिमोट निकाला और धीमी चल रही म्यूजिक की वौल्यूम बढ़ा दी. म्यूजिक तेज होते ही कइयों के पैरों की थिरकन बढ़ गई, जबकि कुछ महिलाएं बैठेबैठे ही अपने हाथों को नृत्य की मुद्रा में लहराने लगीं. एक महिला सोफे से उठी और कमर को डांस के मोड में लचकाती हुई किचन की तरफ बढ़ गई.

इस तरह से मर्द वेश्यावृत्ति के लिए छोटी सी मंडी सज गई, जिसे अज्ञात महिला की देखरेख में आयोजित किया गया था. ऐसा वह हर सप्ताह के वीकेंड पर करती थी.

अमीर घरों की औरतें ग्राहक हुआ करती थीं. वे हर सप्ताह कुछ नया पाने की ललक लिए आती थीं और आधी रात तक मौजमजा करती थीं.

इस मंडी के लिए हर बार किसी नए मर्द की तलाश की जाती थी. उसे बदले में अच्छी रकम मिल जाती थी. उस रोज मैडम एम यानी मालती को कोई युवक नहीं मिल पाया था. वह इस के लिए शनिवार की सुबह तक बहुत बेचैन थी.

उसी दौरान पीजी में रहने वाला उस के दूर के एक रिश्तेदार ने फोन पर अपनी समस्या बताई. पढ़ाई का खर्च निकालने के लिए उस ने कहीं पार्टटाइम जौब दिलवाने की रिक्वेस्ट की.

थोड़ी देर सोचने के बाद मालती ने उसे ही जिगोलो बनने के लिए राजी कर उसी शाम सजने वाली देह की मंडी में बुला लिया. साथ ही युवक से कुछ वादे भी लिए.

दिल्ली में अपने दम पर पढ़ाई का खर्च निकालना मुश्किल हो रहा था. उसे कोचिंग के लिए मोटी रकम की भी जरूरत थी. मालती का प्रस्ताव सुन कर उसे लगा कि उस का जमीर मर रहा है.

फिर उस के मन में अपने परिवार का भी खयाल आया, जहां कोई सोच भी नहीं सकता कि वह ऐसा भी कर सकता है. उस ने पैसे की जरूरत पूरी करने के लिए अपना जमीर बेच डाला.

युवक मालती से केवल इतना पूछ पाया, ''मुझे कब तक रुकना होगा, पढ़ाई भी करनी है.''

इस का जवाब मालती ने दे दिया. वह खुश हो गई उसे एक नया माल... एक नया छैला मिल गया था. अब उसे ग्राहकों की बुकिंग नहीं लौटानी पड़ेगी. इसी के साथ मालती ने उस की कुछ तसवीरें मंगवाईं.

तसवीर की मांग पर युवक सोच में पड़ गया कि कोई रिश्तेदार देख लेगा तो उस के भविष्य का क्या होगा. इस की चिंता भी मालती ने दूर कर दी. तुरंत अपने फ्लैट पर बुलाया. चेहरे की पहचान छिपा कर अपने मोबाइल से कुछ तसवीरें खींच लीं.

पहले दाईं तरफ से, फिर बाईं तरफ से और उस के बाद सामने से तसवीर खींची गई. सभी तसवीरें अंडरगारमेंट में थीं. युवक को उस की 3 आकर्षक फोटो दिखा कर बाकी डिलीट कर दी गईं. उन में युवक को पहचानना मुश्किल था.

दिल्ली में अपने दम पर पढ़ाई का खर्च निकालना मुश्किल हो रहा था. उसे कोचिंग के लिए मोटी रकम की भी जरूरत थी. मालती का प्रस्ताव सुन कर उसे लगा कि उस का जमीर मर रहा है.

उस के सामने तसवीरों को वाट्सऐप पर भेज दिया गया. तसवीरों के साथ लिख दिया गया, ''नया माल है, रेट ज्यादा लगेगा. कम पैसे का चाहिए तो दूसरे को भेजती हूं.''

एक से बढ़ कर एक खूसबूरत महिलाएं युवक की बोली लगाने लगीं, जो अंत में 5 हजार रुपए में तय हुई. इस में युवक को क्लाइंट के लिए सब कुछ करना था.

इस बारे में युवक ने अपना अनुभव शेयर करते हुए नाम नहीं उजागर करने की शर्त पर बताया, ''मैं जिंदगी में पहली बार ये करने जा रहा था. बिना प्यार, इमोशंस के कैसे करता. एक अंजान के साथ करना होगा, यह सोच कर मेरा दिमाग चकरा रहा था.''

उस ने आगे बताया, ''वो शायद 32-34 साल की शादीशुदा महिला थी. बातें शुरू हुईं और उस ने कहा कि वह गलत जगह फंस चुकी है. पति गे है. वह अमरीका में रहता है. तलाक दे नहीं सकती. फिर एक तलाकशुदा औरत से कौन शादी करेगा. मेरा भी अलगअलग चीजों का मन होता है, बताओ क्या करूं.''

उस के बाद महिला ने हिंदी गाने लगवाए और डांस करने लगी. थोड़ी देर में शुरू किया. हम दोनों डाइनिंग रूम से बैडरूम गए. अब तक उस ने मुझ से प्यार से बात की थी. काम जैसे ही खत्म हुआ, पैसे दे कर बोली, ''चल कट ले, निकल यहां से.''

उस ने मुझे टिप भी दी. मैं ने उस से कहा, ''मैं ये सब पैसों की मजबूरी की वजह से कर रहा हूं.''

उस ने कहा, ''तेरी मजबूरी को तेरा शौक बना दूंगी.''

मेरी मजबूरी जो दिल्ली से सैकड़ों किलोमीटर दूर मेरे घर से शुरू हुई थी. मेरी लोअर मिडिल क्लास फैमिली को मैं अनलकी लगता था, क्योंकि मेरे जन्म के बाद ही पिता की नौकरी चली गई. वक्त के साथ ये दूरियां बढ़ती गईं.

मेरा सपना एमबीए करने का था लेकिन इंजीनियरिंग करने को मजबूर किया गया. नौकरी नहीं लगी. फिर कंपटीशन की तैयारी कर दी. उस के लिए अतिरिक्त खर्च से मैं परेशान रहने लगा.

उन्हीं दिनों डिफेंस कालोनी में रहने

वाली दूर की रिश्तेदार के बारे में मालूम हुआ. उन से मिला. वह तलाकशुदा महिला निकली, लेकिन अपने दम पर छोटा सा बुटीक चला रही थी. पति अपने मातापिता के साथ बंगलुरु में शिफ्ट हो चुका था, उस से कोई बच्चा नहीं था.

हर छोटीबड़ी परेशानी में वह मेरा आत्मविश्वास बढ़ा देती थी. उस ने कई बार डिप्रेशन से बाहर निकाला था. हालांकि मुझे इंटरनेट पर मेल एस्कार्ट यानी जिगोलो के बारे में थोड़ीबहुत जानकारी थी.

ऐसा फिल्मों में देखा था. कुछ वैसी वेबसाइट्स के बारे में भी जानकारी थी. जहां जिगोलो बनने के लिए प्रोफाइल बनाई जा सकती थी. संयोग कहें या फिर मेरी किस्मत कि मैं जिस्म की बोली लगने वाली महिलाओं के बीच आ गया था.

उस रात मैं ने जिगोलो बनने की परीक्षा अच्छे नंबरों से पास कर ली. ऐसा मैडम एम ने आधी रात को मेरी पीठ थपथापते हुए कहा. मैं वहीं थका हुआ सो गया. सुबह कालबैल की आवाज से नींद खुली.

दरवाजे पर मालती को मुसकराते हुए देखा. मैं झेंप गया और फ्रैश होने के लिए बाथरूम में घुस गया.

उस के बाद मैं दुविधा से घिर गया. यह कहें मैं 2 विचारों की दहलीज पर खड़ा था. एक, दहलीज से पीछे हट कर सुसाइड कर लूं. दूसरा, दहलीज के पार जा कर जिगोलो बन जाऊं.

अंततः मैं ने दहलीज को लांघने का फैसला कर लिया. मैं जिन औरतों से मिला, उन में शादीशुदा तलाकशुदा, विधवा और सिंगल लड़कियां भी शामिल थीं.

एक बार एक पतिपत्नी ने साथ में बुलाया. पति सोफे पर बैठा शराब पीते हुए हमें देखता रहा. मैं उसी के सामने पलंग पर उस की पत्नी के साथ था. ये काम दोनों की रजामंदी से हो रहा था. शायद दोनों की ये कोई डिजायर रही हो.

इन में से ज्यादातर के लिए मैं एक इंसान नहीं माल था. जब तक उन की इच्छाएं पूरी न हो जातीं, सब अच्छे से बात करतीं. कहती कि मैं अपने पति को तलाक दे कर तुम्हारे साथ रहूंगी. लेकिन बैडरूम में बिताए कुछ वक्त के बाद सारा प्यार खत्म हो जाता.

सुनने को मिलता, ''चल निकल यहां से. पैसा उठा और भाग.''

और कई बार गालियां भी सुनने को मिलतीं. ये सोसाइटी हम से मजे भी लेती है और हम ही को प्रास्टीट्यूट कह कर गालियां भी देती है.

एक बार एक पतिपत्नी ने साथ में बुलाया. पति सोफे पर बैठा शराब पीते हुए हमें देखता रहा. मैं उसी के सामने पलंग पर उस की पत्नी के साथ था. ये काम दोनों की रजामंदी से हो रहा था. शायद दोनों की ये कोई डिजायर रही हो.

इसी बीच 50 साल से ज्यादा उम्र की महिला भी मेरी क्लाइंट बनी. वह मेरी जिंदगी का सब से अलग अनुभव था. पूरी रात वह बस मुझ से बेटाबेटा कह कर बात करती रहीं. बताती रहीं कि कैसे उन का बेटा और परिवार उन की परवाह नहीं करता. वे उन से दूर रहते हैं.

वो मुझ से भी बोलीं, ''बेटा, इस धंधे से जल्दी निकल जाओ, सही नहीं है ये सब.''

उस रात हमारे बीच सिवाय बातों के कुछ नहीं हुआ. सुबह उन्होंने बेटा कहते हुए मुझे तय रुपए भी दिए. मुझे वाकई उस महिला के लिए दुख हुआ.

फिर एक रोज जब मैं ने शराब पी हुई थी और जिंदगी से थकान महसूस कर रहा था, मैं ने मां को फोन किया. उन्हें गुस्से में कहा, ''तुम पूछती थी न कि अचानक ज्यादा पैसे क्यों भेजने लगे. मां मैं धंधा करता हूं... धंधा.''

वो बोलीं, ''चुप कर. शराब पी कर कुछ भी बोलता है तू.'' यह कह कर मां ने फोन रख दिया.

मैं ने मां को अपना सच बताया था लेकिन उन्होंने मेरी बात को अनसुना कर दिया. मेरे भेजे पैसे वक्त से घर पहुंच रहे थे न... मैं उस रात बहुत रोया. क्या मेरी वैल्यू बस मेरे पैसों तक ही थी? इस के बाद मैं ने मां से कभी ऐसी कोई बात नहीं की.

मैं इस धंधे में बना रहा, क्योंकि मुझे इस से पैसे मिल रहे थे. मार्केट में मेरी डिमांड थी. लगा कि जब तक कोलकाता में नौकरी करनी पड़ेगी और एमबीए में एडमिशन नहीं ले लूंगा, तब तक ये करता रहूंगा. लेकिन इस धंधे में कई बार अजीब लोग मिलते हैं. शरीर पर खरोंच छोड़ देते थे.

ये निशान शरीर पर भी होते थे और आत्मा पर भी. और इस दर्द को दूसरा जिगोलो ही समझ पाता था, सोसाइटी चाहे जैसे देखे, इस प्रोफेशन में जाने का मुझे कोई अफसोस नहीं है. हां, अतीत के बारे में सोचूं तो कई बार चुभता तो है. ये एक ऐसा चैप्टर है, जो मेरे मरने के बाद भी कभी नहीं बदलेगा.

यह एक ऐसा व्यवसाय है जिस में जोरजबरदस्ती नहीं बल्कि स्वेच्छा से

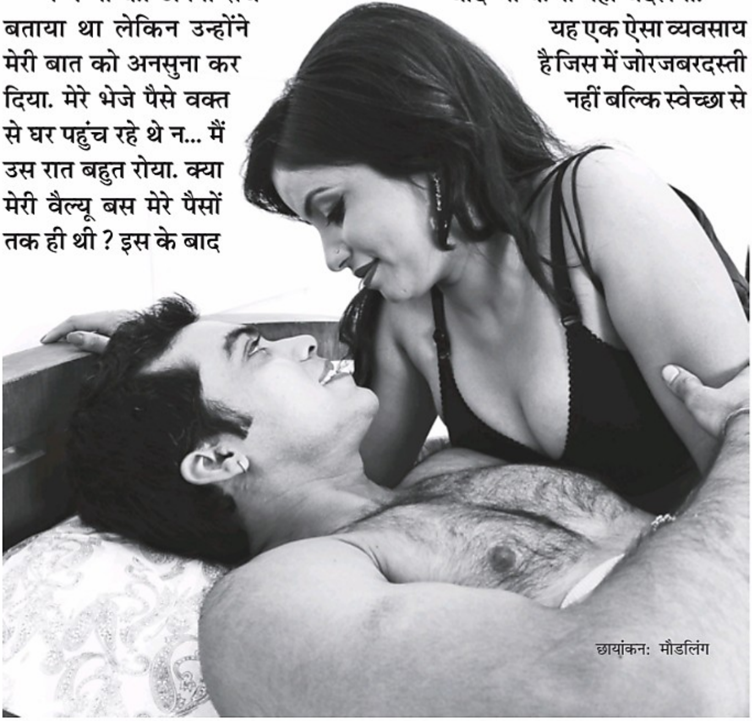

छायांकन: मौडलिंग

लोग शामिल होते हैं और इन की खरीदफरोख्त भी स्वेच्छा से ही की जाती है. यानी कि यह पुरुष वेश्यावृत्ति औरतों की वेश्यावृत्ति की तरह तकलीफदेह नहीं है.

यूं तो यह बेहद संभ्रांत परिवार की औरतों का महंगा शौक है जो मुंबई, चेन्नई, कोलकाता और दिल्ली जैसे महानगर में तेजी से फलफूल रहा है.

इस में लड़कियों की वेश्यावृत्ति की तरह से इस पेशे में धकेला नहीं जाता, बल्कि लड़के खुद अपनी स्वेच्छा से अपने शौक को पूरा करने के लिए, कभीकभी मस्ती करने के लिए या बेरोजगार होने की हालत में इसे रोजगार की तरह अपना लेते हैं.

रात 10 बजे से सुबह 4 बजे तक जिगोलो की मंडियां सजती हैं और बड़ीबड़ी लग्जरी कारों में संभ्रांत कहे जाने वाले परिवारों से औरतें, लड़कियां और उम्रदराज औरतें भी अपने लिए जिगोलो नामक खिलौना चुनती हैं.

रात भर या फिर घंटे के हिसाब से उस से खेलती हैं और सुबह की रोशनी के पहले ही वापस अपने घर को चली जाती हैं.

कभीकभी शहर से बाहर आउटहाउस पर जाने का भी इंतजाम होता है. लेकिन इन्हें पाना सब के बस की बात नहीं है. यह 3 हजार से ले कर 8 हजार तक के मिलते हैं, एक रात में 8 हजार तक की कमाई की वजह से यह फायदेमंद सौदा बन चुका है. ऐसे लोगों की धमक छोटे शहरों तक में हो चुकी है.

गठीला शरीर ,फर्राटेदार अंगरेजी और लिंग के साइज से ही उस की कीमत तय होती है. उन के गले में खास पहचान देने वाला पट्टा लगा होता है, जो उस के सैक्सी होने के बारे में बताता है.

किसी पब में, डिस्को में और बड़े होटलों में जिगोलो अकसर मिलते हैं. इस में काम करने वाले 18 साल के लड़के से ले कर 50 साल के पुरुष भी हो सकते हैं.

यह कहें कि अब इस बारे में लोगों को बहुत जानकारी है. दिल्ली के कई पौश इलाके पुरुष वेश्यावृति के लिए कुख्यात कहे जा सकते हैं.

इस में रुचि रखने वाली रईस तबके की औरतों के अलावा गे समुदाय के लोग भी होते हैं. इन के खरीददार अथाह पैसा रखने वाली वे औरतें होती हैं, जिन की शारीरिक जरूरतें पूरी नहीं हो पाती हैं. उन के लिए अधिक समय तक सैक्स को दबा कर रखना आसान नहीं होता या इन में वैसी औरतें भी होती हैं, जो चेंज में विश्वास करती हैं.

यह किसी मजबूरीवश नहीं सिर्फ मजे के लिए किया जाने वाला महंगा शौक है. शराब पीना, सिगरेट पीना और फिर जिगोलो संग कामाग्नि को बुझाना, यह फैशन सा बन गया है.

हैरत की बात तो यह है कि ऐसी महिलाएं अपने निजी शौक की पूर्ति के लिए 2 हजार से 20 हजार रुपए न्यौछावर कर देती हैं.

मर्दों की मंडी में पुरुषों के जिस्म की नुमाइश होती है. औरतें इन्हें छू कर और परख कर अपने लिए पसंद करती हैं और फिर कुछ घंटे शराब सिगरेट और मदहोशी के नशे में बिता कर मुंह अंधेरे ही वापस सफेद उजाले में आने के लिए तैयार हो जाती हैं.

कुछ घंटे के लिए 3 हजार रुपए देने

को तैयार हो जाती हैं. एक मर्द सेक्स वर्कर पर औसतन 12 से 15 हजार रुपए तक लुटाना आम बात मानी जाती है.

कई बार बड़ेबड़े हाई क्लास के अड्डे में जिगोलो महिलाओं के बीच अपनी नुमाइश करते हैं. वहां जो सैक्स संबंध बनाते हैं उस के पैसे मिलते हैं. यह जिगोलो पर निर्भर करता है कि वह कितना अपने क्लाइंट को संतुष्ट कर पाता है.

ऐसे में किसी महिला को कोई जिगोलो पसंद आ जाता है तो वह उस की बोली लगा कर पूरी रात के लिए अपने साथ ले जाती है.

जिगोलो का काम करने वाले अधिकतर कम उम्र के लड़के ही होते हैं. यानी 18 से 30 वर्ष के जिन की डिमांड भी ज्यादा रहती है. जिगोलो को जो पैसा मिलता है, उस का 20 प्रतिशत कमीशन एजेंट या बिचौलिए को देना होता है.

जिगोलो को तलाशने से ले कर उस के नुमाइश के ठिकाने बनाने के काम में बिचौलिए की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है. उन की बदौलत जिगोलो से ले कर महिला ग्राहक तक की सभी जानकारी गुप्त बनी रहती है.

इस काम को करने वाले अधिकतर कम उम्र के लड़के ही होते हैं. यानी 18 से 30 वर्ष के जिन की डिमांड भी ज्यादा रहती है. जिगोलो को जो पैसा मिलता है, उस का 20 प्रतिशत कमीशन एजेंट या बिचौलिए को देना होता है.

यानी कि जिगोलो बनने के लिए 2500 से 3000 रुपए तक चुका कर बाकायदा रजिस्ट्रेशन करवाना होता है. उस के बाद ट्रेनिंग देनी होती है. ट्रेनिंग के दौरान उन्हें खास किस्म के पहनावे से ले कर चलनेफिरने, उठनेबैठने के ढंग और एक सीमा तक यौनांगों के साथ अश्लील हरकत करना आदि सिखाया जाता है.

उन्हें यह भी सिखाया जाता है कि वे किस तरह से किसी महिला के सामने ज्यादा समय तक टिके रह सकते हैं.

उन्हें स्ट्रिपर की भी अच्छीखासी ट्रेनिंग दी जाती है. वे अपनी नुमाइश के दौरान जैसेजैसे कपड़े उतारते जाते हैं, वैसेवैसे सामने बैठी महिलाओं की कामाग्नि भड़कती चली जाती है.

बताते हैं जिगोलो में हर पेशे से जुड़े लोग होते हैं. वे जिम की बदौलत तराशे हुए बदन को खूबसूरती के साथ प्रदर्शित करते हैं, जिन्हें देख कर महिला की आह निकल पड़ती है. कई बार अपने प्रोफेशन में यह अच्छे कौन्टैक्ट्स पाने के लिए भी इस काम को करते हैं.

वैसे लोग सड़क किनारे कुछ इलाके की चर्चित बाजारों के पास खड़े हो जाते हैं. लग्जरी गाड़ियां रुकती हैं और सौदा तय होने पर अपने क्लाइंट के पास पहुंच जाते हैं.

होटलों में यह काम थोड़ा आसान हो जाता है, क्योंकि वहां उन्हीं के कमरों में इस काम को अंजाम दिया जाता है. ऐसे कई लोग एक अलग से पहनावे और परफ्यूम लगाए रेस्टोरेंट में बैठ कर ग्राहक के बिचौलिए का इंतजार करते हैं.

जिगोलो के धंधे में उतरने वाले शुरू में भले ही अपनी जरूरतों को पूरी करने के लिए ऐसा करते हैं, लेकिन बाद में उन्हें लत लग जाती है. इस पेशे में आने वाले मनोरंजन और मौडलिंग के पेशे के लोग आसानी से घुलमिल जाते हैं.●

कई आदिवासी समुदायों में लुप्तप्राय होने के कगार पर पहुंच चुकी कोरवा जनजाति जीवन निर्वाह के लिए संघर्ष कर रही है. चिंताजनक बात यह है कि इस बात की चर्चा न केवल संसद तक में हो चुकी है, बल्कि उन्हें संरक्षित रखने के उद्देश्य से राष्ट्रपति द्वारा इस जनजाति को दत्तक संतान का दरजा भी मिल चुका है.

छत्तीसगढ़

देह के दलदल में देश की दत्तक बेटियां

—सुरेशचंद्र रोहरा

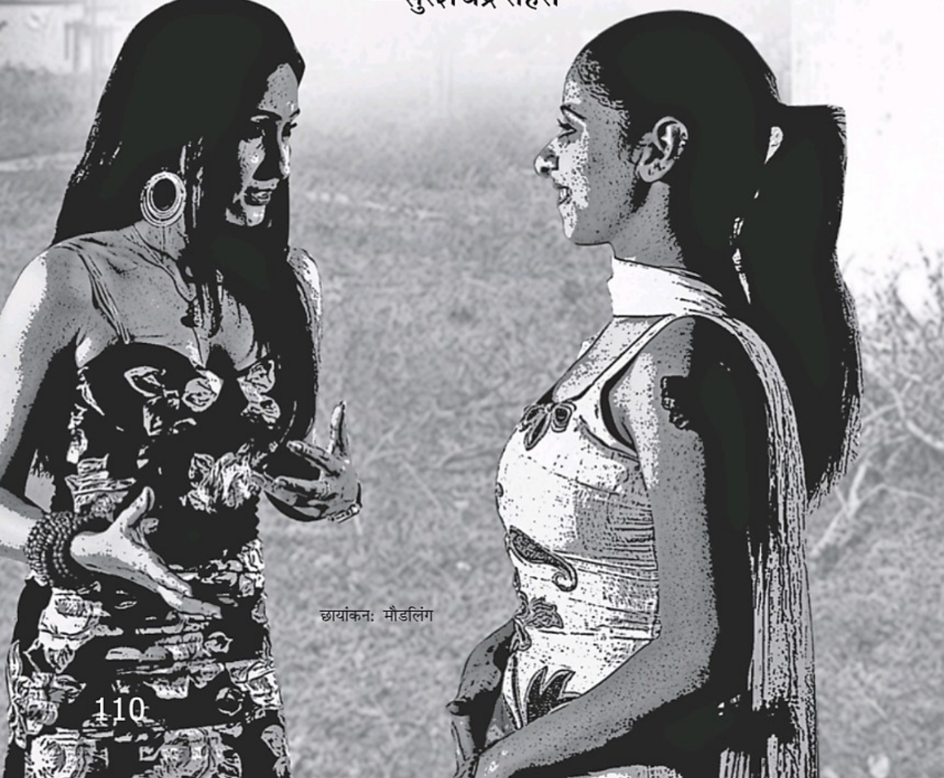

छायांकन: मौडलिंग

अंजना के होंठों पर गहरी लाल लिपस्टिक दूर से चमक रही थी. शैंपू और कंडीशनर से चमकते लहराते बाल, आंखों के सामने लटकती लटों के बीच चेहरा पाउडर और क्रीम के मेकअप से दमक रहा था. नए कपड़े के पहनावे में उस का यौवन खिल उठा था.

एक दिन पहले ही वह मुंबई से अपने गांव आई थी. हाथ में पर्स लटकाए गांव की गलियों में इठलाती घूम रही थी.

कलाई में खनकती नई चूड़ियों की आवाज से गांव के हर किसी की नजर बरबस उठ रही थी. उसे देखते ही सामने से आ रही गांव की सिलमिना ने टोका, ''अरे अंजना, तू तो हीरोइन लग रही है. कब आई रे ?''

''कल ही तो शाम को मुंबई से आई हूं, मैं तुम्हारे घर ही जा रही थी.'' अंजना चहकती हुई बोली.

दोनों बचपन की सहेलियां थीं. प्यार से अंजना ने पूछा, ''कैसी है रे तू ?''

यह सुन कर सिलमिना का चेहरा उतर गया. उदासी से आंखें नम हो गईं. धीरे से बोली, ''अब तुम्हें क्या बताऊं अपनी हालत, देख ही रही हो. यहां न भरपेट खाने को मिलता है और न ही पहनने को अच्छे कपड़े. सब कुछ तो तुम जानती ही हो, बस तरसते हुए जी रही हूं.'' सिलमिना बोली.

अंजना ने उस के हाथों को पकड़ लिया, फिर गले लग गई. उस का ऐसा करना सिलमिना को अच्छा लगा. वह थोड़ी सहज हुई. बोली, ''तू तो एकदम नहीं बदली!''

''वह सब छोड़, बता तू मेरे साथ मुंबई चलेगी ?'' अंजना ने अपनी सहेली सिलमिना से सीधा सवाल किया.

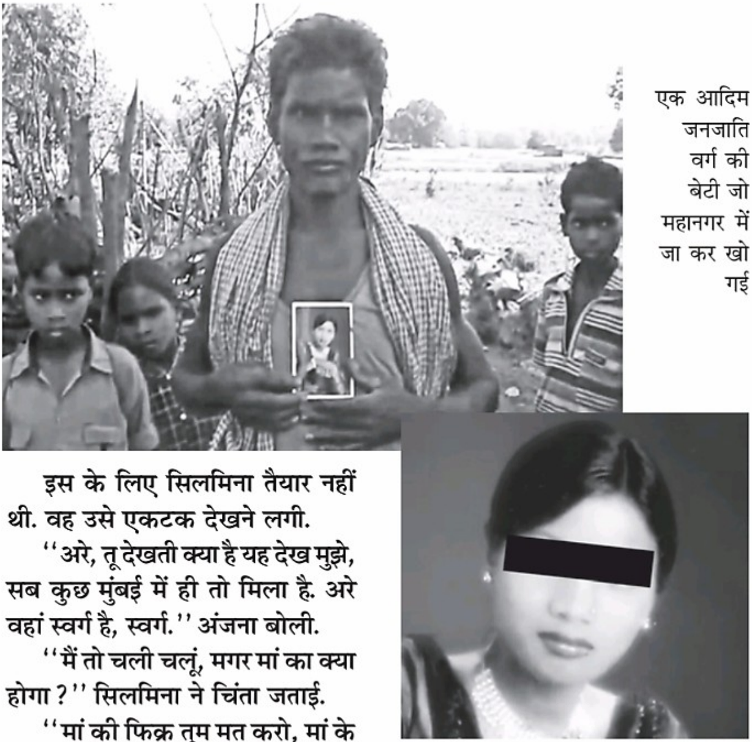
[redacted]

एक आदिम जनजाति वर्ग की बेटी जो महानगर में जा कर खो गई

इस के लिए सिलमिना तैयार नहीं थी. वह उसे एकटक देखने लगी.

''अरे, तू देखती क्या है यह देख मुझे, सब कुछ मुंबई में ही तो मिला है. अरे वहां स्वर्ग है, स्वर्ग.'' अंजना बोली.

''मैं तो चली चलूं, मगर मां का क्या होगा?'' सिलमिना ने चिंता जताई.

''मां की फिक्र तुम मत करो, मां के पास हर महीने पैसे भेज देना.'' अंजना ने सुझाव दिया.

''क्या, सचमुच ऐसा हो सकता है? मुझे वहां इतने पैसे मिल जाएंगे कि मैं मां को भी पैसे भेज सकती हूं.'' सिलमिना बोली.

'' और नहीं तो क्या?'' अंजना बोली.

''तो फिर जैसा तुम कहो मैं चलने को तैयार हूं.''

अंजना से बात कर सिलमिना की आंखों में चमक आ गई थी. उसे अंजना ने एक अद्भुत आत्मविश्वास से भर दिया था. दोनों छत्तीसगढ़ के बीहड़ जंगलों में निवास करने वाली कोरवा समुदाय की थीं.

वहां के लोगों के पास कोई ठोस कामधंधा नहीं था, जिस से उन का पेट भर पाता और वे सामान्य जीवन गुजार पाते. ऐसे में सभी अभावग्रस्त दर्दभरी जिंदगी गुजार रहे थे.

जब भी अंजना गांव आती थी, तब बहुत परिवारों के लिए वह आशा की किरण बन जाती. परिवार में बुजुर्ग मांबाप को लगता था कि उन की बेटी को दिल्ली या मुंबई में घरेलू नौकरानी का काम मिल जाएगा.

सिलमिना अपनी सहेली अंजना के कहने पर मुंबई जाने के लिए तैयारी में जुट गई. उस के अलावा गांव की कुछ और लड़कियां भी तैयार हो गईं, जो आसपास के इलाके की थीं.

उन्हें अंजना ने विश्वास दिलाया था कि सभी को मुंबई या दिल्ली में काम

कोरबा जिला मुख्यालय से लगभग 60 किलोमीटर दूर ग्राम लेमरू की एक महिला अपनी नाबालिग लापता बेटी का फोटो दिखाती हुई

मिल जाएगा. जो जहां जाना चाहे चल सकती है, उस की जानपहचान दोनों जगहों के काम दिलाने वाले खास लागों से है. उस के भरोसे पर 14 से 18 साल के उम्र की कुल 16 लड़कियां अच्छी जिंदगी की उम्मीद में गांव से महानगर के लिए निकल पड़ीं.

उन्हें अंजना ने बताया कि महानगरों में घरेलू काम करने वाली लड़कियों की बहुत कमी है. घर में साफसफाई करने, कपड़ेलत्ते धोने और बरतन मांजने का काम करना होता है. उस के काम के हिसाब से महीने में पगार मिलता है.

खाने और रहने का इंतजाम मालकिन द्वारा ही किया जाता है. उस का पैसा नहीं लगाता है. बीचबीच में उपहार भी मिलता रहता है. किसी अतिथि के आने पर वे अलग से पैसे दे जाते हैं. यह सब अंजना समझा ही रही थी कि एक लड़की मधु पूछ बैठी, ''दीदी और क्या करना होता है?''

सिलमिना अपनी सहेली अंजना के कहने पर मुंबई जाने के लिए तैयारी में जुट गई. उस के अलावा गांव की कुछ और लड़कियां भी तैयार हो गईं, जो आसपास के घरों की थीं.

''और क्या करना है, घर में बच्चे हों तो उन्हें खिलाओ, घुमाओ और आराम की जिंदगी गुजारो.'

''इन सब के लिए कितने पैस मिल जाते हैं दीदी?'' उत्सुकता से मधु ने पूछा.

''पैसे बहुत मिलते हैं पगली. 5 हजार रुपए महीने तो मिलेंगे ही. उस में तुम्हें एक पैसा खर्च नहीं होगा. बाकी जो मैं ने और कुछ बताया, उस के अलावा है.'' अंजना बोली.

''क्या?'' अंजना की बात सुन कर मधु की आंखें फटी की फटी रह गईं.

''लेकिन तू अभी छोटी है इसलिए 3 हजार ही मिलेंगे.'' यह सुन कर सभी लड़कियां हंसने लगीं.

मधु ने आंखें घुमाते हुए कहा, ''दीदी मुझे भी पूरे पैसे दिलवाना, मैं 2 के बराबर अकेली ही काम कर दूंगी.''

''मधु, तुम चिंता नहीं करो वहां पहुंच कर तुम्हें लगेगा कि तुम कहां पहुंच गई हो. समझो स्वर्ग है स्वर्ग. और जिंदगी

की सभी खुशियां मिलेंगी, मजे करोगी, मजे!'' कहती हुई अंजना ने उस की गालों को थपथपा दिया.

इस तरह आकर्षक सपने दिखा कर अंजना अपने साथ 16 लड़कियों को मुंबई ले गई. वहां पहुंच कर उस ने लड़कियों को अपने खास लोगों को सौंप दिया, जहां से उन्हें काम के लिए भेजा जाना था. उस के बाद लड़कियों के साथ जो हुआ, वह सब उसे दिखाए गए सपने के काफी उलट था.

मधु एक्का सांवली सी सुतवां नाकनक्श की आकर्षक किशोरी थी. उसे एक प्लाई शौप के मालिक ने अपने यहां नौकरी पर रख लिया था. महीने की पगार 4 हजार रुपए तय हुई थी.

इसी तरह से 18 वर्षीया सिलमिना सिदार को आरटीओ एजेंट रमेश चंद्रा ने अपने घर में घरेलू नौकरानी के तौर पर 5 हजार के मासिक वेतन पर रख लिया था.

16 साल की प्रमिला मंझवार एक व्यापारी के घर पहुंच गई थी, जबकि 17 साल की सुनीता धनुहार एक कामकाजी महिला रजनी के यहां लग गई थी.

इसी तरह से सभी लड़कियां कहीं न कहीं काम पर लगा दी गई थीं. मगर जैसेजैसे समय बीतता चला गया, लड़कियों के सपने टूटते चले गए. वे अमानवीय दौर से गुजरने लगीं. उन्हें घरपरिवार से बात करने की मनाही थी.

उन में कुछ लड़कियां देह के धंधे पर उतरने को विवश हो गईं. उन्हें पूरी तरह से एहसास हो गया था कि वे पिंजरे में कैद हो कर रह गई हैं. उन की अशिक्षा किसी दुर्भाग्य से कम नहीं थी. उन्हें न तो किसी अधिकार के बारे में मालूम था और न ही सामने दीवारों और पोस्टरों पर लिखी पंक्तियों का अर्थ समझ पाती थीं.

एक दिन मधु एक्का को फोन करने का मौका मिल गया. उस ने अपने एक परिचित को फोन कर दिया. फोन पर उस ने एक सांस में सारी तकलीफें बयां कर डाली. परिचित ने यह बात अपने दोस्त को बताई. बात पूरे कोरवा में फैल गई और मामला पुलिस तक जा पहुंचा.

पुलिस पर जांच का दबाव भारत सरकार के गृह मंत्रालय से पड़ा. इस का असर हुआ और सभी लड़कियों की बरामदगी हो गई. फिर उन्हें कोरवा उन के परिजनों को सौंप दिया गया.

> दुर्गाबाई लड़कियों को ग्राहकों के पास भेजती थी. हर ग्राहक से उसे डेढ़ हजार से ढाई हजार रुपए तक मिलते थे, जबकि वह हर लड़की को उसी में से खर्चे के नाम पर 300 से 500 तक देती थी.

उन्होंने पुलिस और परिजनों को अपनी आपबीती सुनाई. उस के बाद जो देहव्यापार की दर्दनाक दास्तान सामने आई, उस की एक झलक इस प्रकार है.

छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर, रायगढ़, जशपुर जिले में कोरवा जनजाति को राष्ट्रपति का संरक्षण प्राप्त है. उन्हें विशेष दरजा दे कर दत्तक संतान का दरजा दिया गया है. उन के जनजीवन को सुधारने के लिए सरकार की तरफ से कई योजनाएं चलाई गई हैं, फिर भी उन की आय में गिरावट बनी हुई है.

उस समुदाय के बच्चे मुश्किल से

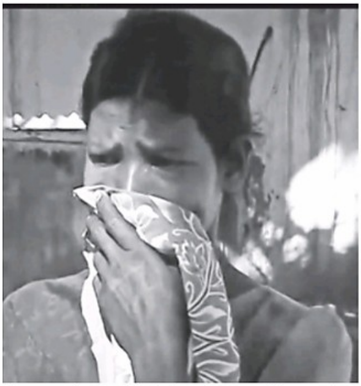

लेखक को अपनी बेटी की दुखभरी दास्तां बतातेबताते फफक पड़ी कोरवा महिला

5वीं, 8वीं तक पढ़ पाते हैं. उन की जिंदगी एकदम से ठहरी हुई जंगली वातावरण सी उलझ गई है. यही कारण है कि उन पर महानगरों की प्लेसमेंट ऐजेंसियों की नजर टिकी रहती है.

वे अपना निशाना कमसिन लड़कियों को बनाते हैं और उन्हें दिल्ली, मुंबई, हैदराबाद आदि शहरों में नौकरी के बहाने अपने जाल में फंसा लेते हैं.

कहने को तो उन से घरेलू नौकरानी, मौल, प्राइवेट कंपनियां, औफिस में काम दिलवाने का वादा किया जाता है, लेकिन अधिकतर देह व्यापार में धकेल दी जाती हैं.

ऐसी ही एक लड़की ने बताया, ''मैं काफी गरीब परिवार से हूं. मुंबई यही सोच कर गई थी कि हमें नौकरी से पैसा मिलेगा और शांति से जिंदगी गुजरेगी. लेकिन वहां देह बेचना पड़ा. इस बारे में हम किसी को बता भी नहीं सकते थे. इस का विरोध करना तो बहुत ही मुश्किल काम था. कई बार तो एक दिन में आधेआधे घंटे पर अलगअलग मर्द के साथ सोना पड़ा.''

उस ने बताया कि कैसे उसे उस के जानपहचान वाले राजकुमार ने काम दिलाने के नाम पर दुर्गाबाई नाम की महिला के हाथों बेच दिया था. वह बिहार के रोहतास जिले की रहने वाली थी. उस ने उस की खूबसूरती और उभार वाले वदन को देख कर कीमत सवा लाख रुपए लगाई थी.

इस काम में राजकुमार के साथ महेश और सरला नाम की युवती भी शामिल थे. दुर्गाबाई के पास छत्तीसगढ़ की 6 लड़कियां थीं, जिन्हें बाद में 5 जनवरी, 2021 को पुलिस ने बरामद किया था.

दुर्गाबाई लड़कियों को ग्राहकों के पास भेजती थी. हर ग्राहक से उसे डेढ़ हजार से ढाई हजार रुपए तक मिलते थे, जबकि वह हर लड़की को उसी में से खर्चे के नाम पर 300 से 500 तक देती थी.

मुक्त करवाई गई एक लड़की ने बताया कि किस तरह से वह राजकुमार के जाल में फंसी. उसे पहले बिलासपुर से बिक्रमगंज लाया था. वहां महेश और सरला मिले थे. दोनों ने पतिपत्नी होने का परिचय दिया. वह उसे दुर्गाबाई के पास ले गए.

महेश ने बताया कि वह उन की सास है और मुंबई में रहती हैं. उन के साथ उसे 6 महीने तक रहना होगा. बाद में दोनों जब वहां आ जाएंगे तब वह वापस आना चाहे तो आ सकती है. या फिर उन के साथ रहना चाहे तो रह सकती है.

लड़की को उन की बातों में सच्चाई दिखी और वह दुर्गाबाई के साथ 27 दिसंबर, 2020 को मुंबई आ गई.

वहां उस ने देखा कि उसी के जिले की 7 और लड़कियां रह रही हैं. उन में

से ही एक लड़की ने उस के कान में चुपके से बताया कि वह गलत जगह आ गई है. उस की किस्मत अच्छी थी कि एक सप्ताह बाद ही दुर्गाबाई के उस मकान पर पुलिस ने छापा मारा और वह दूसरी लड़कियों के साथ मुक्त करवा ली गई.

मुक्त करवाई गई जशोपुर जिले की एक पीड़िता की मां ने बताया कि उस की बच्ची को 15 हजार रुपए महीने पर आर्केस्ट्रा में काम दिलवाने के नाम पर ले गया था.

उन्होंने बताया कि उस की बच्ची को नाचने का शौक था, इसलिए सोचा अच्छा काम है. पैसा मिलेगा और धीरेधीरे शोहरत मिलेगी तब बड़ा कलाकार भी बन सकती है.

वहां से उसे अंबिकापुर लाया गया. बाद में नशीली कोल्ड ड्रिंक्स पिला कर उत्तर प्रदेश में सोनभद्र जिला ले जाया गया.

वहां बिंदास आर्केस्ट्रा ग्रुप के संचालक मनोज कुमार और अन्नू उर्फ गोलू को सौंप दिया गया. उन्होंने लड़की को छोटे से कमरे में बंद कर दिया.

3 दिन बीतने के बाद जब लड़की ने पूछा कि उस का प्रोग्राम कब होगा तब

थानाप्रभारी भी पकड़ा गया रंगरलियां मनाते हुए

देहधंधे पर खास

देह व्यापार के ठिकानों पर पुलिस समयसमय पर छापे मारती रहती है. आमतौर पर इन ठिकानों से देह व्यापार में लिप्त युवतियां और महिलाओं के अलावा रंगरलियां मनाने आए लोग पकड़े जाते हैं.

राजस्थान के शेखावाटी इलाके में चूरू में देह व्यापार के एक ठिकाने पर पुलिस ने छापा मारा तो वहां आबकारी पुलिस थाने का इंचार्ज भी रंगरलियां मनाते पकड़ा गया. वहां थानाप्रभारी को इस हालत में देख कर छापा मारने वाली पुलिस टीम भी चौंक गई.

दरअसल, इसी 24 जुलाई को चूरू की डीएसपी ममता सारस्वत ने बोगस ग्राहक को भेज कर शहर के अग्रसेन नगर में एक मकान पर छापा मारा. उस मकान में किराए पर रहने वाली महिला सीमा मेघवाल ने बोगस ग्राहक के रूप में आए कांस्टेबल से रुपए ले लिए. बाद में कांस्टेबल का इशारा मिलने पर पुलिस ने उस मकान पर दबिश दी.

मकान में 3 युवतियां मिलीं. एक बंद कमरे में एक युवती और एक व्यक्ति आपत्तिजनक हालत में मिले. पुलिस ने चारों को पकड़ लिया. इन में सीमा के पास से 12 हजार रुपए भी बरामद हुए.

पुलिस थाने ला कर इन से पूछताछ की गई, तो पता चला कि पकड़ा गया व्यक्ति 40 वर्षीय रणवीर सिंह नायक चूरू में आबकारी निरोधक थाने का इंचार्ज था. उस का काम अवैध शराब पकड़ना था.

पुलिस ने आबकारी विभाग के थानाप्रभारी रणवीर सिंह के अलावा तीनों युवतियों 35 साल की सीमा नायक, 30 साल की पियारू निशा और

उन्होंने उस के साथ जबरदस्ती की और फिर सजासंवार कर एक ग्राहक के पास भेज दिया. इस तरह से वह कथित आर्केस्ट्रा ग्रुप की एक नई सैक्सवर्कर बना दी गई.

उस की मां ने बताया कि लड़की 12 मई को किसी ग्राहक के पास भेजी जाने वाली थी. बताया गया था कि वहां उसे 6 लड़कियों के साथ एक निजी पार्टी में शामिल होना है. म्यूजिक पर नाचगाना करना होगा.

संयोग से इस पार्टी की जानकारी पुलिस को भी लग गई थी. पुलिस को किसी ने सूचना दी थी कि कोई बर्थडे सेलिब्रशन के बहाने ड्रग कारोबारियों से डील करने वाला है. लेकिन जब पुलिस ने वहां छापेमारी की तब वहां से 7 लड़कियां रंगेहाथों पकड़ी गईं. उन से पूछताछ होने पर आर्केस्ट्रा ग्रुप की आड़ में देहव्यापर का भंडाफोड़ हो गया. आर्केस्ट्रा संचालक भी पकड़े गए. उस के बाद पुलिस को नई जानकारी मिली.

इस तरह देहव्यापार के दलाल कोरवा जनजाति की लड़कियों को किसी न किसी तरह से अपने जाल में फांस कर जिस्मफरोशी के धंधे में शामिल कर रहे हैं. ●

कहानी में कुछ नाम परिवर्तित हैं.

---

30 साल की हलीमा इमरान को गिरफ्तार कर लिया. इन में पियारू निशा पश्चिम बंगाल और हलीमा इमरान मुंबई के ठाणे की रहने वाली निकली.

पूछताछ में पता चला कि चूरू के बास घंटेल की रहने वाली सीमा मेघवाल को उस के पति नेमीचंद मेघवाल ने छोड़ रखा था. वह कई महीनों से चूरू के अग्रसेन नगर में किराए का मकान ले कर रह रही थी और मुंबई व पश्चिम बंगाल सहित दूसरे राज्यों से नईनई खूबसूरत युवतियां बुला कर ग्राहकों को पेश करती थी.

वह अपने ग्राहकों से एक से डेढ़ हजार रुपए तक लेती थी. सीमा वाट्सएप के जरिए अपना धंधा चलाती थी. ग्राहकों को वह वाट्सऐप पर लड़कियों की फोटो भेजती थी. पसंद आने पर रुपए तय करती थी.

गिरफ्तार युवतियों ने पुलिस को बताया कि वे पहले भी चूरू आ चुकी थीं. उन्हें एकडेढ़ महीने के लिए अच्छी रकम दे कर बुलाया जाता था. सीमा ने बताया कि वह समयसमय पर दूसरे राज्यों से भी लड़कियां बुलाती थी, ताकि ग्राहकों को नएनए चेहरे मिल सकें.

पुलिस ने सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया. ●

देहव्यापार कोई नया धंधा नहीं है, बल्कि यह सदियों से चला आ रहा ऐसा अनैतिक काम है, जिसे न तो कोई रोक सका है और न ही इसे कोई पूरी तरह बंद कर सकेगा. बदलते दौर के साथ इस के संचालन के तरीके जरूर बदल गए हैं. यानी धंधे की सूरत जरूर बदली है लेकिन सीरत नहीं.

उत्तर प्रदेश में देहधंधे की सूरत बदली सीरत नहीं

—शैलेंद्र सिंह

देश की सब से बड़ी आबादी और सर्वाधिक छोटेबड़े शहरों वाले उत्तर प्रदेश में देह व्यापार के रैकेट का भंडाफोड़ आए दिन होता रहता है, जबकि प्रदेश में जमाने से यह धंधा निर्बाध रूप से चलता रहता है. आज इस की सूरत भले ही बदल गई हो, लेकिन सीरत जस की तस बनी हुई है.

एक दौर था जब नाचनेगाने वाली तवायफें वेश्या नहीं हो कर भी बदनाम थीं, आज देह के धंधे में शामिल वेश्याएं बदनाम हो कर भी इस दलदल से निकल नहीं पा रही हैं.

पहले कुछ सैक्स रैकट भंडाफोड़ के हाल की घटनाओं पर एक नजर डालते हैं, जो देह व्यापार की बदलती तसवीर बयां करने के लिए काफी है.

इसी साल कोरोना काल का असर कम होने के साथ ही 4 जुलाई को उत्तर प्रदेश की नोएडा पुलिस ने होटल से एक देह व्यापार गैंग का परदाफाश किया. गैंग में शामिल कुल 6 लोगों में एक महिला भी शामिल थी. उन के कब्जे

से पुलिस ने 12 मोबाइल फोन, एक लैपटाप और कुल 37 हजार 675 रुपए बरामद किए थे.

इस के अलावा कई आपत्तिजनक चीजों से उन के देह व्यापार में लिप्त होने के सबूत का भी पता चला. सभी आरोपियों से पूछताछ में पता चला कि आरोपी महिला देह व्यापार के लिए लड़कियों को अपने जाल में फंसा कर इस धंधे में उतार देती थी. उन लड़कियों से उन्हें कमीशन मिलता था.

इसी तरह से 5 महीने पहले भी थाना सेक्टर 24 पुलिस ने 27 फरवरी को सेक्टर 12 स्थित एक गेस्टहाउस में छापा मार कर वहां चल रहे देह व्यापार के अड्डे का भंडाफोड़ किया. पुलिस ने इस मामले में गेस्टहाउस के संचालक सहित 7 युवकों तथा 4 लड़कियों को गिरफ्तार किया.

इस छापेमारी के संबंध में डीसीपी (जोन प्रथम) राजेश एस. ने बताया कि इस की सूचना थाना सेक्टर- 24 पुलिस को मिली थी.

सूचना के मुताबिक सेक्टर- 12 के आई–ब्लौक में स्थित गेस्टहाउस में मानव तसकरी रोधी इकाई के एसीपी रजनीश वर्मा के नेतृत्व मे छापेमारी की गई.

उन्होंने बताया कि मौके पर कई युवकयुवतियां आपत्तिजनक स्थिति में थे. गेस्टहाउस के संचालक विशाल सहित 7 युवकों तथा 4 लड़कियों को मौके से पकड़ा गया.

डीसीपी के अनुसार पकड़ी गई लड़कियों में से एक लड़की बिहार से अगवा कर लाई गई थी. उसे जबरन देह व्यापार के दलदल में धकेला गया था. मौके से पुलिस को अश्लील साहित्य, आपत्तिजनक वस्तुएं, बीयर व शराब की बोतलें मिलीं.

राजधानी दिल्ली का एनसीआर शहर नोएडा हो या फिर ग्रेटर नोएडा जोन वहां एक के बाद एक देह व्यापार के काले कारोबार का भंडाफोड़ होता रहा है. 2 गेस्टहाउस में तो इस धंधे का भंडाफोड़ तब हुआ, जब देश बुरी तरह से कोरोना की दूसरी लहर के चपेट के दौर से गुजर रहा था.

अप्रैल की 14 तारीख को कासना और ईकोटेक- एक कोतवाली पुलिस ने प्रशांत एवं प्रधान नाम के 2 अलगअलग गेस्टहाउस में छापेमारी कर देह व्यापार में लिप्त 6 युवक व 4 युवतियों को गिरफ्तार किया.

> ग्रेटर नोएडा के दनकौर थाना क्षेत्र में 20 मार्च को देह व्यापार के अड्डे से 12 महिलाओं समेत 23 लोगों की बड़ी गिरफ्तारी चौंकाने वाली थी. इस मामले में 6 पुलिसकर्मियों को निलंबित भी किया गया.

मौके से आपत्तिजनक वस्तुएं बरामद की गईं. छापेमारी के दौरान युवकयुवती नग्न अवस्था में थे. गेस्टहाउस में दिल्ली एनसीआर से लोग जाते थे और देह व्यापार का हिस्सा बनते थे.

आरोपियों के खिलाफ पुलिस ने अनैतिक व्यापार निवारण अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज किया, जो आसपास के गांवों के रहने वाले थे. जिस क्षेत्र में देह व्यापार का भंडाफोड़ हुआ है, वहां के चौकी इंचार्ज की भूमिका संदिग्ध बताई गई.

ग्रेटर नोएडा के दनकौर थानाक्षेत्र से 12 महिलाओं समेत 23 लोगों को गिरफ्तार किया गया

ग्रेटर नोएडा के दनकौर थाना क्षेत्र में 20 मार्च को देह व्यापार के अड्डे से 12 महिलाओं समेत 23 लोगों की बड़ी गिरफ्तारी चौंकाने वाली थी. इस मामले में 6 पुलिसकर्मियों को निलंबित भी किया गया.

बताते हैं उन की जानकारी में वेश्यावृत्ति का धंधा चल रहा था, पुलिस ने बताया कि मौके से बड़ी संख्या में शक्तिवर्धक दवाइयां, आपत्तिजनक साहित्य एवं अन्य सामग्री बरामद की गई. उन की गिरफ्तारी एक होटल से हुई.

देह व्यापार के लिए ताजमहल की नगरी आगरा भी कुछ कम बदनाम नहीं है. ताजमहल के पास हाई सिक्योरिटी जोन तक में देह व्यापार के अड्डे का जब भंडाफोड़ होता है, तब लोगों की आंखें खुली की खुली रह जाती हैं.

ऐसा ही एक मामला 12 मई को सामने आया था. पुलिस ने सूचना के आधार पर ताजमहल के पास शिल्पग्राम मार्ग पर एक होटल में छापेमारी की थी.

यह छापेमारी सीओ सदर के नेतृत्व में ताजगंज पुलिस द्वारा की गई थी. मौके से चर्चित एजेंट भीमा समेत आधा दरजन लोगों को हिरासत में लिया गया था. पकड़ी गई युवतियों में 2 विदेशी भी थीं. वे उज्बेकिस्तान की थीं.

पुलिस द्वारा पूछताछ में मालूम हुआ कि जिस होटल में देह व्यापार का अड्डा चल रहा था. वहां धांधूपुरा निवासी चर्चित युवतियों का एजेंट भीमा देशीविदेशी युवतियों को ठेके पर ले कर आता था. लड़कियों को वहीं ठहराया जाता था. उस के बाद वहीं उन्हें ग्राहक के पास भेज दिया जाता था.

भीमा पिछले साल भी पकड़ा गया था. तब उस का मोबाइल देख कर पुलिस के होश उड़ गए थे. कारण उस के मोबाइल में 500 से अधिक देशीविदेशी युवतियों के नंबर मिले थे. उन में घरेलू महिलाओं से ले कर कालेज गर्ल्स तक उस के संपर्क में थीं.

उस के मोबाइल की फोटो गैलरी में युवतियों के अश्लील फोटोग्राफ मिले थे. वही फोटो ग्राहकों को पसंद कराने के लिए भेजे जाते थे.

पुलिस ने उस समय भीमा के 3 मोबाइल जब्त किए थे. भीमा ने पुलिस को बताया था कि वह कई सालों से इस धंधे में है. भारत के सभी शहरों में लड़कियां सप्लाई करता है.

अब अगर उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ की बात करें तो यहां की स्थिति आज के नोएडा जैसी नहीं किंतु यहां की तवायफें भी कुछ कम नहीं हुआ करती थीं.

बात 1951 है. देश की आजादी के बाद लखनऊ में महापौर यानी मेयर का चुनाव हो रहा था. लखनऊ के बड़े हकीम साहब मेयर पद का चुनाव लड़ रहे थे. हकीम साहब के विरोध में मशहूर तवायफ दिलरुबा चुनाव मैदान में उतरी हुई थी.

दिलरुबा के चुनाव प्रचार में लोगों की भीड़ देख कर हकीम साहब चिंता में पड़ गए थे. उन को हार का खतरा दिखने लगा. हार से बड़ी इज्जत का खतरा था तवायफ से हार जाने का.

हकीम साहब चिंता में डूबे जा रहे थे. अपने दिल की बात उन्होंने अपने एक शायर मित्र को सुनाई. उन्होंने कहा, ''हकीम साहब, चिंता मत करो इस का हल है हमारे पास.''

हकीम साहब बोले, ''क्या?''

''आप को एक नारा बताता हूं, जिस का इस्तेमाल आप अपने चुनाव प्रचार में करना. आप कहना 'दिल दो दिलरुबा को वोट शमशुद्दीन को'. दोस्त की सलाह सुन कर हकीम साहब मुसकराए.

उन को समझ में आ गया. उन्होंने वही किया जैसी शायर दोस्त ने सलाह दी. चुनाव हकीम साहब जीत गए.

इस के बाद जब जीत की दावत हुई तो हकीम साहब ने दिलरुबा को भी दावत में बुलाया. दिलरुबा हकीम साहब को बधाई देते हुए बोली, ''हकीम साहब लखनऊ वालों को आप की ज्यादा जरूरत है, क्योंकि यहां मरीज ज्यादा हैं मर्द कम है.''

इस लहजे के हकीम साहब कायल हो गए. यह कोई बनावटी बात नहीं है, बल्कि इसे फिल्म 'उमराव जान' में बड़ी शालीनता से दिखाया गया है.

समय के साथ ही साथ यह दौर बदलने लगा है. तवायफ, वेश्याएं, क्लब डांसर, बार डांसर, पोल डांसर, कालगर्ल, मसाजर आदि देह व्यापार की ही कड़ियां हैं. सभी का एक ही मकसद होता है ग्राहकों को यौन संतुष्टि देना और बदले में मेहनताना लेना.

कोठों तक लाने का काम दलाल किया करते थे. तब उन्हें मजाकिया लहजे में भड़वा कहा जाता था. उन्हें उन की अर्धनारीश्वर जैसी हरकतों के अलावा आंखों में सुरमा लगाए, पान खाए कमर मटकाते दूर से ही पहचाना जा सकता था.

अब कौन किस हद तक पुरुष को यौनसुख दे सकती है, इस की क्षमता का आंकलन आज तक नहीं किया जा सका है. लेकिन हां, इस सिलसिले में तौरतरीके और बदलते व्यावसायीकरण का स्वरूप जरूर हमारे सामने आता रहता है.

तवायफें नवाबों के दौर में होती थीं. अवध यानी उत्तर प्रदेश में नवाब शुजाउद्दौला ने तवायफ संस्कृति को बढ़ावा दे दिया था. उस दौर में लखनऊ में चावल वाली गली और फूलवाली

तवायफें नवाबों के दौर में होती थीं. नवाब शुजाउद्दौला ने तवायफ संस्कृति को बढ़ावा दिया था. उमराव जान, दिलरुबा, गौहरबाई जैसी तवायफों के किस्से लखनऊ में सुनेसुनाए जाते थे

गली तवायफों से जुड़ी थीं. उमराव जान, दिलरुबा, गौहरबाई और नसीम बानो जैसी मशहूर तवायफों के किस्से लखनऊ के चौक इलाके में तड़का लगा कर सुने और सुनाए जाते थे.

चावलवाली गली के साथ ही फूलवाली गली का नाम भी जुड़ा रहता था. असल में चावलवाली गली में तवायफें रहती थीं. वहां उन के मुजरे हुआ करते थे.

फूलवाली गली में फूल और गजरे बिकते थे, जिन को हाथों में लपेट पर चिकन का कुरतापैजामा या कुरताधोती पहन कर शौकीन मर्द मुजरा सुनने के लिए कोठों पर जाते थे.

तवायफों के चाहने वालों में खास मेहमान हुआ करते थे. उन्हें मुजरा सुनने के लिए कोठों तक लाने का काम दलाल किया करते थे. तब उन्हें मजाकिया लहजे में भड़वा कहा जाता था. उन्हें उन की अर्धनारीश्वर जैसी हरकतों के अलावा आंखों में सुरमा लगाए, पान खाए कमर मटकाते दूर से ही पहचाना जा सकता था.

उन का पहनावा कुरतापैजामा होता था. पैजामा थोड़ा ऊंचा रहता था. बोली में बेहद मीठे होते थे. उन का काम तवायफों के कोठे तक अधिक से अधिक ग्राहक पहुंचाना होता था. दूसरी तरफ वे ग्राहकों को तवायफों की कामकला और नृत्य गायन के तारीफ के पुल बांधने का काम भी बखूबी निभाते थे.

तवायफों की रोजीरोटी कद्रदानों से मिलने वाले ईनाम से चलती थी. कुछ तवायफें नवाब और उन के मंत्रियों तक का मनोरंजन करती थीं. वे काफी रसूख वाली होती थीं और नवाबों की सल्तनत के फैसलों तक में दखल रखने का माद्दा रखती थीं.

सन 1857 में जब अवध पर अंगरेजों का कब्जा हो गया, तब लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह को कोलकाता के पास मटियाबुर्ज नामक जगह पर भेज दिया गया. था. उन के साथ रसूखदार तवायफें भी चली गईं.

तवायफों की कुछ बची जमात लखनऊ में रह गई. उन की कला और

संस्कृति में मिलावट होने से तवायफें मुजरे के साथसाथ ही साथ देह व्यापार के धंधे में भी उतर आईं.

इस का मुख्य कारण था नवाबों, राजामहाराजाओं और जमींदारों के दौर का खत्म होना. नतीजा उन के आगे रोजीरोटी का संकट खड़ा हो गया.

तवायफों ने अपने काम छोड़ कर समाज की मुख्यधारा में शामिल होने का प्रयास भी किया, मगर वे सिरे से नकार दी गईं.

सन 1971 में लखनऊ की पुलिस ने वेश्यावृत्ति उन्मूलन का एक अभियान चलाया, जिस में लखनऊ से रेड लाइट एरिया खत्म हो गया. वेश्यावृत्ति उन्मूलन के बाद भी उन का धंधा खत्म नहीं हुआ, जो देह व्यापार कोठों में चलता था. वह कोठियों में चलने लगा.

1970 के बाद संभ्रांतता का लबादा ओढ़ने वाली लड़कियां इस धंधे में कूद पड़ीं. उन्हें कालगर्ल का नाम मिल गया.

धीरेधीरे कालगर्ल कल्चर महानगरों में फैल गया. इस में तेजी 1990 के बाद तब आई, जब लखनऊ का विकास होने लगा. लोग नए सिरे से आधुनिक रहनसहन और मनमाफिक मिजाज के साथ बसने लगे.

नौकरीपेशा लोगों के अलावा बाहर के लोगों का आगमन बढ़ गया. शहर में कालोनियां और अपार्टमेंट बनने लगे. इस के साथ ही साथसाथ मनोरंजन के साधन और मसाज पार्लर, छोटेबड़े होटल आदि का विस्तार हो गया. प्राइवेट नौकरियों में लड़कियां मल्टीनैशनल रुतबे और ग्लैमर के साथ थोक के भाव में आने लगीं.

लखनऊ में चावलवाली गली का बस नाम ही रह गया. यहां के कोठे खत्म हो गए. कोठों की जगह गोदाम बन गए, जिन में बाजार का सामान भरा जाने लगा. ज्वैलरी, कपड़े और जनरल मर्चेंट की दुकानें खुल गईं.

गजरे और मुजरों का नामलेवा नहीं बचा, उस की जगह कालगर्ल अपनी दुकानें कालोनियों से चलाने लगीं.

चौक के पास ठाकुरगंज, चारबाग, गोमतीनगर और अमीनाबाद जैसे बाजारों में किराए के मकान और होटलों में पुलिस ने छापे मार कर ऐसे कालगर्ल रैकेट पकड़ने लगी.

अब दलाल भड़वे नहीं रहे, उन की जगह सैक्स के कौन्ट्रैक्टर, स्पा और मसाज पार्लर चलाने वाले या फिर होटलों व गेस्टहाउसों तक पहुंच रखने वाले दलालों ने ले ली है. उन्हें आसानी से नहीं पहचाना जा सकता है.

फिर भी उन के धंधे में रत्ती भर कमी नहीं आई. यहां हर आयुवर्ग और पैसे के हिसाब से कारोबार होने लगा.

दलालों से ले कर देह का धंधा करने वाली पेशेवर वेश्याओं से ले कर परदे में छिप कर देह व्यापार करने वाली महिलाओं तक की शक्ल दशक दर दशक बदलती चली गई है.

अब दलाल भड़वे नहीं रहे, उन की जगह सैक्स के कौन्ट्रैक्टर, स्पा और मसाज पार्लर चलाने वाले या फिर होटलों व गेस्टहाउसों तक पहुंच रखने वाले दलालों ने ले ली है. उन्हें आसानी से नहीं पहचाना जा सकता है.

गोमतीनगर के मसाज पार्लर से गिरफ्तार युवतियां

धंधा करने वाली लड़कियों या औरतों को अपने हिस्से की रकम पा कर ग्राहक के पास जाना होता है. इस में ग्राहक का अपना ठिकाना भी हो सकता है, जो होटल के कमरे भी हो सकते हैं.

होटल के कमरे 3 से 4 घंटे के लिए बुक किए जाते हैं. यह सब पुलिस की मिलीभगत से होता है. बताते हैं कि अधिकतर छापेमारी दिखावे के लिए होती है.

वैसे आज के दौर में देह व्यापार के लिए सब से महफूज और सहूलियत वाली जगह मसाजपार्लर बन गया है. कानूनी रूप से मसाज पार्लर में क्रौस मसाज की अनुमति नहीं होती है.

यानी औरत का मसाज मर्द या मर्द का मसाज औरत द्वारा किए जाने की अनुमति नहीं होने के बावजूद यह सब चोरीछिपे चलता है. यह अलग बात है कि वे अपना ठिकाना कुछ दिनों में बदल लेते हैं.

ऐसे मसाज पार्लरों से पकड़ी गई लड़कियों में ज्यादातर पश्चिम बंगाल और नेपाल की होती हैं. प्राप्त जानकारी के अनुसार मसाज पार्लर में नेपाली लड़कियों की मांग सब से अधिक होती है. दूसरे नंबर पर पश्चिम बंगाल या बांग्लादेश की लड़कियां आती हैं. उन्हें 8 से 10 हजार रुपए महीने की नौकरी दी जाती है. रहने और खाने का इंतजाम पार्लर प्रबंधक द्वारा ही किया जाता है.

हालांकि कुछ लड़कियां प्रदेश के शहरों की भी होती हैं. केवल लखनऊ ही नहीं आसपास के शहरों, जैसे अयोध्या (फैजाबाद), प्रयागराज (इलाहाबाद), वाराणसी का मडुवाडीह, कानपुर के रेड लाइट एरिया की शक्ल बदल चुकी है. यहां अब कोठे बंद हो चले हैं.

यह धंधा अब पूरी तरह से कोठों से सिमट कर होटल और मसाज सेंटरों तक सीमित हो गया है. नेपाल से जुड़े होने के कारण बस्ती रेलवे स्टेशन के आसपास के इलाकों में देहधंधा करने वाली गरीब किस्म की औरतें देखी जा सकती हैं.

कुछ नाचगाने तक सीमित रहने वाली लड़कियां भी इस की आड़ में देहधंधा करती हैं. कहने को वे आर्केस्ट्रा में डांस करती हैं, लेकिन उन की हकीकत कुछ और ही होती है. ●

स्पा सेंटर की 'एक्स्ट्रा सर्विस'

—प्रतिनिधि

स्पा और मसाज सेंटर ऐसे अड्डे होते हैं, जहां स्त्री और पुरुष दोनों ही वहां सेवा का लाभ लेने के लिए पहुंचते हैं. वहां पहुंचने वाले ज्यादातर कस्टमर विपरीत लिंगी से मसाज कराते हैं. 20 मिनट की शुरुआती मसाज के बाद मिलने वाली 'एक्स्ट्रा सर्विस' से कस्टमर को जो सुकून मिलता है वह...

दिल्ली के उत्तम नगर का रहने वाला 25 वर्षीय राजेश गुड़गांव में एक मल्टीनैशनल कंपनी में जौब करता था. उस की अभी शादी नहीं हुई थी. गुड़गांव में जिस जगह वह काम करता था वहां उसे काम करते हुए करीब 3 साल हो गए थे.

मल्टीनैशनल कंपनी में इतने समय से काम करने के दौरान उस के कई दोस्त बने. कुछ खानेपीने वाले दोस्त बने तो कुछ बचाने वाले. कमाल की बात यह थी कि राजेश इन दोनों में किसी भी कैटेगरी में नहीं आता था.

उसे जितनी तनख्वाह मिलती, उस का कुछ हिस्सा वह बचा लिया करता था और बाकी अपने औफिस के दोस्तों और अपने बचपन के दोस्तों के साथ मौजमस्ती करने के लिए खर्च कर दिया करता. 25 साल की अपनी इस उम्र तक आतेआते उस ने अपने जीवन में कई चीजों का अनुभव हासिल कर लिया था. लेकिन अभी भी कई चीजें ऐसी थीं, जिन का अनुभव उसे नहीं था.

एक दिन ऐसे ही औफिस में कंप्यूटर स्क्रीन के आगे बैठ कर काम करतेकरते राजेश के टेबल पर पड़ा पेन लुढ़क कर नीचे फर्श पर गिर गया. वह अपने काम में इतना मशगूल था कि उसे अपना पेन उठाना याद ही नहीं रहा.

देखते ही देखते लंच टाइम हो गया और राजेश का अपने कंप्यूटर स्क्रीन से ध्यान टूटा. उस ने अपनी कुरसी पर बैठेबैठे ही अंगड़ाई ली और उस की नजर नीचे गिरे अपने पेन पर गई.

वह पहले तो अपनी कुरसी छोड़ सीधा खड़ा हो गया, उस के बाद एक

झटके से अपने शरीर को आधा झुका कर वह नीचे गिरे पेन को उठाने लगा.

अचानक से झटके के साथ अपना पेन उठाने की वजह से राजेश ने अपनी कमर की मांसपेशियों में हल्का खिंचाव महसूस किया.

उसे एक पल के लिए भरोसा ही नहीं हुआ कि उस के जवान शरीर में खिंचाव कैसे आ सकता है भला. उस के बाद उस ने अपने बैग से लंच के लिए खाने का डब्बा निकाला और अपने दोस्तों के साथ औफिस की कैंटीन में खाना खाने के लिए निकल गया.

खाना खाते हुए उस ने अपने दोस्तों को दोपहर को हुई अपनी उस घटना के बारे में बताया तो हर कोई उसे अपने शरीर में खिंचाव ठीक करने के तरहतरह की तरकीबें बताने लगा.

कोई उसे डाक्टर के पास जाने के लिए कहता तो कोई उसे योगा करने की हिदायत देता. यह देख का औफिस के मैनेजर विनय, जोकि राजेश का ही दोस्त था, ने राजेश को अपने शरीर पर मसाज करवाने की सलाह दी.

विनय ने राजेश से कहा, ''मेरी मान तो तुझे अपने शरीर पर मसाज करवा लेनी चाहिए. हमारा शरीर समय समय पर अपने पुर्जों के रखरखाव के लिए इन चीजों की मांग करता है.''

राजेश ने विनय की बात को गौर से सुनते हुए सवाल किया, ''यार मसाज से कहां कुछ ठीक होता है?''

विनय ने राजेश के सवाल का जवाब देते हुए कहा, ''मसाज करवाने के कोई साइड इफेक्ट्स भी तो नहीं हैं. अगर तू इस के लिए डाक्टर के पास जाता है तो

वो तुझे दवाइयां देंगे, दवाइयों से साइड इफेक्ट्स के खतरे भी तो होंगे. इस से बेहतर है कि तू प्राकृतिक तरीके से अपने शरीर की मालिश करवा ले. इस में कोई नुकसान भी नहीं है.''

राजेश को विनय की बातों में कुछ तो दम दिखा और उस ने तय कर लिया कि वह जल्द से जल्द अपने शरीर की मालिश करवाएगा ताकि ये समस्या और न बढ़ सके.

उस ने विनय से अगले दिन की छुट्टी मांगी और उस से किसी मसाज सेंटर के बारे में पूछा. अगले दिन वह सुबह 10 बजे के आसपास अपने घर से मसाज करवाने के लिए निकला.

उसे अपने इलाके में तो कहीं भी कोई स्पा सेंटर नहीं दिखाई दिया तो उस ने अपने फोन में इंटरनेट की मदद से दिल्ली में स्पा सेंटर तलाशना शुरू किया. इंटरनेट पर उसे दिल्ली के अच्छे स्पा सेंटर की एक लंबीचौड़ी लिस्ट दिखाई दी.

उस ने उत्तम नगर से नजदीक द्वारका में एक स्पा सेंटर में जाने का तय कर लिया. रास्ते से उस ने आटो लिया और द्वारका की ओर निकल पड़ा.

करीब 20 मिनट बाद वह द्वारका में उस मसाज व स्पा सेंटर पर पहुंच गया, जो उस ने गूगल से खोजा था. स्पा सेंटर के बाहर एक बड़ा सा बोर्ड लगा था, जिस पर गुलाब के फूल, तेल, चंदन और कई तरह की चीजों के फोटो छपे थे.

काले रंग के शीशों के दरवाजे को राजेश ने खोल कर सेंटर में प्रवेश किया तो देखा कि अंदर रिसैप्शन में बेहद हल्की लाइट जल रही थी.

सेंटर के अंदर रौशनी इतनी कम थी कि सिर्फ रिसेप्शन काउंटर पर बैठी महिला का चेहरा और आसपास की एकाध चीज ही नजर आ रही थी. लेकिन सेंटर के अंदर चीजों की सजावट देख कर राजेश काफी प्रभावित हुआ. उसे ये सब देख कर काफी अच्छा सा महसूस हो रहा था.

रिसैप्शन पर बैठी सुंदर सी युवती ने इधरउधर देखते राजेश का ध्यान तोड़ते हुए पूछा, ''जी सर, आप कैसी मसाज करवाना चाहते हैं?''

राजेश का ध्यान एकाएक रिसैप्शन पर बैठी युवती पर गया और वह हकपकाते हुए बोला, ''मुझे नहीं पता. मैं पहली बार मसाज करवाने आया हूं.''

रीटा राजेश की ओर आई और टेबल के ऊपर पड़े तेल की बोतल उठा कर राजेश के पीठ पर उड़ेलने लगी. हलके गरम तेल की छुअन राजेश अपने पीठ पर महसूस कर रहा था.

दरअसल, राजेश रिसैप्शन पर बैठी युवती की सुंदरता को देख कर और ज्यादा हकपका रहा था.

रिसैप्शन पर बैठी युवती ने राजेश के हकपकाने और घबराने का कारण जान लिया था. वह समझ गई थी कि यह पहली बार मसाज करवाने के लिए आया है और अपने सामने सुंदर सी महिला को देख कर घबरा रहा है.

महिला ने राजेश की घबराहट को कम करने के लिए उस से दोस्ताना व्यवहार करते हुए सब से पहले अपना नाम बताया. फिर बोली, ''सर, घबराने की जरूरत नहीं है. मेरा नाम पूनम है और मैं ये स्पा सेंटर संभालती हूं. सर, आप यह बताइए कि कैसी मसाज करवाना

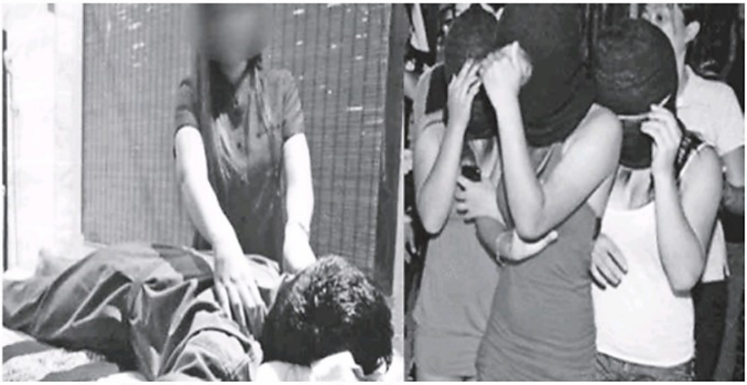

एक स्पा सेंटर में छापे के दौरान पकड़ी गई लड़कियां

पसंद करेंगे? क्योंकि हमारे पास कई वैरायटी के मसाज आप्शन हैं.''

पूनम की बात सुन कर राजेश की घबराहट थोड़ी कम हुई और वह बोला, ''पूनमजी, दरअसल मुझे पता ही नहीं है कि मुझे कौन सी मसाज करवानी है. कल औफिस में काम करते समय मेरा पेन नीचे गिर गया था. जब मैं उसे उठाने लगा तो मुझे कमर में खिंचाव महसूस हुआ. मेरे मैनेजर ने मुझे सलाह दी कि मुझे मसाज करवाना चाहिए, इसीलिए मैं यहां आप के पास आया हूं.''

''आप बिलकुल सही जगह पर आए हैं सर. आप को चिंता करने की जरूरत नहीं है. इस समस्या के लिए हम अपने ग्राहकों को स्पैशल मसाज की सलाह देते हैं सर. इस में हर तरह के मसाज का आनंद लिया जा सकता है.'' पूनम ने राजेश को अपने स्पा सेंटर का मेनू कार्ड थमाते हुए कहा.

मेनू कार्ड अपने हाथ में लेते हुए राजेश ने स्पैशल मसाज पर नजर घुमाई और उस ने देखा कि उस की कीमत 2,500 रुपए थी. राजेश ने पूनम को उन के स्पैशल मसाज पर मंजूरी देते हुए कहा, ''ठीक है मैडम. आप स्पैशल मसाज ही करा दीजिए.''

राजेश के यह कहते ही दुकान की धीमी रौशनी को चीरते हुए हलके गुलाबी रंग की ड्रेस में कुछ युवतियां, जिन की उम्र करीब 24 से 30 साल की होगी, राजेश के सामने आ कर खड़ी हो गईं.

सब ने एकएक कर के राजेश से हाथ मिलाते हुए अपना नाम बताया. उस समय वहां एकलौता राजेश ही पुरुष था और बाकी सब युवतियां थीं.

इस से पहले कि राजेश उन सभी के उस से हाथ मिलाने की वजह जान पाता, इतनी देर में रिसैप्शन में बैठी पूनम बोल पड़ी, ''सर, ये सभी हमारे स्पा सेंटर में मसाज करती हैं. आप इन में से किसी की भी सेवा ले सकते हैं.''

राजेश अभी भी घबराया हुआ था. उस के जीवन में ऐसा कुछ पहली बार हो रहा था. हालांकि घबराहट की उस घड़ी में भी राजेश मन ही मन बेहद खुश था. उस ने सभी युवतियों पर फिर से नजर दौड़ाई और उन सब में से जो सब से खूबसूरत महिला थी, उसे पसंद कर लिया. उस का नाम रीटा था. राजेश ने रीटा की तरफ इशारा करते हुए पूनम से

पूछा, ''पूनमजी, क्या ये स्पैशल मसाज कर सकती हैं?''

इस से पहले कि पूनम राजेश के सवाल का जवाब देती, रीटा बोल पड़ी, ''जी सर, आप मेरे साथ आइए.''

यह सुन कर पूनम ने रीटा को राजेश के सामने कहा, ''ठीक है, सर को तुम रूम में ले जाओ और हां, सर का खास ध्यान रखना. क्योंकि यह यहां पहली बार मसाज कराने आए हैं.''

रीटा ने पूनम की बातों पर हामी भरी और वह राजेश को अपने साथ सेंटर की पहली मंजिल पर बने एक केबिन में ले गई. रीटा ने राजेश को जूते उतार कर अंदर आने को कहा.

राजेश कमरे में अंदर आते ही चुपचाप दरवाजे के पास खड़ा हो कर कमरे में मौजूद चीजों को एक नजर देखने लगा. कमरे में दुकान के रिसैप्शन से भी कम रौशनी थी, लेकिन चीजें दिखाई दे रही थीं.

उस ने देखा कि वह कमरा ज्यादा बड़ा नहीं था. कमरे के बीचोंबीच एक सिंगल बैड था, जहां वह लेटने वाला था. इस के अलावा कमरे के एक कोने में एक लंबा सा टेबल था, जहां पर मसाज के लिए सभी तरह का सामान रखा हुआ था.

रीटा ने दरवाजे के बगल में खड़े राजेश को आवाज लगाते हुए कहा, ''सर, यह आप का टावल है. आप बाथरूम में जा कर नहा लीजिए और इस टावल में खुद को लपेट कर इस बिस्तर पर लेट जाइए. मैं 15 मिनट के बाद आऊंगी. तब तक आप रेडी हो जाइए.''

राजेश ने रीटा की बातों को चुपचाप सुना और उस की बातों पर हामी भरी. राजेश बिना किसी देरी के कमरे के अंदर मौजूद बाथरूम में गया, अपने कपड़े एक तरफ टांगे, बाथरूम का झरना खोला और नहाया. 5 मिनट में नहा कर और तैयार हो कर वह रूम में वापस गया.

उस ने देखा कि रीटा अभी वापस नहीं लौटी थी. मन में उत्सुकता का समंदर ले कर राजेश कमरे में उस बिस्तर पर सीने के बल लेट गया और रीटा का इंतजार करने लगा.

करीब 10 मिनट के बाद रीटा कमरे में आई और बोली, ''सर, अगर आप तैयार हैं तो क्या मैं मसाज शुरू कर सकती हूं?''

राजेश ने रीटा के सवाल का जवाब दिया और कहा, ''जी रीटाजी, मैं तैयार हूं. आप शुरू कर सकती हैं.''

रीटा राजेश की ओर आई और टेबल के ऊपर पड़े तेल की बोतल उठा कर राजेश के पीठ पर उड़ेलने लगी. हलके गरम तेल की छुअन राजेश अपने पीठ पर महसूस कर रहा था.

तेल उड़ेलने के बाद रीटा ने जब अपने नाजुक हाथ राजेश की पीठ पर मलने शुरू किए तो राजेश के पूरे बदन में झुरझुरी सी फैल गई.

राजेश के जीवन में यह पहली बार था, जब कोई महिला उस के शरीर को छू रही थी. राजेश अपनी आंखें बंद कर के रीटा की स्पैशल मसाज का पूरा मजा लेने लगा.

उस के शरीर के कुछ हिस्सों में तनाव पैदा हो गया था, जिसे जबजब रीटा जानेअनजाने अपने हाथों से छू लेती तो राजेश के पूरे बदन में मानो करंट सा दौड़ जाता.

रीता ने अपने हाथों से राजेश के बदन के हर हिस्से पर तेल लगा दिया था. अब बारी मालिश की थी. जब रीता ने राजेश के गरदन और कंधे पर अपने हाथ मालिश के लिए फेरने शुरू किए तो राजेश को हल्काहल्का दर्द महसूस होने लगा.

लेकिन इस दर्द का एहसास तीखा नहीं था, बल्कि मीठा था. रीटा के हाथों को महसूस करते हुए राजेश कब गहरी नींद में चला गया, उसे होश ही नहीं था.

राजेश के सो जाने के बाद रीटा ने उस के शरीर के हर हिस्से की अपने हाथों से मालिश की. मालिश के बाद रीटा ने हल्के गरम पत्थर राजेश की पीठ और गरदन पर रख दिए, जोकि इसी स्पैशल मसाज का हिस्सा थे.

जब राजेश की आंखें खुलीं और वह नींद से जागा तो उसे अपनी पीठ और गरदन पर गरमाहट महसूस हुई और रीटा उस के सामने चुपचाप बैठी थी. राजेश ने गरदन उठाई और रीटा से कहा, ''अरे रीटाजी, मसाज हो गई है क्या ?''

रीटा ने राजेश के सवाल का जवाब देती हुए कहा, ''नहीं सर, अभी एक और सेशन बाकी है. आप काफी देर से सो रहे थे तो मैं ने आप को डिस्टर्ब नहीं किया.''

यह सुन कर राजेश ने कहा, ''जी मैडम. मैं काफी गहरी नींद में सो गया

दिल्ली सरकार के सख्त कदम

हाल ही में 2 अगस्त को दिल्ली सरकार ने शहर में स्पा और मालिश केंद्रों के संचालन पर नजर रखने और विनियमित करने के लिए सख्त दिशानिर्देश दिए. जिस में ग्राहकों और कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सभी कर्मचारियों के लिए अनिवार्य रूप से पुलिस मंजूरी हासिल करना और परिचालन घंटे को सुबह 9 बजे से रात 9 बजे तक सीमित करना शामिल है.

दिल्ली सरकार ने यौन शोषण, तसकरी और क्रौस जेंडर मालिश को रोकने के लिए भी इन दिशानिर्देशों को जारी किया है. इसी के साथ ही दिल्ली सरकार कई गाइडलाइंस जारी कर के इन स्पा सेंटरों पर पैनी नजर गड़ाने का काम कर रही है.

नए दिशानिर्देशों में कई प्रावधानों को शामिल किया गया हैं. जैसे केंद्रों के कमरों में केवल स्वत: बंद होने वाले दरवाजे लगाने होंगे, कोई कुंडी या बोल्ट की अनुमति नहीं होगी. और सभी बाहरी दरवाजे काम के घंटों के दौरान खुले रहने के आदेश दिए हैं.

इसी के साथ ही इन स्पा सेंटरों में पुरुषों और महिलाओं के लिए अलगअलग मालिश के कमरे, शौचालय, चेंजिंग रूम और स्नानघर के होने की बातें कही हैं.

अब देखना यह है कि क्या सरकार के इन कठोर दिशानिर्देशों और नियमों का स्पा सेंटरों में चलने वाले देह व्यापार पर कोई असर पड़ता है या नहीं. ○

था. कसम से मजा आ गया. पहली बार बौडी मसाज करवा रहा हूं. मुझे अंदाजा ही नहीं था कि इस में इतना मजा आता है.'' कह कर राजेश चुप हो गया.

जब गरम पत्थर को हटाने का समय हो गया तो रीटा कुरसी से उठी और एकएक कर राजेश के शरीर से पत्थर हटाते हुए बोली, ''सर, क्या आप एक्स्ट्रा सर्विस लेना चाहते हैं?''

राजेश ने रीटा का सवाल सुन तो लिया था लेकिन उसे समझ नहीं आया कि ये एक्स्ट्रा सर्विस भला कौन सी बला है. तब राजेश ने रीटा से सवाल किया, ''एक्स्ट्रा सर्विस मतलब? मैं ने तो स्पैशल मसाज के पैसे काउंटर पर दे दिए थे.''

रीटा ने राजेश के सवाल पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा, ''नहीं सर, स्पैशल मसाज तो एक अलग चीज है, एक्स्ट्रा सर्विस में हम आप के शरीर के कुछ खास हिस्सों की खास मसाज करते हैं. जिस के पैसे आप को काउंटर पर नहीं, बल्कि हमें देने होते हैं.''

राजेश रीटा की बातों का इशारा समझने लगा था. वह रीटा से बोला, ''मुझे आप की एक्स्ट्रा सर्विस के कितने पैसे और देने होंगे?''

रीटा ने राजेश के सवाल का जवाब देते हुए कहा, ''सर ये डिपेंड करता है कि आप कैसी सर्विसेज लेना चाहते हैं.''

राजेश की उत्सुकता अब सातवें आसमान पर पहुंच चुकी थी. उस के शरीर का रोमरोम मानो खड़ा हो गया था. उस ने रीटा को धीमी आवाज में कहा, ''ठीक है, आप अपनी सारी एक्स्ट्रा सर्विस मुझे दे दीजिए.''

रीटा ने बिना वक्त बरबाद किए, राजेश को पीठ के बल लेटने को कहा. अब रीटा की हल्के गुलाबी रंग की यूनिफार्म भी ढीली हो गई थी. राजेश अपने सामने रीटा की ढीली पड़ती यूनिफार्म से उस के अंगों को साफ देख पा रहा था.

देखते ही देखते एक्स्ट्रा सर्विस के नाम पर राजेश ने वो सब हासिल कर लिया था, जिस से वह अब तक अछूता था. राजेश और रीटा दोनों के शरीर आपस में जुड़ गए थे. ऐसा लग रहा था जैसे वे दोनों एकदूसरे के लिए ही बने हों.

कुछ समय बाद जब रीटा की नसें ढीली पड़तीं तो वो राजेश की पीठ में अपने नाखून गड़ा देती. उन के बीच का यह शारीरिक मेल काफी लंबा चला. अंत में जब उन दोनों के बीच सब कुछ खत्म हो गया तो राजेश फिर एक बार बाथरूम में जा कर नहाया. उस ने अपने कपड़े पहने.

राजेश ने खुश हो कर अपने बटुए से रीटा को उस की एक्स्ट्रा सर्विस के पैसे दिए और नीचे रिसैप्शन पर आ कर पूनम को स्पैशल मसाज के लिए शुक्रिया कहा और दुकान के बाहर से आटो पकड़ा और घर आ गया. राजेश शारीरिक थकावट और दर्द के मारे अगले 2 दिनों तक औफिस नहीं जा पाया.

स्पा सेंटर की अनोखी दुकानें, जिस का बोर्ड देख कर ही लोगों के मन में अनोखे खयाल पैदा हो जाते हैं, आजकल बढ़ते 'गुलाबी धंधे' का अड्डा बन रहे हैं. बौडी मसाज के नाम पर लोग आजकल स्पा सेंटरों में जाते हैं और अपने दिलों में दबी इच्छाओं की पूर्ति कर लेते हैं.

स्पा सेंटरों में मसाज कराने का मेनू कार्ड बेशक लंबाचौड़ा क्यों न हो, लेकिन लोग कीमत की परवाह किए

दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष
स्वाति मालीवाल

बगैर स्पा व मसाज सेंटरों में जा कर अपनी पसंद की महिला से मनचाहा मसाज करवाते हैं.

चाहे वह स्वीडिश मसाज हो, डीप टिश्यू मसाज हो, हौट स्टोन मसाज हो या फिर ट्रिगर पौइंट मसाज हो. मसाज कराने के ग्राहक के पास दरजनभर औप्शन होते हैं, जिस में से वह कोई एक चुनता है और उस के दिल में एक ही तरह के मसाज की तमन्ना होती है.

दिल्ली के बड़ेबड़े और हर रिहाइशी इलाकों में स्पा सेंटर खुले हैं. पहाड़गंज, करोलबाग, ग्रीन पार्क, महिपालपुर, द्वारका, रमेश नगर, लाजपत नगर वगैरह जैसे कई इलाकों में स्पा सेंटरों की दुकानों की भरमार है.

पहले के समय देह व्यापार के लिए खास जगह मौजूद होते थे. लेकिन जैसेजैसे प्रशासन का शिकंजा इस तरह के गैरकानूनी धंधों को रोकने के लिए मजबूत हुए हैं, वैसेवैसे देह व्यापार से जुड़े लोगों ने खुद को बनाए रखने के लिए अपना रूप भी बदला है.

बड़े शहरों में मौजूद रेलवे स्टेशनों के आस पास मौजूद होटल आज कल स्पा सेंटरों में तब्दील होने लगे हैं. यही नहीं बड़ेबड़े होटलों के भीतर भी स्पा सेंटर जैसी सुविधाएं मौजूद होती हैं, जो चौबीसों घंटे काम करती हैं.

इन स्पा सेंटरों में देह व्यापार से जुड़े कई लोग जुड़े हुए होते हैं. स्पा सेंटरों में मौजूद मसाज करने वाले कई ऐसे हैं जिन्हें मसाज करना आता भी नहीं है, बस, वो देह व्यापार के चलते इन स्पा सेंटरों से जुड़ जाते हैं और अपना धंधा चला रहे हैं.

ऐसे सेंटरों से कई विदेशी कालगर्ल्स भी जुड़ी होती हैं. ग्राहकों की मांग पर विशेष रूप से मसाज करने के बहाने उन्हें बुलाया जाता है.

दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल ने साल 2018 में दिल्ली पुलिस, श्रम विभाग और सिविक एजेंसियों से उन के इलाके में चलने वाले स्पा सेंटरों की एक सूची मांगी थी. इस में मुख्यरूप से, कितनों के पास लाइसेंस हैं, कितनों के खिलाफ काररवाई हुई, स्पा सेंटरों का निरीक्षण इत्यादि जानकारी देने के लिए कहा गया था. 28 नवंबर, 2018 तक इन सभी के बारे में विस्तृत जानकारी मांगी गई थी.

स्पा सेंटर वाले कहते हैं कि उन के स्पा सेंटर सुरक्षित और सही हैं, रेड पड़ने का कोई चांस ही नहीं है. लेकिन अखबारों में बेहद कम ही ऐसी खबरें देखने को मिलती हैं जिस में स्पा सेंटरों पर काररवाई होती हुई कोई खबर दिखाई देती हो.

इस से अंदाजा लगाया जा सकता है कि स्पा सेंटरों की हर किसी से सेटिंग हैं और इन सेंटरों में होने वाला 'गुलाबी धंधा' धड़ल्ले से चल रहा है. ●

वाराणसी की पौश कालोनी में सजता देह बाजार

—संतोष देव गिरि

वाराणसी को पौराणिक नगरी के रूप में जाना जाता है. इस के अलावा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संसदीय क्षेत्र होने के नाते भी शहर का महत्त्व बढ़ गया है. लौकडाउन खुलने के बाद इस शहर में भी जिस्मफरोशी के धंधे में इजाफा हुआ है. मडुआडीह इलाका तो देहव्यापार के रूप में ऐसा उभर रहा है कि...

1076
1098
102
गंज.

कोरोना कर्फ्यू का वीकेंड यानी शनिवार का दिन था. चेतगंज की थानाप्रभारी इंसपेक्टर संध्या सिंह लौकडाउन के दौरान सुबहसुबह साढ़े 6 बजे के करीब चाय की चुस्कियों के साथ इलाके का एक बार मुआयना करने की योजना बना रही थीं. तभी अचानक 4 लोग थाने में आए.

उन्हें देख कर वह बोलीं, ''जी, बताइए मैं आप लोगों की क्या मदद कर सकती हूं?''

एक आगंतुक दाएंबाएं देखता हुआ हाथ जोड़ कर बोला, ''साहब, हम लोग पिशाचमोचन क्षेत्र के रहने वाले हैं. हमारे मोहल्ले के एक मकान में इन दिनों तरहतरह के लोगों का आनाजाना होने लगा है.''

''तरहतरह के लोगों से आप का क्या मतलब है?'' संध्या सिंह ने पूछा.

''हमें संदेह है कि मकान में कोई गलत काम होता है. क्योंकि वहां हमेशा नएनए लोग आतेजाते देखे गए हैं. प्लीज, आप वहां की जांच कीजिए, अपने आप पता चल जाएगा कि बात क्या है.''

उस व्यक्ति की बात पूरी होते ही साथ में आया दूसरा व्यक्ति बोल पड़ा, ''जी मैडम, वहां की संदिग्ध गतिविधियों का खुलासा हो जाएगा.''

''वे किस तरह के लोग होते हैं?'' संध्या को अधिक जानने की जिज्ञासा हुई.

''मैडमजी, आनेजाने वाले लोग दिखने में संभ्रांत लगते हैं, वे 40-45 की उम्र के दिखते हैं. उन के हाथों में रैपर में लिपटा कोई न कोई गिफ्ट पैकेट भी होता है.'' एक अन्य व्यक्ति बोला.

मोहल्ले के लोगों की बातों को गौर से सुनने के बाद संध्या सिंह ने शिकायत करने वालों के नाम और कौन्टैक्ट के लिए मोबाइल नंबर के साथ कुछ पौइंट

नोट कर लिए और छानबीन करने का आश्वासन दे कर उन्हें जाने को कहा.

पिशाचमोचन मोहल्ले के नागरिकों द्वारा बताई गई बातों पर गौर करते हुए उन्होंने तुरंत एसीपी (चेतगंज) नितेश प्रताप सिंह को भी अवगत करवा दिया. उन्हें शिकायत संबंधी पूरी जानकारी दी.

मामला उत्तर प्रदेश के पौराणिक शहर वाराणसी का था. ऊपर से यह देश के प्रधानमंत्री का संसदीय क्षेत्र है. इसे देखते हुए पुलिस ने संदिग्ध मकान में छापेमारी की योजना बना ली. संध्या सिंह सहित पुलिस टीम में कुछ और महिला पुलिसकर्मियों को शामिल किया गया.

सूचना के आधार पर एक पुलिसकर्मी ने पिशाचमोचन स्थित मकान नंबर सी 21/24 के मुख्य गेट पर दस्तक दी. उस की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई. कई बार आवाज लगाने और गेट पीटने के बाद तो एक उम्रदराज व्यक्ति ने मुख्य गेट का

सैक्स कारोबार का गढ़ बनता जा रहा है मड़ुआडीह

वाराणसी में सैक्स अपराध का धंधा कोई नया नहीं है. दिल्ली के जीबी रोड, इलाहाबाद, मेरठ इत्यादि शहरों की तरह वाराणसी का मड़ुआडीह इलाका सैक्स बाजार के रूप में कुख्यात बताया गया है.

जानकारों की मानें तो वाराणसी में पड़ोसी देश नेपाल से ले कर देश के कई राज्यों मसलन असम, बिहार, ओडिशा, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र इत्यादि से कम उम्र की लड़कियां बुलाई जाती हैं. उन से सैक्स के लिए मोबाइल फोन से संपर्क साधा जाता है. उन का अपना नेटवर्क बना हुआ है.

हाल के महीनों में जिस तेजी के साथ वाराणसी में एक पर एक कई जगहों पर सैक्स रैकेट का पुलिस ने खुलासा किया है, उसे देख कर इस बात को बल मिलने लगा है कि इस गिरोह की जड़ें वाराणसी में काफी गहरी हो चुकी हैं.

वाराणसी के पौश इलाकों में से जगतगंज के कैलगढ़ कालोनी में 31 मई, 2021 को एक सैक्स रैकेट का खुलासा हुआ था. तब पुलिस ने एक मकान के फर्स्ट फ्लोर पर चल रहे रैकेट का खुलासा करते हुए 3 युवतियों समेत 6 लोगों को पकड़ा था. पुलिस के अनुसार सैक्स रैकेट के लिए लड़कियां फोन द्वारा बुलाई जाती थीं. फोन पर ही ग्राहकों से सौदा तय हो जाता था.

गिरफ्तार युवतियों में एक प्रयागराज की और 2 वाराणसी की थीं. गिरफ्तार युवकों में शिवपुर के लक्ष्मणपुर निवासी सोनू पटेल, चोलापुर के अतुल सिंह और रोहनिया के राजेश सिंह शामिल थे.

सैक्स रैकेट की सूचना मिलने पर रात में छापेमारी की गई थी. इस मामले में मकान मालिक ने बगैर पुलिस सत्यापन के मकान किराए पर उठा लिया गया था.

एक अन्य मामला वाराणसी के नाटी इमली मोहल्ले के नई बस्ती का भी सामने आया. वहां के रिहायशी इलाके के एक मकान में जब 30 मई, 2021 को छापेमारी की गई तब सैक्स रैकेट का भंडाफोड़

सैक्स रैकेट के खुलासे में पकड़ी गई लड़कियां

हुआ. मौके से मकान मालकिन और 2 युवतियों की गिरफ्तारी हुई. पुलिस की काररवाई के दौरान 2 युवक चकमा दे कर भाग गए.

पुलिस ने मकान से छापे के दौरान कई आपत्तिजनक सामान भी बरामद किए. महिला और दोनों युवतियों के खिलाफ जैतपुरा थाने में मुकदमा दर्ज किया गया. मौके से भागे खोजवां निवासी राकेश गुप्ता सहित 2 युवकों की तलाश में पुलिस की टीमें लगाई गईं.

नाटी इमली क्षेत्र की नई बस्ती स्थित इस मकान में सैक्स रैकेट चलाए जाने की सूचना पा कर जैतपुरा थाने की पुलिस ने एसीपी (चेतगंज) नितेश प्रताप सिंह के निर्देशानुसार इंसपेक्टर (जैतपुरा) शशिभूषण राय के साथ चिह्नित मकान में छापा मारा था.

मकान मालकिन और दोनों युवतियों के खिलाफ देह व्यापार अधिनियम के तहत मामले दर्ज किए गए.

इस तरह से एक सप्ताह के भीतर ही वाराणसी पुलिस ने कई सैक्स ठिकानों पर की छापेमारी की. इस में वाराणसी के चेतगंज थाना की पुलिस ने 29 मई को पिशाचमोचन स्थित कालोनी में किराए के मकान में छापेमारी के अलावा 31 मई को चेतगंज थाने की पुलिस ने लहुराबीर क्षेत्र के कैलगढ़ कालोनी स्थित अपार्टमेंट में किराए के फ्लैट में छापेमारी कर 3 युवतियों और 3 युवकों को गिरफ्तार कर लिया.

इस के पहले भी वाराणसी की घनी आबादी वाले रिहायशी इलाके में देह व्यापार का धंधा बीते कुछ महीनों में काफी फलफूल गया था.

जैतपुरा, लालपुर, पांडेयपुर, और चेतगंज थाना क्षेत्रों में जो भी सैक्स रैकेट पकड़े गए, वह घनी आबादी वाले रिहायशी इलाकों में स्थित किराए के मकानों में संचालित हो रहे थे. इस संबंध में डीसीपी काशी जोन अमित कुमार ने सभी थानाप्रभारियों को किराएदारों के सत्यापन करवाने का निर्देश दिया है. ○

चैनल खोल कर बाहर की ओर झांकते हुए तेज आवाज में पूछा, ''कौन है?''

बाहर पुलिस टीम को देख कर उस की आवाज धीमी पड़ गई. वह धीमे से बोला, ''क्या बात है भई, आप लोग यहां?''

उस का कोई जवाब दिए बगैर पुलिस टीम गेट को एक झटके में बाहर की ओर खोलते हुए मकान के भीतर धड़धड़ाती हुई घुस गई.

कुछ पल में ही पूरी पुलिस टीम एक कमरे में थी. सभी पुलिसकर्मी संदिग्ध निगाहों से कमरे में इधरउधर देखने लगे. संध्या सिंह की पैनी निगाहें कुछ तलाशने की स्थिति में थीं.

पुलिस की निगाह कमरे से जुड़े एक दरवाजे की तरफ गई. वहां का परदा हटाते ही एक महिला पुलिसकर्मी अनायास बोल पड़ी, ''मैडमजी, इधर देखिए... ये दुष्ट लोग.''

जब संध्या ने उस कमरे में जा कर देखा तो उन की आंखें भी फटी की फटी रह गईं. अंदर का नजारा देख कर महिला पुलिसकर्मी शर्म से आंखें झुकाए तुरंत बाहर आ गई. जबकि एसीपी चेतगंज ने फौरन कड़क आवाज में सभी को कपड़े पहन कर बाहर आने को कहा.

एसीपी ने कमरे से बाहर आ कर पूछा, ''मकान का मालिक कौन है?''

वहीं पास खड़े व्यक्ति ने कहा, ''जी मैं हूं.''

''क्या नाम है तुम्हारा?'' एसीपी बोले.

''सुरेश कुमार,'' वह व्यक्ति बोला.

''ये सब यहां क्या है? कौन हैं ये लोग?''

तब तक कई लड़कियां और लड़के अंदर के कमरे से बाहर आ चुके थे. उन की ओर ऊंगली उठाते हुए एसपी ने पूछा.

अब सुरेश को काटो तो खून नहीं. वह हक्काबक्का डरी जुबान में बोला, ''साहब, मैं इन लोगों के बारे में कुछ नहीं जानता, केवल इतना जानता हूं कि ये लोग किसी कंपनी में काम करते हैं.''

मकान मालिक की बात पूरी होने वाली ही थी कि तभी इंसपेक्टर संध्या सिंह एक जोरदार तमाचा जड़ते हुए बोलीं, ''तुम्हारे मकान में कोई इस प्रकार से रह रहा है और तुम्हें कोई जानकारी नहीं. वह भी एकदो नहीं कई लोग.''

''...जी...जी साहब, मैं सच कह रहा हूं, मुझे कुछ नहीं पता.''

इतना कहने पर उस के गाल पर दूसरा जोरदार तमाचा पड़ा. लेडी पुलिस से कई लोगों के सामने तमाचा खा कर वह शर्मसार हो गया.

संध्या सिंह बोलीं, ''जब तुम्हें इन लोगों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी तो फिर उन्हें कमरा किराए पर कैसे दे दिया था?''

इस का जवाब देने के बजाय वह सिर झुकाए खड़ा रहा.

पुलिस सभी को थाने ले आई. उन से अलगअलग गहन पूछताछ की जाने लगी. इस दौरान कालोनी के कई लोग भी काफी संख्या में जमा हो गए. हर कोई जिज्ञासा भरी नजरों से देख रहा था.

पूछताछ में कई बातें खुल कर सामने आईं. पुलिस टीम को मौके पर 2 युवतियां व 3 युवक बिलकुल आपत्तिजनक स्थिति में मिले थे. कमरे की तलाशी लेने के दौरान आपत्तिजनक सामग्रियों में कंडोम के पैकेट, 4 मोबाइल फोन व नशीली दवाएं बरामद हुईं.

इस तरह से शहर की पौश कालोनी

में सैक्स रैकेट गिरोह का परदाफाश हो चुका था. थोड़े समय में इस की खबर पूरे शहर में फैल गई थी. जिस का असर यह हुआ था कि मीडिया के लोग और कुछ समाजसेवी संगठन भी थाने पहुंच गए.

कुछ मानवाधिकार संगठन के लोगों ने चेतगंज थाने जा कर मामले की तह में जाने का दबाव बनाया. इस की सूचना काशी जोन के डीसीपी अमित कुमार को भी दी गई. वे भी चेतगंज थाने पहुंच गए.

डीसीपी (काशी जोन) अमित कुमार

पूछताछ के दौरान पकड़ी गई 20 से 25 साल के बीच की उम्र वाली दोनों लड़कियों ने बताया, ''उन्होंने नौकरी करने वाली बता कर कमरा किराए पर लिया था.''

वह जानबूझ कर ऐशोआराम और मौजमस्ती की जिंदगी के लिए इस धंधे में उतरी थी. उसे अपनी शानोशौकत वाली जिंदगी की जरूरतों को पूरा करने के लिए अत्यधिक पैसे की लालसा थी. पुलिस के अनुसार पढ़ाई के साथसाथ वे अन्य कामों के बहाने देह व्यापार के धंधे में उतर आई थीं.

पूछताछ के दौरान 25 वर्षीय पारो (बदला हुआ नाम) ने बताया कि वह इस धंधे में पिछले 2 सालों से है.

मोबाइल फोन की मदद से वह अपने इस धंधे को अंजाम देती है. इस के लिए उस ने अपना कोडवर्ड बना रखा है. उस के कोडवर्ड को ग्राहक ही समझ पाते हैं.

पारो ने अपने धंधे के बारे में आगे बताया कि उन के इस धंधे में कई लोगों का हिस्सा होता है. उन का वह नाम नहीं जानती है. हां, चेहरा देखने पर जरूर पहचान लेगी.

पकड़े गए युवकों में एक रमेश 28 वर्ष, सुमित कुमार 29 वर्ष एवं राठौर 30 वर्ष ने बताया कि वे सभी वाराणसी शहर के ही निवासी हैं. पुलिस हिरासत में आने के बाद वे बारबार अपने बयानों को पलटते हुए अपना सही पताठिकाना बताने से कतराते रहे.

एसीपी नितेश प्रताप सिंह

उन का कहना था कि उन्हें वहां धोखे से लाया गया था, लेकिन जब पुलिस ने सख्ती दिखाई तब उन्होंने इस धंधे में शामिल होना स्वीकार कर लिया.

इसी प्रकार पुलिस टीम ने पकड़ी गई दूसरी लड़कियों और लड़कों से अलगअलग कमरों में पूछताछ के बाद पांचों के खिलाफ 29 मई, 2021 को देह व्यापार अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर लिया गया. उन की डाक्टरी जांच करवाई गई.

बाद में उन्हें न्यायालय में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया. कथा के लिखे जाने तक किसी भी आरोपी को जमानत नहीं मिल पाई थी. ●

—कथा में कुछ पात्रों के नाम काल्पनिक एवं पुलिस सूत्रों व समाचार पत्रों पर आधारित है

युद्ध के बाद फिर सैक्स गुलाम

—निखिल

हर युद्ध के बाद ज्यादा जुल्म हमेशा महिलाओं को ही झेलने होते हैं. भोगविलास की वस्तु समझते हुए सैनिकों द्वारा उन के जिस्म को रौंदा जाता है. अफगानिस्तान में तालिबान का कब्जा हो जाने के बाद वहां की महिलाओं को भी सैक्स गुलाम बनाने की कोशिश हो रही है...

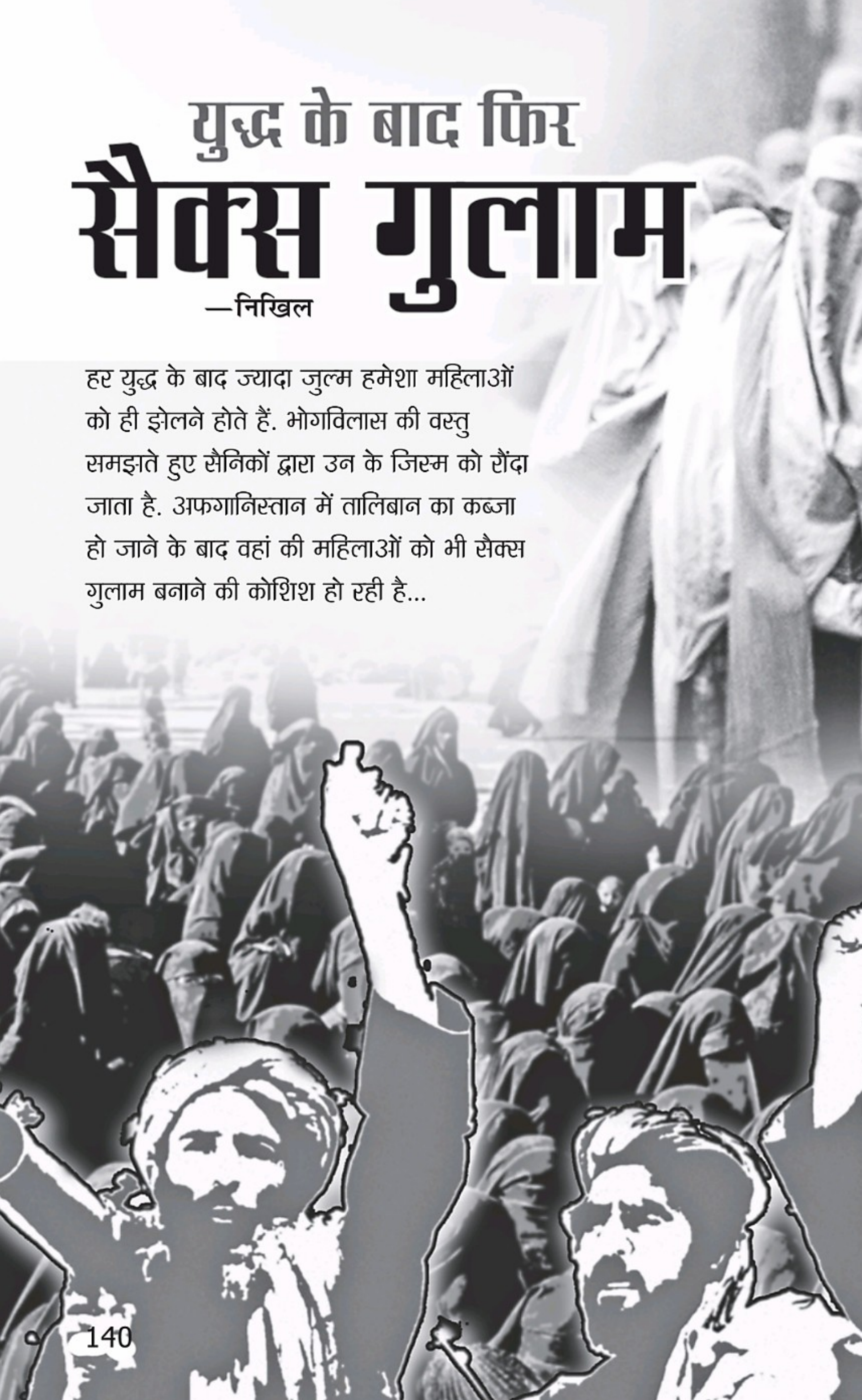

अफगानिस्तान में तालिबान के काबिज हो जाने के साथ ही महिलाओं पर अत्याचार की नई कहानी शुरू हो गई है. नाबालिग लड़कियों और युवतियों को सैक्स गुलाम बनाए जाने की आशंका है. महिलाओं को एक बार फिर यौन दासता की ओर धकेला जा सकता है.

हालांकि विभिन्न देश इन हालात पर नजर रखे हुए हैं, लेकिन अभी हालात ज्यादा साफ नहीं हुए हैं. इस से अफगान में फिर से आदिम युग लौट सकता है.

यह कहानी इसलिए शुरू हुई है कि काबुल पर जीत के बाद तालिबानी लड़ाके जश्न मना रहे हैं. सोशल मीडिया पर ऐसे कई वीडियो सामने आए हैं. इन

में आतंकी महलों और गवर्नर हाउस के भीतर अय्याशी करते हुए नजर आ रहे हैं.

तालिबानी लड़ाकों द्वारा घरघर जा कर लड़कियों और कम उम्र की महिलाओं को सैक्स गुलाम बना कर अपनी हवस का शिकार बनाया गया है. अफगानिस्तान के अलगअलग शहरों से लड़कियों और महिलाओं को अगवा किया गया है.

तालिबानी जिहादी कमांडरों ने अफगानिस्तान के इमामों से अपने इलाकों की 12 से 45 साल की लड़कियों और महिलाओं की सूची मांगी है ताकि उन की शादी अपने समूह के लड़ाकों से कराई जा सके.

अगर ये निकाह हुए तो इन महिलाओं को पाकिस्तान के वजीरिस्तान ले जा कर इस्लामी तालीम दी जाएगी और प्रामाणिक इसलाम में परिवर्तित किया जाएगा. तालिबान की वापसी से

अफगानी-पाकिस्तानी एक्ट्रेस

अब तालिबान दुनिया के सामने अपनी उदार छवि पेश करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन उस की हुकूमत में जिस तरह से महिलाओं पर बंदिशें लगाई जा रही हैं, उस से जाहिर है कि वह बिलकुल नहीं बदला है. तालिबान ने अफगानी-पाकिस्तानी एक्ट्रेस मलीशा हीना खान के खिलाफ फतवा जारी किया है.

मौडल और एक्ट्रेस मलीशा फिलहाल भारत में ही रहती हैं. वह अफगानिस्तान में महिलाओं पर हो रहे हर जुल्म की खबर लगातार ट्विटर पर शेयर करती रहती हैं. इसी बात से नाराज तालिबान ने उन के खिलाफ फतवा जारी किया है.

तालिबान की ओर से फतवा जारी किए जाने से 2 दिन पहले ही मलीशा ने कहा था कि काबुल में तालिबानियों ने आम लोगों को ले जा रही एक गाड़ी पर अंधाधुंध फायरिंग की. ये लोग जंग के मैदान से किसी सुरक्षित जगह पनाह लेने के लिए जा रहे थे.

तालिबानी मशीन गन से फायर कर रहे थे. उन्होंने सिविलियंस की गाड़ी पर ग्रेनेड भी फेंके. कई लोगों ने गाड़ी धीमी कर के यह भी दिखाने की कोशिश की कि उस में महिलाएं और बच्चे बैठे हैं. इस के बावजूद तालिबानी लड़ाकों ने उन पर फायरिंग की.

इस से कार में धमाका हुआ और सभी की मौके पर मौत हो गई. एक ट्विटर पोस्ट में मलीशा ने लिखा था कि 10 दिन के भीतर 300 महिलाओं, लड़कियों और नाबालिगों के साथ रेप किया गया. उन्हें जबरन शादी के लिए

महिलाएं सब से ज्यादा खौफजदा हैं. पिछले दिनों कुछ प्रांतों पर कब्जे के बाद से ही तालिबानी नेताओं ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया था.

तालिबान के ताजा आदेश ने अफगानिस्तान की महिलाओं और बेटियों तथा उन के परिवारों में गहरा खौफ पैदा कर दिया है. लोगों की आंखों में 1996 से 2001 का भयावह मंजर तैर रहा है.

तालिबान ने उस समय 5-6 साल के क्रूर शासन में महिलाओं पर तरहतरह के जुल्म किए थे. उन्हें पढ़ाई से दूर रखा गया. बुर्का पहनने पर मजबूर किया गया और बिना पुरुष संरक्षक के घर से बाहर जाने पर पाबंदियां लगा दी गई थीं. उस समय भी हजारों महिलाओं को सैक्स गुलाम बनाया गया था.

अब फिर से तालिबान में शामिल होने के लिए लड़ाके बनने वाले युवाओं को सैक्स सुख की पेशकश की जा रही है. उन्हें शादी करने के लिए महिलाएं मुहैया कराने का प्रलोभन दिया जा रहा है. यह शादी की आड़ में महिलाओं को यौन दासता की ओर धकेलने की एक रणनीति है.

तालिबान के खौफ से खूबसूरत अफगानी लड़कियों को उन के परिवार वाले घरों या दूसरी जगहों पर छिपा रहे हैं, ताकि तालिबानी लड़ाकों की कामुक नजर उन पर न पड़े.

ये लड़कियां अपनी जान और अस्मत की सलामती की दुआ कर रही हैं. मुंह मजबूर किया गया है.

मलीशा ने बताए तालिबानियों के जुल्म

तालिबानी लड़ाके घरघर जा कर महिलाओं और जवान लड़कियों की तलाश कर रहे हैं. इन से जबरदस्ती शादी की जा रही है. कुछ लड़कियों की उम्र तो 14-15 साल ही है. ये शादी तो बस नाम की है. इन के साथ कई मर्द संबंध बनाते हैं. कई बार तो एक वक्त में 10-10 मर्द ऐसा करते हैं.

मलीशा हीना खान काबुल में हुई हिंसा और लड़ाई में अपने परिवार के 4 सदस्यों को खो चुकी हैं. मलीशा पिछले कई सालों से मुंबई में रहती हैं. मलीशा का भाई व बहन सहित परिवार के 5-6 सदस्य अफगानिस्तान में ही छिपे हुए हैं. उन के चाचा, भतीजे और 2 चचेरे भाई लड़ाई में मारे गए.

मलीशा हीना खान 2018 में तब सुर्खियों में आई थीं, जब उन्होंने लोकप्रिय पाकिस्तानी गायिका राबी पीरजादा का समर्थन किया, जिन के प्राइवेट न्यूड फोटो और वीडियो लीक हो गए थे. ○

पर मोटी चादरें लपेटे महिलाएं अपना दर्द किसी से कह भी नहीं पा रही हैं.

दुनिया में ऐसा पहली बार नहीं हो रहा है. चाहे रूस हो या ब्रिटेन या फिर चीन अथवा पाकिस्तान, हर बार जंग में महिलाओं को ही सब से ज्यादा रौंदा गया. वियतनाम युद्ध के दौरान अमेरिकी सैनिकों का दिल बहलाने के लिए एक पूरी की पूरी सैक्स इंडस्ट्री खड़ी हो गई थी.

मोम की तरह फिसलती चमड़ी वाली वियतनामी युवतियों के सामने केवल एक ही विकल्प था कि या तो वे अपना खूबसूरत और गदराया जिस्म उन अमेरिकी सैनिकों के हवाले कर दें अन्यथा उन्हें जबरन सैक्स का शिकार बनाया जाएगा.

उस दौरान हजारों कम उम्र की वियतनामी लड़कियों को हार्मोंस के इंजेक्शन लगाए गए थे ताकि उन के उरोज और नितंब उभर सकें तथा उन लड़कियों का भरा हुआ गुदगुदाया जवान बदन अमेरिकी सैनिकों की काम पिपासा शांत कर सके.

उस युद्ध के दौरान सीली गंध वाले वियतनामी बारों में सुबह से ले कर रात तक उकताए हुए अमेरिकी सैनिक आते थे. उन के साथ कोई न कोई वियतनामी महिला होती थी, जिसे उन्होंने अपना सैक्स गुलाम बनाया हुआ था.

बाद में वियतनाम युद्ध खत्म हो गया था. अमेरिकी सेना भी वापस लौट गई थी. लेकिन इस के कुछ ही महीनों के भीतर वियतनाम में 50 हजार से ज्यादा बच्चे जन्म ले कर इस दुनिया में आए.

ये बच्चे उन अमेरिकी सैनिकों की पैदाइश थे. इन बच्चों को बुई-दोय यानी जीवन की गंदगी कहा गया. इन बच्चों की आंसू भरी मोटीमोटी आंखें देख कर उन की वियतनामी मां का कलेजा टूट जाता था. कलेजा इन बच्चों को गले लगाने के लिए नहीं टूटता था, बल्कि उन बलात्कारों को याद कर वे सिहर उठती थीं, जिन की वजह से वे मां बनीं.

सन 1919 से करीब ढाई साल तक चले आयरिश युद्ध की कहानी भी क्रूरता की कहानी दोहराती है. ब्यूरो औफ मिलिट्री हिस्ट्री ने भी माना था कि इस पूरे युद्ध के दौरान महिलाओं से बर्बरता हुई थी.

> अपने कट्टरपन के लिए कुख्यात इस्लामिक स्टेट आईएसआईएस के लड़ाके यजीदी महिलाओं के नाम लिख कर एक कटोरदान में डाल देते थे. फिर लौटरी निकाली जाती. जिस भी महिला का नाम जिस लड़ाके के हाथ लगता, उसे वह औरत तोहफे में दे दी जाती थी.

सैनिकों ने बलात्कार और हत्या से अलग एक नया तरीका निकाला था. वे दुश्मन देश की महिलाओं के सिर के सारे बाल काट देते थे. इन महिलाओं को सिर ढंकने की मनाही थी.

सिर मुंडाए चलती ये महिलाएं गुलामी का इश्तिहार होती थीं. राह चलते उन के शरीर को दबोचा जाता और अश्लील ठहाके लगाए जाते.

इतिहास में नाजियों की गिनती सब से क्रूर सोच में होती है. हालांकि जरमन महिलाएं भी सुरक्षित नहीं रहीं. दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान सोवियत की सेना ने पूर्वी प्रूशिया पर कब्जा कर लिया.

तालिबानियों द्वारा बंधक बनाई गई अफगान महिलाएं

घरों से खींचखींच कर जरमन महिलाएं और बच्चियां बाहर निकाली गईं और दसियों सैनिक एक साथ उन पर टूट पड़े थे. इन का एक ही मकसद था जर्मनी के गुरूर को तोड़ना.

किसी पुरुष के गुरूर को चकनाचूर करने का सब से ताकतवर तरीका है उस की महिला से बलात्कार करना. रेड आर्मी ने यही किया.

सोवियत सेना के एक कैप्टन अलेक्जेंडर सोलजेनिज्न ने एक किताब लिखी थी. गुलाग आर्किपेलगो नामक इस किताब में सोवियत सेना के युवा कैप्टन ने माना था कि जरमन महिलाओं से बलात्कार रूस के लिए जीत का ईनाम था.

युद्ध खत्म होने के बहुत बाद तक भी हजारों जरमन महिलाएं साइबेरिया में कैद रहीं. वहां कैंप में थके हुए रूसी सैनिक आते और नग्न जरमन महिलाओं की परेड कराते.

जो महिला किसी सैनिक को पसंद आ जाती, वह उसे उठा ले जाता और मन भर जाने के बाद वापस उसी कैंप में पटक जाता था.

अपने कट्टरपन के लिए कुख्यात इस्लामिक स्टेट आईएसआईएस के लड़ाके यजीदी महिलाओं के नाम लिख कर एक कटोरदान में डाल देते थे. फिर लौटरी निकाली जाती. जिस भी महिला का नाम जिस लड़ाके के हाथ लगता, उसे वह औरत तोहफे में दे दी जाती थी.

यह उस लड़ाके की इच्छा पर निर्भर करता था कि वह उस औरत से यौन सुख भोगे या उसे बैलगाड़ी में बैल की तरह जोते.

पूर्वी बोस्निया के घने जंगलों के बीचोबीच विलिना व्लास नाम का एक रिसौर्ट है. यहां चीड़ के पत्तों की सरसराहट के बीच प्रेमी जोड़े टहला करते थे. बोस्निया की ट्रेवल गाइड में इसे हेल्थ रिसौर्ट भी कहा जाता था.

नब्बे के दशक में हुए बाल्कन वार ने इस रिसौर्ट का चेहरा बदल दिया. इस रिसौर्ट को रेप कैंप में बदल दिया गया. यहां बोस्निया की औरतों से सर्बियन लड़ाकों ने महीनों तक गैंगरेप किया.

इस दौरान कुछ महिलाएं संक्रमण से मर गईं, तो कुछ ज्यादती से. कुछ महिलाओं ने आत्महत्या कर मौत को गले लगा लिया. संयुक्त राष्ट्र ने 2011 में यह राज खोला था, तब दुनिया को बर्बरता की इस कहानी का पता चला. तब तक बलात्कारी गायब हो चुके थे और मुर्दा औरतें जुल्म की गवाही देने के लिए हाजिर नहीं हो सकीं.

युद्ध कभी भी हुआ हो. चाहे हजारों साल पहले या आज. युद्ध 2 देशों के बीच हो या अंदरूनी. महिलाएं हमेशा से दरिंदगी की शिकार बनती रहीं. उन पर जुल्म ढहाए गए. अब अफगानिस्तान में भी यही हो रहा है.

हिंदुस्तान की बात करें, तो हमारे देश में भी महिलाओं को सैकड़ोंहजारों साल तक गुलामों की तरह जिंदगी जीनी पड़ी थी. पहले जब राजामहाराजाओं और बादशाहों के राज हुआ करते थे, तब वे अपना साम्राज्य और बढ़ाने के लिए युद्ध करते थे.

इन युद्धों में शहरगांव और जमीनों पर कब्जा कर लूटपाट तो की ही जाती थी. साथ ही पराजित राजा या बादशाह के हरम पर कब्जा कर लिया जाता था.

उस जमाने में हरेक राजामहाराजा और बादशाहों के किले महल, गढ़ और दूसरे ठिकानों में हरम हुआ करते थे. इस हरम में रानीमहारानी और बेगमों से इतर सैकड़ों महिलाएं होती थीं.

रानीमहारानी और बेगमों के लिए महल, गढ़ और किले में ऐशोआराम के हर साधन होते थे, लेकिन हरम में रहने वाली महिलाओं को वे सुखसुविधाएं नहीं मिलती थीं.

हरम की इन महिलाओं को वे शासक कभीकभार भोगते थे. कभीकभार शासकों के बड़े ओहदेदार भी हरम की इन महिलाओं को अपनी वासना का शिकार बना लेते थे.

विदेशी आततायियों को भी हिंदुस्तानी महिलाएं खूब पसंद आती थीं. विदेशी आक्रमणकारियों ने जब भी भारत में किसी सूबे पर हमला किया तो कीमती सामान के साथ हरम को भी लूटा था.

भारत में प्राचीन समय में राजामहाराजाओं के बीच महिलाओं को ले कर युद्ध होते रहे हैं. दूसरे राजा की रानियों की खूबसूरती के चर्चे सुन कर कई राजाओं ने युद्ध किए.

अब अफगानिस्तान की महिलाएं तालिबानियों से अपनी जिंदगी और अस्मत बचाने की चिंता में हैं. ●

ZEE
LABORATORIES

ensure complete skin care with...

OVIX

क्रीम लगायें,
त्वचा रोगों से तुरन्त राहत पायें

ZEE LABORATORIES LTD.
ensure complete skin care with...
OVIX
CREAM
15g.

दाद, खाज, खुजली व एगज़िमा, कटे, फोड़ो, फुंसी, ज़ख्म,
जांघो की खुजली से तुरन्त राहत

ECZEMA

THIGH ITCH

SHAVING CUTS

MIX INFECTIONS

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.zeelabpharmacy.com

(Registered) RNI DELHI 64906/15/DL(C)-14/1392/19-21, P.O. SRT Nagar, ND-55. Posting Date 13-19, Published on 15/08/2021. Pgs. 148

Piramal

TETMOSOL®

नया

टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर रोज़ लगाना,
मतलब त्वचा के संक्रमण^ को दूर भगाना.

त्वचा के संक्रमण

घमोरियां

खुजली

से राहत दे

TETMOSOL®
DUSTING POWDER
Skin Infection Expert
ANTI-FUNGAL
Fights Skin Infections
Controls Itching
Fights Prickly Heat
TRIPLE SKIN BENEFITS
100 g
Piramal

नज़दीकी मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।

☎ 1800 22 9898 ✉ consumercare@piramal.com

^टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर का उपयोग फंगल इन्फेक्शन के लिए किया जाता है। यदि संक्रमण तथा खुजली जारी है तो डॉक्टर की सलाह ले।
इन्फेक्शन की संभावना बनी रहने तक डस्टिंग पाउडर लगाएं। परिणाम व्यक्तियों के बीच भिन्न हो सकते हैं। आवेदन और अन्य निर्देशों के लिए पैक देखें।

CMAC - TP/20210301-03